❀ ॐ शिव ❀

सर्गे प्रारम्भे शिव शक्त्यै संवादः

सृष्टेः स्वस्ति सुख शान्ति स्थितिः

सम्पति वृद्धि रायूः वृध्यर्थम् ।

अन्विषक

प्रतिलेखकोपदेशक

स्वामी लालपुरी फतेह-सागर,

जोधपुर ।

पुस्तक मिलने का पता—

राव राजाजी श्री गुलाबसिंहजी साहिब,

जोधपुर (राजपुताना)

श्री श्री १०८ श्री उम्मेदसिंहजी
साहिब बहादुर मरुधराधीश

❀ श्री ❀

17 AUG 1966

प्राक् कथन

श्री आचार्य विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार, जयपुर

———<>———

यह स्पष्ट होचुका है कि किसी समय में
ह आर्यवर्त भरतखण्ड समस्त विद्याओं में
र्वोपरी था और आज दिन भी युरोप देश
जो सभ्यता में प्रथम है, बड़े २ विद्वानों
इस देश की विद्याओं से बोहतसा लाभ
उठाया है और मान प्रशंसा करते हैं। उनहीं
विद्याओं में की एक राज विद्या का जो राज्य करने
की विद्या है, सात आठ हजार वर्षों से लोप
होना श्री मद्भगवद्गीता के चोथे अध्याय मे
साबित है और नवमें अध्याय में भी थोड़ा वर्णन
है वही ये विद्या अत्यन्त परिश्रम से अब सम्पूर्ण
मिली है। इस विद्या प्रचार के समय में क्षात्रियों
का राज्य समस्त भूमण्डल में था। इसको प्रचार
करने के लिये बोहत से बड़े २ उच्च श्रेणी के

सरदारों ने सहायता सम्मति दी है परन्तु इस सर्वोपरि जगत हितकारी कार्य में सब से अधिक सहायता तो रावराजाजी श्री गुलाबसिंहजी साहिब नें दी है, जो एक उदारचित्त वीर क्षत्री बड़े रावराजाजी श्री तखतसिंहजी साहिब के पांचवें पुत्र जिनकी योग्यता एक अधिक उच्च क्षत्रियों की योग्यता से समानता रखने वाली है। आप सरल स्वभाव सब दुर्व्यसनों से निवृत सब गुणसम्पन्न सच्चे न्याय धर्म को समझने वाले उच्च भाव के सच्चे राज भक्त स्वामी के शुभचिन्तक निरन्तर इस सत्य वचन को अपने ध्यान में प्रीति प्रशंसा के साथ रखते हैं कि–

"बिना अपने हाथसे खोले सर्व करम्म ॥
सो सुकृत इक पालके एको साम धरम्म ॥"

इस प्रकार सची भक्ति से साम धर्म को पालने वाले बड़े महाराजाजी श्री श्री १०८ श्री तखत सिंहजी साहिब बहादुर की अधिक योग्य सन्तान में से हैं इस गद्यिमीय परम उपयोगी अत्यन्त

लाभ दायक जगतहितकारी राजा प्रजावों में सुख शान्ति दृढ रखनेवाली विद्या का प्रचार और अधिक द्रव्य व्यय का भार अपने ऊपर लिया है ये स्वयं साम धर्म पालना साबित कर रहा है।

इस परम पवित्र विद्या को अपने स्वजाति क्षात्र हितकारी समझ और उपरोक्त सर्व वार्ताओं को अपने लक्ष में रख श्री महाराजाजी साहिब बहादुर की पवित्र सेवा में प्रकाश करने के लिये एवम परिश्रम और व्यय कीया है।

इस विद्या का प्रभाव आज तक भी न्यूनांश तक क्षत्रियों के रक्त में रम रहा है यही कारण है कि जगदारम्भ से अभी तक क्षत्रियों का राज्य स्थिर है ये विद्या राजा प्रजाओं में स्वास्ति सुख शान्ति स्थिति और सुख पूर्वक आयुस वर्धक प्रबन्धों की कुशलता सिखलाती है। इस विद्या का पूर्ण ज्ञान अद्वितीय है इसीलिये चक्रवर्ती सम्राट सूर्य इक्ष्वाकु मनु आदिकों ने इसको सर्वोपरि विद्या कही है, ये वही क्षात्र विद्या है जिसके

पूर्ण पवित्र ज्ञान से क्षत्री समस्त भूमण्डल भर में राज्य किया करते थे, अब इस समय में लगभग पूर्ण अभाव सा हो जाने से पतन लक्ष में आ रहा है परन्तु परम दयालु जगदीश्वर को इस विद्या का ज्ञान प्रकाश फिर स्वीकार हुआ है वरन क्षत्री तो इस का नाम तक भी भूल गये है उसी की मेहर है जिसका परिवर्तन उत्थान पतन होता रहता है कोटान कोट धन्यवाद उस जगत पिता सर्व शक्तिमान को है जिसने मेहर की दृष्टी इस सत्यागम ज्ञान प्रकाश द्वारा स्वीकार की है इस परम तत्व को इन रावराजाजी साहिब ने समझकर अपने स्वामी महाराजाजी साहिब बहादुर की सेवा में अपना आत्मिक भाव समर्पण किया है।

स्वामी लालपुरी ठि० फतेह सागर,

जोधपुर

—— (——

॥ श्री ॥

समर्पण पत्र ।

मेजर हिज हाइनेस राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराजाजी श्री श्री १०८ श्री उम्मेदसिंहजी साहिब बहादुर—

के० सी० वी० ओ,० के० सी० एस० आइ,० जी० सी० आइ० ई०.

मारवाड (जोधपुर)

१—हे भगवन आपके तप तेज प्रताप सदाचार और सुभ गुणों के कारण ही सारे देश में स्वस्ति सुख-शान्ति स्थिति निर्विघ्नता के साथ छा रही है। कोइ भी किसी पर किसी प्रकार से अत्याचार नही कर सकता, सारी आपते शान्त हो रही हैं। उत्तमोत्तम कार्य्य उन्नति के सम्बन्ध में हो रहे हैं. प्रजा गणों

आनन्द मंगलाचार की बधायें बट रही है। विद्वान गुणी जनों का यथावत सत्कार होता है, दुष्ट उपद्रवों के शान्ति की शिक्षायें हो रही है न्याय मर्यादों के प्रबन्धों में सुधार हो रहा है प्रजाओं में विविध विद्यावों का प्रचार हो रहा है गरीब दीन प्रजा विधवा स्त्रियां अपणे पोषण में असमर्थों का तथा अन्ध पङ्गु अनाथ बालकों का पालन पोषण हो रहा है। आप जब से राज सिंहासन पर सुशोभित हुवे है राम राज्य वा धर्म राज्य चल रहा है आप स्वयं प्रजा को शिक्षा कर रहे हैं जैसे श्रीमद्भगवद्गीता में कहा है "यद्यदाचर ति श्रेष्ठ स्तत्देवेतरोजन" याने जो बडे श्रेष्ठ पुरु ष वा राजा करता है उसी माफिक या उसी की नकल दूसरे करते है याने आप दुर्व्यशनों से निर्वत है तो प्रजा भी दुर्व्यशनोंको त्याग रही है आपने मर्यादा पूर्वक एक ही विवाह श्रेष्ठ समझा है सो प्रजावों में भी सदाचार फैल रहा है।

जगदारम्भ से आपके घराणों में राज्य चला ही आरहा है इतना पायदार और प्राचीन राज्यकुल (खान्दान) सृष्टि में अन्य कहीं नहीं है। आप प्रजा वात्सल्य सदाचार परम्परा की मर्यादा पूर्वक पुत्रवत प्रजा पालनादि दिव्य दैविक गुण सम्पन्न है इसी वास्ते हम सब आपके वास्ते तन मन धन और प्राणों से सर्वथा तत्पर कटिबद्ध हैं।

२—आपके विद्यानुराग से आज उस विद्या के दर्शण का सु अवसर प्राप्त है जिसके प्रभाव से आप ही के घराणों में पूर्वज क्षत्रिय राजा समस्त पृथिवी मण्डल में राज्य करते थे। ये अद्वितीय विद्या आप ही के घराणों की है, इस से समानता रखने वाली अन्य कोइ विद्या नहीं है इसलिये जगदारम्भ में आप के ही वंश में राजा सूर्यमनु इक्ष्वाकु आदिकों ने इसको सर्वो-परी विद्या कही है इसी के प्रभाव से अनुभवी शील राजा सच्चा न्याय करने में समर्थ होते थे। प्रत्येक वार्ता को यथावत जानना बड़ा भारी

बल है। जैसे अंग्रेजों का भी (Proverb) है कि (Knowledge is the Greatest Power) इसी के अनु सार अंग्रेज सैकड़ों (Detectives) रखते हैं और वर्तान्त जानने के लिये ही आपके वंश में पहले के राजा माहाराजा रात को गस्त में जाया करते थे, और स्वय भी पोशीदा तौर से खुपीया प्रजा से हाल सुनते थे, क्यूंकि प्रकृति नियमानुसार सर्वेष्ट बुद्धि प्रजागणों में बटी हुई है, इसलिये प्रजागणों में और हम लोगों में जो जो सभ्य व्यक्ति बुद्ध जन हैं, उनसे मिलते थे और मिलने मे ही अनुभव होता है। एसे राजाओं को कोइ धोके में नहीं डाल सकते थे जिससे उनके राज्य म प्रजा उपद्रवी नहीं होती और कोइ विघ्न नहीं पड सकता। इसी विद्या के ज्ञान से आप ही के वंश में केइ चक्रवर्ति राजा सम्राट महाराजा हुवे उन ही का पवित्र रक्त आप में रम रहा है। आप स्वय अद्वितिय बुद्धिमान हैं आपकी बुद्धि मामुली साधारण राजाओं की सी नहीं है सिर्फ

इस विद्या का अनुभव और बुधजनों का विशेष संसर्ग शेष है सो भी आपके पुण्य प्रताप से ये विद्यातो प्रगट हो आई है और बुद्धजनों के मिलने से राजा सर्व जाण होता है और निष्कण्टक राज्य करता है जैसे माहाराजा विक्रम भोज कर्ण आदि थे, और आज दिन भी बड़े से बडा अंग्रेज छोटे से छोटा आदमी से मिलने में कोइ संका नहीं खाता है इसी से उनका बल बढता जा रहा है। परन्तु फिर भी प्रकृति माया वश उत्थान पतन होता रहता है, ये ही विद्या यूरोप वालों को लगभग १०२ वर्ष पेशतर इसी देश से अधांश मिली थी उसी के नमुने से ये प्रशसनीय राज्य कर रहे हैं। परन्तु आपके पूर्व अपार पुण्य प्रताप से अब वही विद्या पूर्ण रूप से मिली है।

३—इस विद्या का ७-८ सांत आठ हजार वर्षों से लोप होना श्रीमद्भगवद्गीता के चौथे अध्याय

से सप्ट । साबित है इसकी प्रशसा में तो क्या करू पर महाराज श्री अजीतसिंहजी साहिब और प० मदन मोहन मालवी जी आदि बड़े बड़े सरदार बहुत ही ज्यादे प्रशसा कर रहे हैं और इसी के ज्ञान से स्वामी लालपुरी बहुत ही उत्तमोत्तम काय कर रहा है, जिससे इसकी प्रशसा बहुत बड़े बड़ों में हो रही है इस विद्या की खोज इसने १४ वर्ष घोर परिश्रम एव कष्ट उठा कर तपस्वियों के सत्सग द्वारा प्राप्त की है इसकी सफलता का शुभ योग भी आपके ही प्रशसनीय राज्य में हुवा है।

४-य राज्य विद्या राजा महाराओं में स्वस्ति सुख शान्ति स्थिति कुशलता पूर्वक सिख लाती है इसके ज्ञान से राज्य सुस्थिर अचल और ध्रुव होता है और राजा बहुत वर्षों तक सुख चेन से

राज्य करता है और बहुत सन्तति के साथ वृधि को प्राप्त होता हुवा दीर्घायुसवाला होता है और आपके लिये यही मेरी हार्दिक इच्छा है, और मेरी इश्वर से भी यही प्रार्थना है कि आप इस पुस्तक की शिक्षा अनुसार स्वस्ति सुख शान्ति स्थिति पूर्वक सौ वर्ष राज्य करै क्योंकि मेरा मुख्य सिधान्त ये है कि—

विधना अपने हाथ से तोले सर्व कर्म्म ।
सो सुकृत इक पालने एको साम धर्म्म ॥

याने सामधर्म से बढ के इस संसार में कुछ नहीं तन मन धन जो मालिक के काम में आवे तो फेर इससे उत्तम और क्या हो सकता है और मेरा आत्मिक भाव भी मेरे सच्चे दृढ सिधान्त साम धर्म्म में रहै इसी के अनुसार इस राज विद्या की पुस्तक को राजा प्रजाओं के लिये अत्यन्त हितकारी समझ समय समय पर इस स्वामी को मदत देता हुवा यथा शक्ति द्रव्य व्यय का भार

उठा कर छपवाई है और इस गीता वाक्य अनु सार "पत्र पुष्प फल तोय०" याने गीता में श्री भगवान कहते हैं कि जो भक्ति से पत्र पुष्प फल जल मुझ को चढाते हैं उसको मैं प्रेम से ग्रहण करता हूँ इसी के अनुसार ये पुस्तक सादर समर्पण करता हू सो इस तुच्छ भेट को स्वीकार करावें ॥

आपका तुच्छ सेवक

रावराजा गुलाबसिंह

जोधपुर

॥ भूमिका ॥

ये राजविद्या की पुस्तक सृष्टी मेस्वास्ति सुख शान्ति स्थिति परंपरा सिखलाती है इस का वस्तविक उपदेशदेनेवाला श्रीमान् स्वामी लालपुरी सरल स्वभाव प्रशंसनीय परिश्रमी क्षात्रहितैशी पुरषहै । इस स्वामीने घोर परिश्रम एवं कष्ट उठाकर तपास्वियों के सत्संग द्वारा लुप्त हुई राजविद्या का दर्शन का सुअवसर प्राप्त कराया है यह कार्य इसके १४ वर्ष के शक्त परिश्रम का फलहै । आज कल पाश्चात्य सभ्यताभिमानी प्राय यह समजते है कि जोकुछ उन्नाति इस समय पश्चात्य लोगोंने की है वह हाति श्री है और रहन सहन खान पान रीती रिवाज सबों मे उनकाही अनुकरण करते है अपने घर से सर्वथा अपरिचित हैं वास्तव में ऋषि मुनियों के निर्मित कीये हुवे अमूल्य शास्त्र आजदिनभी मीलते है जीनकी युरोप के विद्वान बडी बडी प्रशंसा (तारीफ) करते है और जिन

के प्रभाव से क्षत्रिय समस्त पृथीवी मण्डल में स्वास्ति सुख शान्ति स्थिति पूर्वक राज्य करते थे इस विद्याका ७–८ हजार वर्षों से लोप रहना श्री मद्भगवद्गीता के चौथे अध्याय से साबित है, इस विद्याकी प्राप्ति इस प्रकार हुइ कि ये स्वामी किसी समय गीता पाठ कर रहाथा तो इस को मालूम हुवा कि राजविद्याभी कोइ विद्या है इसपर खोजन लगा तो थोडीसी तो वगेर, मिश्र के जेसलमर के पुस्तकालय से माश्री, मुलीदानसिंहजी की मारफत मिली फेर खाजने, पर हरद्वार के पहाडों मे पाशुपति मतके कपालीनाथजी से सपूर्ण साचित्र मिलगइ परतु ये प्राकृत भाषा मे लिखी हुइथी ओर जेसलमेर की मागधी भाषा मेथी सो ठीकतौर से न समज मे आने से इस स्वामीने इस विद्याको राजा प्रजावों के अत्यन्त हितकारी समझ श्री कपाली नाथजी से समज लीवी इसलीये ये स्वामि इस के सारको जानताहे कि समस्त क्षात्रियों के

पास जमीन की मालकी और इस विद्या का प्रचार महाराजा, और साम्राज्य की पायदारी और राजा प्रजावों मे सुख शान्ति बनी रहती है और क्षत्रियों की जमीन पर मालकी और इस विद्याका प्रचार न होनेसे क्या क्या उपद्रु व दुख अत्याचारोंसे राज्यों मे परिवर्तन होता रहता है और इसी तरेह बल बुद्धियों मे भी परिवर्तन होता रहता है स्वार्थ सुख की अधिकता से जगत मे दुख अत्याचारों की अधिकता होजाती है और यह प्रकृति नियम है की जगत करता ने ज्ञान और अज्ञान दोनु रचेहै जब उपरी राज्य और उनके समीप उर्ति कर्मचारीयों याने उच्च क्षेणि में ज्ञान होता है तोमध्यम और कनिष्ट श्रेणीयों मे अज्ञान रहता हैं इसि हेतु जहां जहां जन समूह है वहां की रक्षा न्याय के लिये वंही क्षात्रिय सृजा है ये राजविद्या वाक्य स्वयम् सिध है इस को लक्षमे रख कर जहां जन समुह है वहांके क्षत्रियों ो-

मालकी भाव के साथ ग्रामाधिपति मुकरिर करना उपरी राज्य की स्थिति है क्युंकी उन का मालकी भाव होने से वह प्रजा को अपनी समज कर उनके दुख मिटाने का सदा उपाय करता रहता है वरना यह प्रजा जन ग्राम छोड देवे इससे मालिक को नुकसान पोंचता है ओर उसके स्वारथ मे हानी पडती है परंत मालकी भावना न होने से ये खयाल हरगीज नही होता अब दुसरो तरफ ये बात हुइकी उस को मालकी देने से वह सदा के लिये उसकी पीढीयों तक उपरी राज्य का सच्चा सामधार्मि तन मन ओर धन से सर्वथा तत्पर कटिबध रहता है ओर यही उपरी राज्य की स्थिति है ओर उपरी राज्य जोप्रजा से सीधा फायदा चाहता है उस से अधिक वह क्षात्रिय अपने मालकी भावके साथ दे सकते है मसलन एक क्षात्रिय २५०००) की आय सालाना का ग्रामाधिपाति है ओर यह अछीतरह पूरे पूरें सबुतों के साथ पकी जाच

से देखा हुवा है की सीधा उपरी राज्य मे होने से वही २५०००) की जगह आधेसे कम होजाती हे पर खेर आधासमजो तो जमामे १२५००) होते है ।

सीधी उपरी राज्यमे

जमा

[१] १२५००) और नुकसान १२५००) की कमीका।

[२] उपरी राज्य कीनोकरी मेयुद्द जागीर दार हाजिर रहकर हुकम माफिक नोकरी देता है वह वद होने का नुकसान।

[३] वक्त जरूरत लडाइके २५०००) का जागीरदार थोड़ें आदमी की मदत २०० आदेमीयों की दे सकता है, सो नुकसान ओर एसे वकत जरुरत

पच्चीस हजार का,जागीर दार उपरीराज्य का सालाना देना है इण मुजिब

[१] २०००) रेखरा।

[२] ३६००) चाकरी रा मा १२) रोसरेस ।

[३] ७००) मुतफरीक लगान वगेरह बाब थोडा कानून कयल।

[४] ४०००) ठाकाणा और ठीकाणे के मुलाजमान के चीज वस्त घोडा ऊठों पर मोसार पेसार कसटम इजा फे ठीकाणा आबाद रहने से ही मिलता है।

[५] ५०००) खालसे मे मुला जमान का एक साल मे आग का खर्चा

की एवज मे (१२५००) उपरी-
राज्ज को मिलता है सो
बाकी (१०१५०) दस हजार
एक सो पचास का उपरी
राज्य को सालाना नुकसान
खालसे मे रखने से होता है.
और जागीरदार की खुद की
चाकरी और वकत जरुरत
की मदतका अलाहिदा नुक-
सान है ॥

इस स्वामी का जो कार्य परीश्रम करनेका सो ये करचूके और इसको प्रकासन आदिमे द्रव्य का व्यय करना हमारा कामथा इस लिये क्षात्रिय जातिकी सेवाको लक्षमे रखकर इसके प्रकासन का बाकी व्यय भार मैंने अपने उपर उठाया इसके पठन पाठन से जो आप लोगोको लाभ पोचेंगा उसके वास्तविक धन्यवाद पात्र ये स्वामीही है और मैभी अपने द्रव्य का सदुपयोग समझुगा आशा है क्षत्रिय महानुभाव जाती

बान्धव इसको पढकर शिक्षा एवं कार्य रूपमें इसे परिणत कर कृत कृत्य करेंगे और पाठक गणों से प्रार्थना है कि इसमे अशुद्धता जोकुछ हैउस पर क्षमा कर ध्यान नदे और सारको ग्रहणकरे कि्योंकि ये एक अत्यतही प्राचिन समय की विद्या है और पहली वार की छपाइ है ॥

भाग्र जातिका तुछ सेवक

राजराजा गुलाबसिंह

जोधपुर

सूची-पत्र

विषय.

संख्या- पृष्ठ-

चित्र सूची

संख्या— पृष्ठ—

संख्या– पृष्ठ–

राजविद्या ।

हे महामाया पते सर्व शक्ति पते पशुपते भवान सृष्टिसस्तृष्ट तस्यांमनुष्य स्वाधीनः विचाराधिक्य शक्ति सहितः इय स्वाधीनताविचाराधिक्य शक्तिश्च महद्बलम् ॥

भावार्थ

हे महामाया पति सर्व शक्ति पति पशुपति आपने सृष्टि को रचा है उसमें मनुष्य स्वाधीन अधिक्य विचार शक्ति सहित है और ये स्वाधीनता अधिक विचार शक्ति बडा भारी बल है ॥

यदीयमधिक विचारशक्तिः स्वार्थ सुख भोगैश्वर्य मोहादिनामधिक्तास्तुहि प्रवर्तते तर्हि जगत्तु दुःसह दुःखवान भूत्वा विनङ्क्ष्यति ॥

भावार्थ

यदि ये अधिक विचार शक्ति स्वार्थ सुख भोग ऐश्वर्य मोह आदि की अधिकारों में पड़ जाय तो जगत् में महा कठिन दुःख होकर नाश को प्राप्त होजाता है ॥

हे महेशतवार्धंगिनी अहम् ममोपरी कृपा कृत्वा जगद्धितार्थं उचित् प्रबन्ध प्रकाशय ॥

भावार्थ

हे महेश मैं आपकी अर्ध अङ्गनी हूं मेरे पर कृपा करके जगतहित के लिये उचित प्रबन्ध प्रकाश कीजिये ॥

हे सर्व शक्तिपति-स्वाधीन विचाराधिनय शक्त वैपरीत्यशुद्ध्यै प्रति समय सर्गे प्रारमे राजविद्यानाम योग प्रकाशयाम्यहम् ॥

भावार्थ

हे सर्व शक्तिमति–स्वाधीन अधिक्य विचार शक्ति के वैपरीत शुद्धि के लिये प्रति समये सृष्टि के आरंभ मे राजविद्या नाम योग को मे प्रकाश करता हूं ॥

सोपि समये समये लुप्त· प्रकाशि· तश्च वोभूयते ॥

भावार्थ

वह भी समये समये लुप्त प्रकाशित होता रहता है ॥

अयमावयोः संवादः सृष्टे सुखशा· न्त्यैास्थित्यै प्रबन्ध स्थिरतार्थेच प्रका· श्यते ॥

भावार्थ

ये हम दोनु का संवाद सृष्टि का सुख शान्ति स्थिति और प्रबन्धो की स्थिरता के लिये प्रकाश

कीया जाता है ॥

एतद्योग जगत्सुसमूल कदापि न विनश्यति । मनुष्याणा बुद्धिपुन्यूनाधिकांशतया प्रवर्तते ॥

भावार्थ

ये योग जगत मे समूल कभी नाश नहीं होता है मनुष्यों की बुद्धियों में कम या ज्यादा अंश से प्रवत रहता है ॥

यदा यदा हि एतद्योगस्याधिकता जगत्सुसत्य युगमेव प्रवर्तते । सुखशान्ति स्थितिश्च सवर्धन्ते ॥

भावार्थ

जब जब जगत म इस योग का अधिकता होती है तो सत्य युगकी प्रवर्ति रहती है और सुख शान्ति स्थिति की वृधि होती है ॥

न्यूने नष्टेच्च मनुष्याणामासुरी मति
भूत्वा दुःखात्याचारक्षयाश्च वोभूयन्ते ।
तंदुःसमयं कलयुगमिति कथयन्ते ॥

भाषार्थ

इस योग के कम और नष्ट होने से मनुष्यों की आसुरी मति होकर दुःख अत्याचार और क्षय होता रहता है और एसे खराब खोटे समय को कलयुग कहते है ॥

एतद्योगस्याधिकांश प्रवर्त्तनेन ज-
गत्सु सुख शान्तिः स्थितिश्च प्रवर्त्तते
तं सुसमयं सत्ययुगमिति प्रभाषयन्ते ॥

भाषार्थ

इस योग का अधिक अंश प्रवर्त होने से जगत मे सुख शान्ति स्थिति की प्रवर्ति होती है और उस अच्छे मध्य समय को सत्ययुग कहते है ॥

जगति सन्मार्गे प्रवर्त्यर्थम् बलस-
रूप पुरुषः शुद्धिसरूप स्त्रीय सृज्याम्य
हम् ताभ्या रक्षान्यायः क्षात्रकुल सूर्य
चन्द्र सभवः तेषा विचार शक्ति शुद्धो
च्चश्वरभावेन सृष्ट' सुखशान्तिःस्थित्यर्थ
प्रबन्धषु प्रवर्तते ॥

भाषार्थ

जगत को शुद्ध मार्ग मे प्रवर्त करने के लिये
बल सरूप पुरुष और शुद्धि सरूप स्त्रीय को मैं
रचता हू इन दोनों से रक्षा और न्याय है और
क्षत्रियों का सूर्य और च द्र वश होता है उनका
विचार शक्ति शुद्ध उच्च इश्वर भाव से सृष्टि का
सुख शान्ति स्थिति के लिये प्रब धों मे प्रवर्त
रहता है ।'

महापवित्र राजविद्योपदेशः क्षात्र
जाते स्त्रीय पुरुषेभ्यः श्रुतेन शुद्धोच्च

क्षात्रकुलेष्वापि प्रजायन्ते तथैवापरजातेः स्त्रीय पुरुषेभ्यः तेषां स्वेषां जातीषु यथेष्ट प्रजायन्ते ॥

भावार्थ

महा पवित्र राजविद्या का उपदेश है क्षात्र जाति स्त्रीय पुरुषों को सुनने से शुद्ध उच्च क्षात्र कुलों मे जन्म पाते है इसी तरह अन्य जातिके स्त्रीय पुरुषों को उनकी खुदकी जातियों मे चा-हना माफिक जन्म पाते है ॥

क्षात्रकुल स्त्रीय पुरुषेभ्यः शास्त्रा-स्त्राणामभ्यासः। यथा संभव प्रतिदिने ऽवश्यमेव। यत्र राजविद्यापदेशः तत्र सुख शान्तिः स्थितिश्च प्रवन्धानांस्थै-यम्। धर्मः दीर्घायूः भूति विजयः श्री-श्वशासनम् ॥

भापार्थ

क्षात्र जाति के स्त्रीय पुरुषों को अस्त्र शस्त्रों का अभ्यास कराना चाहिये। जहा तक होशके हमेसा अवश्य होना चाहिये। जहां राजविद्या का उपदेश है वहा सुख शान्तिः स्थिति और प्रबन्धों की स्थिरता है धर्म है दीर्घायू है धन धान्य विजय और राज्य लक्ष्मी है॥ ८॥

श्रीभगवानुवाच-सर्गे प्रारम्भे शिव शक्त्योः संवादे राजविद्यानाम योगं प्रकाशयामास । सृष्टिषु स्वास्ति सुख शान्तिः स्थितिश्च तषां मर्यादा प्रबन्धा-नां स्थित्यर्थम् । तथैव प्रजानां शरीर प्राण स्वातंत्र्यं द्रव्यं च रक्षार्थम् जड़ चैतन्य स्थावर जंगम धनानां च ॥

भावार्थ

श्री भगवान बोले कि सृष्टिके आरम्भ में शिवशक्तिके संवाद में राजविद्यानाम योग प्रकाश हुवा । सृष्टिकी आरोग्यता सुख शान्ति स्थिति और इनकी मर्यादा प्रबन्धों की स्थिरताके लिये और इसी तरह प्रजाके शरीर प्राण स्वातंत्र्य और द्रव्यकी और जड़ चेतन स्थावर जंगम धनों की रक्षा के लिये ॥

एतद्योगस्य मर्यादा प्रबन्धा समयानुसार वा प्रजानां प्रकृत्यानुकूल परिवर्तनम्

परन्तु न कदापि विचाल्यते तत्वत ॥

भाषार्थ

इस योग की प दि। प्रबन्ध में समयानुसार वा प्रजाकी प्रवर्ति के अनुकूल फेरसार (नदलाबदली) होताहै परन्तु तत्व से (सारसे) न कभी चलाय मान हो ॥

एतद्योगः मायावशलुप्त प्रकाशितश्च सोभूयते तथापि जगत्सु समूल न कदापि विनश्यति । न्यूनाधिकाश तथा मनुष्याणा बुद्धिषु प्रवर्त्तते। महत्कालेन स्वार्थ सुख भोगेश्वर्य मोहाधिक्ताऽऽ पतति तदा नष्ट वा लुप्त भूत्वा वेदेषु श्रीमद्भगवद्गीतास्नुपनिषत्सु बीजरूपेण शेषास्थित तर्बाजरूपास्थत देवातिरिक्ता न कोपिज्ञातु शक्नोति ॥ उत्थान पतन प्रकृति स्वभाव तदनुसार क्षत्रियाणामुदये समये सापूर्णतया विस्तार

सद्रूपेणाविर्भवंति च्च प्रकाशयति ॥

भाषार्थ

य योग मायावश लुप्त प्रकाश होता रहता है तोभी जगतमें समूल नाश कभी नहीं होताहै कम जादा अंशसे मनुष्यों की बुद्धि मे-प्रवर्त रहता है । महत्काल से (हजारोंवर्षोंसे) स्वार्थ सुख भोगैश्वर्य की अधिकता आपड़ती है तब नष्ट व लुप्त होकर वेदोंमें श्रीमद्भग द्गीता में उपनिषदोंमें बीजरूपसे बाकी रहजाता है उस बीजरूप रहेहुवे को देवतो के शिवाय कोइ भी नहीं जान सकताहै उत्थान पतन प्रकृतिका स्वभावहै तदनुसार क्षत्रि-यो के उदय समय में वा विद्या पूर्ण विस्तार सद्रू-पता आतीहै और प्रकाश होती है ॥

स्वेष्ट प्रेमणा सायोगयुक्तमाया सेन योगमाया प्रसन्ना त्रित्रिगुणैः संवर्ति वा साम्यास्था त्रिगुणात्मिक माया क्षात्र-जातिषु शुद्धोचेश्वरभावं वितनोतिसाति शुद्धोचेश्वर भावोहि स्थितिः ॥ त्रिगुणा

प्रकाशयन्ते शुद्धोचेश्वरभाव। शुद्धभा-
वेन सुखम् उच्चभावेन शान्ति। ईश्वर
भावेन स्थिति सदा। योगमाया पूजन
म्॥ स्वार्थाधिकता तया बुद्धिषु हानि
रूपजायते तयाचन्याये॥ विनान्याये
शान्ति स्थितिः विनाशयन। प्रतिका
र स्वार्थनिस्पृह भूत्वा दानेसमुत्साह॥
सुखभोगस्याधिकता बलेषुहानि तयाच
रक्षाष्वपि। प्रतिकार व्यायाम परिश्र-
मेऽभ्यासः॥ मोहाधिकता सुखेषु हानि
तयास्वस्तिष्वपि। प्रतिकारस्वेष्ट प्रेमणा
ईश्वराधनमुपाशनम्॥ ऐश्वर्याधिकता
तयावमण्ड. तयास्वयमुच्चज्ञात्वा सुख
लिप्सया सद्विद्योपदेशेषुहानि तयादु-
र्घटनम् पतन। प्रतिकार राजविद्योपदे
शमनन्य. तेन न नृपविचाल्यते तत्वत'

भावार्थ

अपने इष्टमें प्रेम रखने से वा योगयुक्तमाया वाही योगमाया प्रसन्न हुइ तीनु गुणोंकरके संवर्ति वा साम्यावस्था त्रिगुणात्मिक माया क्षात्रजातियों में शुद्ध उच्च और मालकीभाव ईश्वरभाव देतीहै । शुद्धोच्चेश्वर भावही स्थितिहै ॥ तीनशूलां प्रकाश करताहै शुद्ध उच्च ईश्वरभाव शुद्धभावसे सुख उच्चभावसे शान्ति और ईश्वरभाव से स्थिति सदा येही योगमाया की पूजाहै ॥ स्वार्थकी अधिकता से बुद्धिमें हानि होतीहै और फेर बुद्धिमें हानि होनेसे न्याय में । विनान्याय शान्ति और स्थिति दोनु नाश होतीहै । इसका उपाव स्वार्थ से निस्पृह (विनाइच्छावाला) होकर दानमें उत्साह रखें । सुख भोग की अधिकता से बलोंमें हानि होतीहै और फेर उसे रक्षावों मेंभी । उपाव इसका कसरत और परिश्रम याने मेहनत में अभ्यास । मोहकी अधिकतासे सुखों में हानि और फेर स्वस्ति (तन्दुरस्तियों में) उपाव इसका अपणें इष्टमें प्रेम

से ईश्वर आराधना उपाशना। ऐश्वर्य (धन और मालकी) की अधिकता से घमण्ड जिस से अपने आप को उच्च समजता हुवा अधिक सुख में पडजाता है और सद्विद्या के उपदेश में हानि होती है जिससे दुर्घटन और पतन होजाताहै उपाय इसका राजविद्या का उपदेश का प्रबन्ध है जिससे राजा असली बात से चलायमान नहीं होता है ॥

रक्षा का-प्रजाना शरीर प्राण स्वातन्त्र्यं द्रव्यच रक्षणम् जन्चेतन स्थावर जगम धनाना च ॥

भावार्थ

रक्षा किसको कहते हैं-प्रजा के शरीर प्राण स्वातन्त्र और द्रव्यकी रक्षा करना औरजड चेतन स्थावर जगम धनों कीभी ॥

कोन्याय —वा न्यायेन का प्रयोजनम् प्रजासु स्वस्ति सुखशान्ति स्थिति श्च तेषा प्रबन्धा ॥

भाषार्थ

न्याय क्याहै वा न्यायमे क्या प्रयोजनहै प्रजा वोंमे आरोग्यता सुखशान्ति स्थिति परंपरा और इन ही के लिये प्रबन्ध करना ॥

सर्वै रक्षा न्यायश्च तयोकार्यां क्षात्रियाणामधिकारेभवितुमर्हन्ति नकदापि अन्य जात्याधिकारे तदेवहि क्षात्रियाणां राज्य सुस्थिरचलंध्रुवं सुदृढं न कोपि विचालतुं शक्नोति । प्राय इयं दिव्य शक्तिः क्षात्रजातेषु हि रमाति ॥

भाषार्थ

सब रक्षा न्याय और इनके कार्यै (रक्षा न्याय के कार्या) क्षत्रियों के आधिकार में होने योग्यहै न कदापि अन्य जाति के अधिकार में। वही क्षत्रियोका राज्य सुस्थिर है अचल है ध्रुव है और सुदृढ (पक्क मजबूत)है उसको कोईभी चलायमान नहीं करसकते है जादे करके ये दिव्य

शक्ति क्षात्र जातियों में रमाति है ॥

राजप्रजानामेक्यताविना सर्वेशुभ चिन्हा पृथग्पृथग्भूत्वा शनैःशनै विनश्यन्ते तेरथश्च राजा सर्वोपरि राजविद्या ज्ञानेन वा बुध्ययाऽपतेजो भिर्बन्धनकुर्यात् वा स्वकरणम् तेन नैश्चल्य लभते भुपोराज्य हि सुस्थिरता तथा ॥

भाषार्थ

राजा प्रजा की एक्यता विना सब शुभ चिन्ह जुदे जुदे होकर शनैः शनैः नाशको प्राप्त होतेहे इस लिए राजा सर्वोपरि राजविद्या के ज्ञान से वा बुद्धि से जल सरूप तेजस वा‍त्र वा अपणा करले जिस से राम निश्चलता को प्राप्त होताहे ओर राज्य स्थिर रहता है ॥

बल बुद्धिभ्या रक्षान्यायः ताभ्या

राज्यं ॥ द्वादश बलैः रक्षा । तद्यथा षड्धान्यायः ॥ शारीरिकात्मिक बल भ्यां सिंह हननं प्रथमम् । तद्यथा सिंहं हननं युद्धे बल द्वितियम् ॥

१ प्रजाप्रीय न्याय धर्मेण प्रजानां प्रीतिः रुच्यानुसारः

२ जगद्धितार्थं पारमार्थिक न्याय जगतां स्वस्तिः सुखशान्ति स्थिति श्च तेषां प्रबन्धानां स्थित्यर्थम्

३ सत्य न्याय यथार्थ निर्णयेन निर्पक्षतया प्रजासन्मुखं प्रगट प्रकाश

४ सात्विकन्याय प्रजानां वृद्धिहेतुः प्रजा धरोवरेव राज्ञामधिकारे

५ राजसिक न्यायराजा प्रजापु सुख शान्ति राजविभवाधिकाधिक प्रकाशयते । एतेषां सदा स्थितिः

ग्रावेदेतषु पंचषु तमोरूप स्वार्थं नाप्नोति ॥

३ स्वार्थिक वा तामासिक याय स्वार्थं प्रधानेन कुरुते नाममात्र न्याय स्वार्थिक मर्यादाऽऽधार ॥ राजा प्रजाषु सर्वेषा स्वास्ति सुखशान्ति स्थिर्थं पुतषा प्रवत्याऽचिरेण वि-नाशको नि भूत्वा राज्य प्रसाति । राजा प्रजाषु दु ख कलेश वो भूय न्ते। राज्यमपरकुले सजायते ॥

भाषाय

बलबुद्धि से रक्षा न्याय है रक्षा न्याय से राज्य है चारे धर्मोसे रक्षा है बुद्धिसे छ प्रकारका न्याय है शरीरिक आत्मिक बलसे सिंहका मार ना पहला मल है बुद्धि से सिंहका मारना बुद्धि

१ प्रजाप्रिय न्याय धर्म, स प्रजावोंकी प्रीति रुचीके अनुसारहो ॥

२ जगद्धितार्थ परमार्थिक न्याय जगतोंकी स्वस्ति सुखशान्ति स्थिति और ऐसे प्रबन्धोंकी स्थिरता के लिये हो ॥

३ सत्यन्याय यथार्थ निर्णय और निर्पक्षता से प्रजाके सन्मुख प्रगट प्रकाशहो ॥

४ सात्विकन्याय प्रजावोंकी वृद्धि के कारण से हो राजा प्रजाको धरोवरकी भांति अधिकार में रखे

५ राजासिक न्याय राजा प्रजावों में सुखशान्ति से हो । राजविभव अधिक अधिक प्रकाश कीया जाताहै और इन सबकी सदा स्थितिहै जबतक कि इन पांचों में तमोरूप स्वार्थ न आजाता है ॥

६ स्वार्थिक वा तामासिक न्याय स्वार्थ की प्रधानतासे कीया जाना है ये नाममात्र न्याय

है और स्वार्थिक मर्यादा आधार है। राजा प्रजावोंमें सबों की स्वरित सुखशान्ति स्थिति और इन के प्रबन्ध जल्दी नाश करने वाले होकर राज्य को नाश कर देती है राजा प्रजावों में दुःख क्लेश होत रहत है और राज्य भी दूसरे अन्य कुल में चला जाता है ॥

स्वार्थे समये समये हानि वा क्षाति रूप जायते स महद्भयम् परतु नकदापि पारमार्थे स सदा उच्चपदप्राप्यते भय हानि शोक सकल्पेषु रहितश्च ॥

भाषार्थ

स्वार्थ में समे समे हानि वा क्षति होती रहती है वह भयकारी है परतु पारमार्थ सदा उच्च पद प्राप्त करता है और भय और हानि के शोक सकल्पों से रहित है ॥

त्रिगुणात्मिक मायायाः सृष्टिसूत्थानं पतन संख्या संज्ञा संकेतै प्रदर्शन्ते ॥

संख्या १ प्रथमं सूर्य्यं साक्षि कृत्वा-हमस्त्रशस्त्राणामभ्यासंच करोमि प्रति दिने हेशक्ते वशो ममगृहे ते स्वाति सुख सम्पत्ति वृद्धिः बल प्रताप पराक्रमश्चेति ॥ संकेत सूर्य्यः संज्ञा प्रथमम् ॥ संख्या २ द्वितिय चन्द्र साक्षिकृत्वाहं सर्वोपरि राजाविद्याभ्यासंच करामि प्रतिदिने हे सुमते वशो ममगृहे तथा शान्तिः स्थिति परंपरा भूतिरायुश्च सम्वर्धनम् सुमति बुद्धि विभूति राज्य लक्ष्मीच ॥ संकेत चन्द्रमा । संज्ञा द्वितियम्

संख्या ३ तृतियम् यत्र राजविद्योपदेशः १ प्रतिदिने शस्त्रास्त्राणामभ्यासः २

तत्र बल बुद्धिः ताभ्या रक्षान्यायः ता
भ्या राज्य सुस्थिरमचल ध्रुवम् सुदृढम्
यावत्सूर्यचद्रमण्डलस्थितम् ३ ॥ सकेत
सूर्य चद्रः सख्या तृतियम् ॥
सकेत त्रिशूल प्रकाशयते शुद्धोच्चेश्वर
भावेन सृष्टेषु स्वस्ति सुख शान्ति
स्थितिः सम्पत्ति वृद्धि भूतिरायुश्च स
वर्द्धन ॥ सख्या ५ सज्ञास्थितिः ॥
सज्ञा-राज्याभिशेपः राज्याभिशेपे रा
जविद्यो दिश. राज्यकृया राज्यसिंहास-
नप्रासम् ॥ सकेत राज्यसिंहासनम् ।
सज्ञा राज्याभिशेप ॥ सख्या४ ॥
सकेत पतित त्रिशूल प्रकाशयतेऽशुद्ध
नीच दास भावन रोग दु ख विघ्न काय
पारुष्य दुघटन पतन विनाशनमायुश्च

ख्या ६
संज्ञा धर्म्मपक्षा न्यायराज्यं तयोर्भेयो
जनं सृष्टेषु स्वस्तिसुखकान्ति स्थितिः
संपति राज्यं वृद्धिरायुश्च संवर्धनं ॥
संख्या ७ ॥
संज्ञा-योग-द्वादशबैल: रक्षा-सत्संगति
भिन्नर्थायः ताभ्यां प्रकृति रंजनं परस्परं ।
संज्ञा योग संख्या ८ ॥
संख्या ९ बलेनरक्षा-सर्वेषामात्मानामा
न्या सर्वेषामाज्ञापाहायपश्यामि ज्ञात्वा
रक्षांकरोति राज्यं प्राप्यते ॥
संख्या १० यत्र धर्मेणरक्षान्यायनस्तः
राज्यं भवति ॥
संख्या ११ बलहीनं दुर्घटनं रक्षाहीनं
दासत्व
संज्ञा-सुमति राजविद्यासिक्षा-माया

संख्या राजविद्याऽभावा बुद्धिहीनस्य । स्वार्थसुख भोगैश्वर्यमोहाधिकतात्त्वमा मान्दिप्सनस्य समूलंचाविनश्यति ॥ संख्या ११ ॥

संज्ञा साक्षीसर्वान्पश्यतीश्वर साक्षी शास्त्रोच्चपदं प्राप्यते सर्वोपरिमिस्रहं पंचतत्वाद्ब्रह्माण्डमुत्पन्नंचकरोमि ।पश्चान्मम हस्तयोः सकाशात्समस्तवैः सृष्टः थित्यर्थं । सुखशान्तिः स्थितिः (भोग) ऋद्धिः (ऐश्वर्य) स्वस्तिरायुः । सपतिस्सा शनं सलेषु सर्वेषु ऋद्धि ॥ समाज्ञा तथैवहस्तेषु हानिकर्ता समूलविनश्यति न संज्ञायः समासी सर्वान्पश्यति । इमं योगज्ञात्वा राज्यंप्राप्यते तस्यराज्यं सुस्थिरं अचलं ध्रुवं सुदृढम् ॥

भावार्थ

त्रिगुणात्मिक माया कीसृष्टियोंमें उत्थान पतन
संख्या सञ्ज्ञा और संकेतों से दिखलाये जाते हैं॥
संख्या १ प्रथम सूर्य को साक्षि करके मैं अस्त्र
शस्त्रों का अभ्यास करता हू हमेस (नित्य) हे
शक्ति मेरे घरमें निवाश करो जिन से स्वारित
सुख सपति और वृद्धिहो बल प्रताप और पराक्रम
संकेत सूर्य। सञ्ज्ञा प्रथम॥ संख्या २ द्वितिय
चन्द्रमाको साक्षि कर के मैं सर्वोपरि राजविद्या
का अभ्यास करता हू नित्य हे सुमति मेरे घरम
निवश करो जिससे शान्ति स्थिति परपरा विभूति
आयुसका बढ़ना हो। सुमति बुद्धि राजलक्ष्मी।
संकेत चन्द्रमा सञ्ज्ञा द्वितिय।
संख्या तिसरा जहां राजविद्या का उपदेशहो ?
जहां प्रतिदिन अस्त्र शस्त्रों का अभ्यास हो २
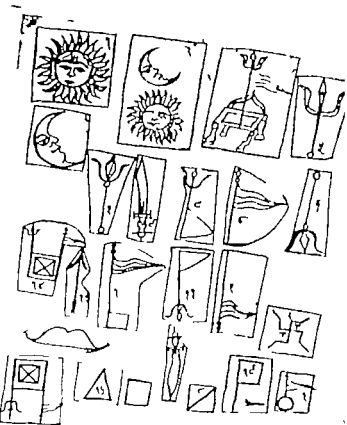
संयम धर्मेषु
परस्पर प्रीति
सहायता
प्रयोजन

वहां वल बुद्धि है वहां रक्षान्याय है और इन दोनु से (रक्षान्याय से) राज्य सुस्थिर है अचल है ध्रुव है (नाहिगने लायक़) और अच्छा मजबूत है सूर्य चन्द्र के मण्डल स्थिति तक। संकेत सूर्य चन्द्र। संख्या तीन ॥

संकेत त्रिशूल प्रकाश करता है शुद्ध उच्च और ईश्वर भाव (मालकी भाव) से सृष्टियों में स्व. स्ति (अरोग्यता) सुख शान्ति स्थिति संपत्ति वृद्धिः विभूतिः और आयुस का बढ़ना संख्या५ संज्ञा स्थिति ॥

संज्ञा राज्याभिशष राज्याभिशेष से राजविद्योपदेश है। राजक्रिया। राज्यासिंहासन को प्राप्तकरना है संकेत राजासिंहासन है। संज्ञा राज्याभिशेष है संख्या ४ संकेत पातित त्रिशूल प्रकाश करता है अशुद्ध नीच दास भाव से रोग दुःख विघ्न क्रोध कड़वापन दुर्घटन पतनं विनाश और थोड़ा उमर (आयुश) संख्या ६ ॥

संज्ञा-राज्यम-धर्म से रक्षा न्याय राज्य है। रक्षा न्याय का प्रयोजन सृष्टियों में निरोग्यता सुख शान्तिः स्थिति सम्पति वृद्धिः और आयुस का बढ़ना है सख्या ७ ॥

संज्ञा-योग-चारे बलों से रक्षा और सत्संगतीयों से न्याय और इन से प्रजा आपस में सुख चन से रहे। संज्ञा योग है सख्या ८ है ॥

सख्या ९ बलसे रक्षा-सबकी आत्मा का आत्मा हू सबकी आशीष अहाय में देखताहू एमा जान कर रक्षा करता है वह राज्य पाता है

सख्या १०-जहां धर्म से रक्षा न्याय नहीं है राज्य स्पष्ट होजाता है ॥

सख्या ११-बलहीन होकर घटता है और रक्षा हीन दास भाव को प्राप्त होताहै ॥

संज्ञा-सुमति राजविद्याशिक्षा माया वा प्रकृति बुद्धि शुद्धि से प्रयोजन न्याय है सख्या १२ ॥

संकेत राजा जीव है प्राणाकार है प्रजा शरीर है धनुपाकार है बिनजीव शरीरकी स्थिति नहीं है

और न शरीरके विनाजीवकी । संख्या १३ ॥
संख्या १४ छतीस लक्षणों से राज्य है संख्या १४
संख्या १५ छतीस लक्षणोंसे हीन शनैः शनैः
नाशहोजाता है संख्या १५ ॥
बल का संकेत त्रिकोणाकार है संख्या १६ ॥
बुद्धिका संकेत वर्ग चतुष्कोणाकार संख्या १७ ॥
बल बुद्धि का संकेत वर्ग त्रिकोणाकार है
संख्या १८ ॥
संख्या १९ राजविद्या के अभाव से बुद्धि में
हीनता आती है । स्वार्थ सुख भोगैश्वर्य मोह की
अधिकता में जादापड़ने से मूल सहित नाश को
प्राप्त होजाता है ॥ संख्या १९ ॥
संज्ञा २० साक्षी सबको देखता है ईश्वरको साक्षी
जानताहुवा उच्चपदको पाता है । ॥
२१ सर्वोपरि प्रभु नें पांच तत्वोंसे ब्रह्माण्डकी
उत्पत्ति करी है फेर डमरु के सकारा से सात स्वरोंसे
सृष्टि की स्थिति के वास्ते सुख शान्ति स्थिति
(भोग) वृद्धि (ऐश्वर्य) स्वास्ति आश्रम और

सपति ॰ासन (राज्यम्) सातोंकी वृद्धि मेरी आज्ञा है इसी तरह इन में हानि करने वालेको मैं मूल से नाश करदेताहू इसमें संशय नहींहै मेरी आंखे सबको देखती है इसयोग को जानता हुवा राज्य को पाता है और उसका राज्य सुस्थिर अचल ध्रुव (अटल) और सुदृढ होजाता है ॥

न्यूनाधिकाशतयाऽयाल्पराधिक्य पृथिवी पतित्व क्षात्र जातिना परपरा स्थिति। सेवाणि राज्ञा। परपरा स्थिति नकदापि वेतन वाऽन्यथा। पृथिवी पतित्वमैश्वरभावः जात्यभिमान सुस्थिरमचल ध्रुवम् तेपा शक्ति दृढ मुपरि राज्ञामपि तथैवच वाऽ यथा दुर्वर. पतन शनै शनै• विनाशन प्रणामे उपरिराज्य निमूल भूत्वा भसति न संशय

भाषार्थ

ोड़ी घणी कम जादा जमीनको मालकी क्षत्रि· ो जातिकी स्थिति परंपरा है और यहां उपरी राजावोंकी परंपरा स्थिरता तनखा से वा नौकरी से वा और तरह से नहीं है ॥ जमीनपर अधिकार (मालकी) मालकी भाव जाति अभिमान से राज्य अच्छा स्थिर अचल और ध्रुव रहता है और उनकी शक्ति (बल) को दृढ बनाता है यही उपरि राजावों के लिये इसके सिवाय और तरह दुर्घटन पतन होताहुवा शनैः शनैः नाशको प्राप्तहोजाता है परिणाम उपरी राज्य निर्मूल होकर भ्रष्ट होजाता है इस में सन्देह नहीं है ॥

प्रातोदिने शस्त्रास्त्राणामभ्यासः तथै- व राजविद्योपदेशश्च श्रणुयात ताभ्यां बल बुद्धि· ताभ्यां रक्षा न्यायः तयोर्द्वा· दशैसप्तदशकर्मा–जितेंद्रिय त्वमालस्य रहितं सत्यमेको पताने शौर्य समरेस्थिरः

दानमीश्वरभाव दुर्व्यशपु निवर्ति तेज
क्षमा रक्षा न्याय पझ्येत् प्रजासार्मठन
पालन सार वा तत्वज्ञानार्थं दर्शनम्
स्वेष्ट प्रीति सत्सगति' घृतिः॥ एतेपु
प्रवर्ति पृथिवी स्वय याति तपा ग्रहे नि
वाश हेतोः याति वशसमुन्नति। तथा
ऽन्याये न स्वधर्म वर्गा वान्धव सम्वध
य स्वप्रजा ऽपरप्रजा परनृपाऽह मोपरी
राजा सर्वेऽधिकृतर सम्मतयशत्रूः
भवन्ति चा न्यायकागजानविनाशय
न्ते॥ जात्योदयेपु विचारशक्तिप्वधि
कः तेजः तीव्रता तीक्ष्णता सन्ति तथैव
राजाविद्याऽभावेन पातितासु निस्तेज
तीव्रता तीक्ष्णता विनश्यन्ते। सेथि
ल्यमतिमानिता दर्प• पारुष्यमज्ञान'

स्थानमहान्वितः न्ष्टात्मना न्यायेनार्थं संचयति स्वधर्मोश्चोत्सृजानाति विन श्यति।

राजविद्याये गमाम्ना क्षात्र जातिषु तेजः तीव्रता तीक्ष्णता विराजति भूति ध्रुवा श्री विजयश्चशासनम्॥

सदा सर्वदाऽनाशवानात्मा गत्मस देहिनः शुद्धोच्चश्वर भावेन देहातरोच्च मयोन्यां राज्यप्राप्तिः पुनःपुनः वा युद्धशासैः देहं पवित्रंकृत्वात्यजति धीरस्तत्र न मुह्यति राज्यप्राप्तिः ध्रुवम्॥

सर्वभूतानां पंचतत्वा त्पंचावस्थाभूत्वा पृथिव्याजन्मः जलेन कौमारम्। पाव-केन पैरुपम् यौवनम्। वायुः तेन जरा आकाशेन मृत्युः भूयः पृथिव्या जन्मे-

त्यादि भावेनाऽपदिहार्येऽर्थं श्रुत्रप्रवर्तिन चक्रम् ॥

भावार्थ

हमेश नित्य अस्त्र शस्त्रों का अभ्यास करनी ताइ राजविद्यापदस्य शुनना जिससे वड बुद्धि जिससे रक्षा न्याय इन दोनु की दृढता १७ कर्म है १ जितेन्द्रिय २ आलस्य रहित ३ सत्यम ४ एक पत्नि ५ शौर्य ६ युद्ध म स्थिर ७ दान देना ८ माल की माव ९ खोटे व्यशनों से दूर रहना १० तज ११ क्षमा १२ रक्षा न्याय को सभालना १३ प्रजासे मिलतरहना पालना १४ सार बात को जानना १५ अपने इष्ट में प्रीति (प्रेम) १६ सत्सगति १७ धीरज इन में प्रवर्ति रखनेसे पृथिवी अपने आप जातीहै उन के घर में निवाश के लिये और उस वश (कुल) कीउन्नति होतीहै इसी तरह अन्यायसे अपना कुटुम्ब बाधु सम्बन्धी अपनी प्रजा दूसरी प्रजा राजा और दूसरी राजा

और सब अधिक सम्मति (राय) सब शत्रु होजा॰
तेहै और अन्यायकारी राजा को नाश करतेहै
जाति के उदय में (बढने में) उनकी विचार
शक्ति अधिक तेज तीव्र और तीक्षण होजातीहै
याने बदनेवाली जाति के ख्याल में जादे तेजी
तीव्रता और तीक्षणता आजाती है और इसीतरह
राजविद्या के अभाव से गिरती हुई जाती निस्तेज
होजाती है तीव्रता तीक्षणता जाती रहती है ढीला
पन अतिमान घमण्ड कडुवापन अज्ञान मान मद
मे चूर अपनी आत्मा को नाश करनेवाला अन्या॰
य से धनही धन इकट्ठा करता है और अपने आप
को उच्च मालिक समजता है सो नाश को प्राप्त
होताहै ॥ राजविद्या योगमाया क्षात्र जातियों में
तेज तीव्रता तीक्षणता अन्न धन विभव राजल–
क्ष्मी विजय और राज्य देतीहै ॥ सदा सर्वदा
आत्मा (जीव) अनाशवान अजर अमर है वह
शुद्ध उच्च और मालकीभाव से दूसरी देह (शरीर)
उच्च जन्म राज्य पाता रहता है वा युद्ध में शास्त्र

अस्त्रों से देहको पवित्र करताहुवा शरीर छाड़ता है और वह धीरजवान पुरुष मोहको नहीं प्राप्त होता है निश्चय राज्य पाता है॥ सब प्राणीयों की पांच तत्वों से पांच अवस्था याने पृथिवी से जन्म। जल से कौमार अवस्था। अग्नि से पौरुष यौवन। वायू से जरा। आकाश से मृत्युऔर फेर पृथिवी से जन्म आदि होकर अगला जन्म होताहै येही जगत का घूमता हुवा (फिरताहुवा) चक्रहै॥

राज्विद्या शिक्षयति स्वस्ति सुख शान्ति स्थिति सपति वृद्धि भूतिरायु श्च सर्वधनम्॥

भावार्थ

राजविद्या सिखलाति है रोग रहित होना सुख शान्ति स्थिति परंपरा संपति वृद्धि राजलक्ष्मी और दीर्घायु होना॥

॥ ॐ शिव ॥

राजविद्या ।

प्रारंभ शिक्षा ।

मनुज शरीरं विचार शक्तिभि-स्सृज्याम्यहम् । विचार शक्तिभिरुच्च भावेन सह सर्वार्थं साधितुं च सर्वं कर्तुं शक्नोति ।

भाषार्थ

मनुष्य का शरीर विचार शक्तियों सहित मेंने रचा है। विचार शक्ति से उच्च भाव के साथ सब काम साज शक्ता है और सब ही कर शक्ता है।

विचार शक्ति महॉन्बलम् । एत-द्विद्योपदेशेन ज्ञानं श्रुतेन सह बहुला संतति (परिवार) श्च सर्वे सुख संपति सहतिष्ठते चिरमाभू चंद्रतारकम् ।

भावार्थ

विचार शक्ति महाँन्बल है। इस विद्या के उपदेश से ज्ञान को सुनने से बोहुत संतति (परिवार) और सर्व सुख संपति के साथ बहुत समय पृथिवी चंद्र तारों की स्थिति तक स्थिर रहता है।

॥ ॐ शिव ॥

राजविद्या ।

प्रथमा शिक्षा—शब्दार्थ प्रकाश ।

१—सम्राट्.

चक्रवर्त्ति राजा समस्ते क्षिति मण्डले ।

भाषार्थ

१ सम्राट्—चक्रवर्ति राजा समस्त पृथिवी मण्डल में ।

२—स्वार्थिक् बुद्धिः

स्वल्प वा क्षुद्र बुद्ध्याया शीघ्र स्वल्प सुखार्थे स्वल्प लाभार्थे चाधर्मेण परस्य हानिं कृत्वा संतोषो यस्य च स्थितिः सादिग्धा सा स्वार्थिकि बुद्धिः ।

॥ भावार्थ ॥

२ स्वार्थिक् बुद्धिः—ये स्वार्थिक अल्प (छोटी थोडी) क्षुद्र (नीच) बुद्धि से जल्दी थोडा सुख और थोडा लाभ के लिये दुसरों का नुकसान करने में स्थिति होती है वह नीच दुषणा सहित स्वार्थिक बुद्धि है।

३—पारमार्थिक् बुद्धिः

यथोच्च बुद्ध्याया धर्मेण सह महत्प्रयोजनस्यावाप्यते प्रयतेत इयमेव धन सुखयोः स्थितिः सैव पारमार्थिकि बुद्धिः।

भावार्थ

३ पारमार्थिक् बुद्धिः—जिस उच्च बुद्धि से धर्म के साथ बडे बडे कार्यों को प्राप्त करने को यत्न करना यही धन और सुख दोनू की है वही पारमार्थिक बुद्धि है।

४-रक्षाका.

बलेन दुर्बलं रक्षेत्-बलिनो दुर्बलस्येह रक्षणं प्रयत्नतः।

भाषार्थ

४ रक्षा क्या है-बल से दुर्बल की रक्षा करना-बलवान् दुर्बल की रक्षा यत्न से करे।

५-क्षत्रियः

क्षतात्-नाशात् । त्रायते-रक्षति इति क्षत्र एव-क्षत्रियः।

भाषार्थ

५ क्षत्रिय से क्या अर्थ है-नाश से रक्षा करने वाला घाव वा कठिन दुःख को सहन करे।

६-न्याय लक्षण माह.

सुकृतस्यकर्तारं सुफलेन हि योजनम्
दुष्कृतैस्तुविधातारं दण्डेन दमनं स-

सृतम् निष्पाप वा निरागसो नावसादं दातुमर्हा।

भावार्थ

६ न्याय के लक्षण कहे जाते हैं—अच्छा करने वाले को अच्छा फल देना और बुरा करने वाले को दण्ड देना—निष्पाप निरपराधी दु ख देने योग्य नहीं है।

७—सामकिम्.

शान्तिवाक्यम्—वा सुखेन सह प्रीय वचनादि तेन कार्यानुष्ठानम्।

भावार्थ

७ साम क्या है—शान्ति करने का वाक्य वा सुख के साथ मीठे वचन आदि से कार्य करना।

८—दानाकिम्

लोभेन सह वा दानेन कार्यानु- नम वा धनादेः समर्पणम्।

भाषार्थ

८ दान (दाम) क्या है-लोभ देकर कार्य करलेना।

९-भेदकिम्.

बुद्धिर्द्विधाकरणम् संहतानां शत्रूणां भेदेन सहात्मसात्करणम्।

भाषार्थ

९ भेद क्या है-बुद्धि को दो कर देना वा मिले हुवे शत्रूवों को भेद करके अपने साथ करना।

१०-कोदण्डः

ताडनेन सह वा विग्रहेन सह कार्यानुष्ठानम्।

भाषार्थ

१० दण्ड क्या है-ताड़ना देकर वा लड़के कार्य करलेना।

११-किंज्ञानम्.

ज्ञानस्य चत्वारोऽशाः चितं मनो

बुद्धिरहंकारश्चेति-। येन चित्यते सज्ञायते आत्मनोचित्तम् हृदयापरनामकम्। मनस्तु संकल्प विकल्पात्मकम् संदेह स्वरूपम्। निश्चयात्मिका बुद्धिः वा ज्ञानेन सत्य कार्यं कर्तव्यम् वा यथा कर्म तथा बुद्धिः अतः एवहि बुद्धि कर्मानुसारिणीति। अहमित्य हंकारोऽभिमानाश्रयति। स्थावर जंगमानां यथा तथ्येव जाननीयम् ज्ञान प्रोच्यते।

भाषार्थ

११ ज्ञान क्या है—ज्ञान के चार अंश है चित्त मन बुद्धि और अहंकार। जिस्से चेत कीया जाय जाना जाय आत्मा से उस चित्त कहते है। हृदय इसका दुसरा नाम है। मन तो आत्मा का संकल्प विकल्प संदेह सरूप है। आत्मा का निश्चय बुद्धि है वा ज्ञान से सत्य कार्य करना चाहिये वा जैसा

काम तेसी बुद्धि। इस लिये बुद्धि कर्मों के अनु-
सार वहने वाली है। अहम (मैं) ये अहंकार
अभिमान आश्रय है।

१२-परंज्ञानम् वा सारज्ञानम्.

मनसो मोहस्य वाह्येन्द्रियाणां च
ज्ञान सर्वेषु स्थावर जंगमेषु विद्यते परं
मनुष्येषु जितेन्द्रियत्वम् क्षमा दया
सज्जनैः सहः प्रीतिः निर्लोभ दानं भय-
शोकहारः मैत्री करुणांच सर्व भूतेसु
धैर्यम् सुमतिः श्रद्धा सत्यं सारं ज्ञात्वा
ऽद्वेष शुद्ध भावना धारणा चाधिकाः।

भाषार्थ

१२ परंज्ञान वा सारज्ञान—मन मोह और बा-
हिर इन्द्रियों का ज्ञान समस्त चराचरों में पाया
जाता है परन्त मनुष्यों में जितेइन्द्रियपन्न-क्षम
दया-सज्जनों के साथ प्रीति-निर्लोभ दान-भयशोक
को छोड़ना मित्रता-करुणा समस्त प्राणियों से

और धीरज सुमति (अच्छी बुद्धि) श्रद्धा और सत्य और सार को जानता हुवा वा जान करके द्वेष न रखना शुद्ध भावना और शुद्ध धारणा अधिक है।

१३-राजविद्या.

विद्याना राजा सैव विद्या सर्वोपरी प्रोच्यते।

१३ राजविद्या—विद्यावों की राजा वही विद्या सर्वोपरी (सब के ऊपर) कही गई है।

१४—प्रबन्धः

जगत्सु सुख शान्तिः स्थिति रुपाय प्रयत्न प्रबन्धः प्रोच्यते।

भावार्थ

१४ प्रबन्धः—सृष्टि में सुख शान्ति और स्थिरता के उपाय वा यत्न प्रबन्ध (इतजाम) कहे जाते हैं।

॥ प्रथमशिक्षा ॥

राजविद्या शब्दवाक्यानामर्थवक्त्राष्यं
प्रकाशयते संज्ञा संकेत संक्षेप तथैवच ॥

राजविद्या—विद्यानां राजा वा राज्ञां
विद्या सर्वोपरी प्रथमोपदेश शिक्षयाति
राज्यशासन शक्तिम् । तया प्रजानां
संमार्गे प्रवर्त्तनम् । सत्वरजस्तमश्चैव
साम्यावस्था वा शुद्धिः तया शुद्धोश्वर
भावैः शुद्धाचारणामवलम्बनम् । तया
शक्तिःसुमतिर्विशुद्धज्ञान संप्राप्यते ।
तेन रक्षान्यायः ताभ्यां सृष्टेः सुखशांतिः
स्थितिश्च प्रबन्धानां स्थैर्यम् । स्वस्थ
संपतिः सौभाग्यामायुश्च संवर्धनम् ।
तत्वज्ञानार्थं दर्शनम् तत्प्रभावेन स्वत-
न्त्राजाफलम् । यथेष्ट प्राप्ती । शरीर

क्षरोभाव जीवश्चाक्षरः ब्रह्माक्षरमधिय ज्ञाहम परमस्वभाव वा प्रकृति नियमा तया भूतानामुत्पन्न वृद्धि कार्या कर्मः क्षमा वीरत्वमध्यात्म ज्ञानम् । ज्ञान योग व्यवस्थिति' । एतद्विद्याम्यास ममाधिकाश मार्ता । राज्य सुस्थिरम चल ध्रुवम् । क्षत्रियाणा मान प्रतिष्ठा स्थितिश्चाधार इम विद्योपदेशः तेन शक्ति सुमति श्रद्धा भक्तिष्ट पुरुषार्थेन प्रथिवी पानेश्च वाभूयने महद्योन्या प्र जायते । स्वार्थ सुख भोगेश्वय मोह मभावश्चाधिकारः। एतेपामविक्ता तया दुर्बुद्धि दुर्बुद्धया दुष्कृतम् दुष्कृतेन दुःखमधो जायते । सुकृते सुपात्रे दाने महोत्साहः। द्यूतक्रया दूरत्पारि वर्जनम्। स्वतन्त्रतया राजा प्रजा संमिलन पर

रूपस्म् । लोक संग्रहं राज्यम् । ज्ञानं संग्रहं ब्रह्मः । धनं संग्रहं वाणिज्यम् । परिचर्यात्मक सेवा ॥

भावार्थ

भावार्थ—प्रथमाशिक्षा-राजाविद्या के शब्द वाक्यों का अर्थ प्रकाश कीया जाता है और संज्ञा संकेत और संक्षेप (मुख्तसर) राजाविद्या-विद्यावों की राजा वा राजवों की विद्या सर्वोपरी प्रथम उपदेश राज्य शासन की शक्ति सिखाता है जिस्से प्रजावों को सत्य मारग पर चलना। सत्तोगुण, रजोगुण और तमोगुण की साम्य अ· वस्था वा शुद्धि तिस करके शुद्ध उच्च और मालकी भावों से शुद्ध धारणा को अवलंब करना जिस करके बल बुद्धि का विशुद्ध ज्ञान की प्राप्ती होती है जिस्से रक्षा न्याय और इन दोनु से जगत् का सुख शान्ति स्थितिः और प्रबन्धों की स्थिरता है औरनिरोग संपत्ति सौभाग्य और आ

(उमर) का चढ़ना है । ज्ञान के सार को देखना जिसके प्रभाव से स्वतन्त्र आज्ञा (हुकम) चलना । जो चाहे सो मिले । शरीर नाशवान है और जीव कभी नाश नहीं होता । ब्रह्म अक्षर (अ नाशवान) है और अधियज्ञ में स्वयं हूं । परम स्वभाव वा प्रकृति (कुदरती) नियम तथा प्रा णियों की उत्पति और वृद्धि का कार्य कर्म है । क्षम वीरत्वभ और अपनी आत्मा का ज्ञान है । और ज्ञान योग मे जिसकी स्थिति है। इस विद्या के अभ्यास से मेरे अधिक अश की प्राप्ती होती है और वह राज्य सुस्थिर अचल और ध्रुव है और क्षत्रियों का मान प्रतिष्ठा स्थिति और आधार है । इस विद्या के उपदेश बल, बुद्धि श्रद्धा, भक्ति, इष्ट और पुरुषार्थ से पृथिवी पति होता रहता है और उच्च जन्म पाता है स्वभाव से स्वार्थ सुख भोगैश्वर्य माह अधिकार है इनकी अधिकता से दुर्बुधि । दुर्बुधि से दुष्कृत और दुष्कृत से दुःख और नीच गती पाता है सुकृत काम मे और

सुपात्र को दान देने मे बड़ा भारी उत्साह रखे। जूवका कार्य शक्त वर्जित है। स्वतन्त्रता के साथ (आजादी से) राजा प्रजा आपस में मिलते रहे। लोक संग्रह करना राज्य है ज्ञान संग्रह करना ब्रह्म है धन संग्रह करना वाणिज्य है और परिचर्यात्म सेवा है॥

राजा–प्रकृतिः रञ्जनादिति राजा-राजा एतज्जगतां वृद्धिहेतुः प्राज्ञापाण्डि-ता बुधा जगदनुभावुका स्वजातेः निज स्वामीनः शुभचिन्तका वृधाभिःसंगतः। संततं राजा प्रजानां वृद्धिरुपायं संसा-धयेत्। राजा सर्वभूतोपकारार्थम्। सर्वभूत हितरतः। सर्वे धर्मकार्येषु सहा-यता दुष्कृतेषुदण्डः। राज्ञां विचार शक्ति संप्रसारणं प्रयोजनं शुद्धोच्चेश्वर भावैः धर्मेण यथा योग युक्तेन [illegible]

तार्थं रक्षान्यायः ताभ्यामेव सुखशा
न्ति स्थितिश्च प्रबन्धानां स्थैर्यम्
स्वस्थ संपत्ति सौभाग्यमायुश्च संवर्धनं
सर्वं प्रबन्धं पश्येत् । तत्त्व ज्ञानार्थं
दर्शनम् । सर्वोपरि राजविद्योपदेश
परिपूर्णम्। वीर सुभट्टाना मस्तकः राजा।
प्रजाप्रियं राजा तिष्ठेत् चिरम्
प्रातः समये शरीरात्मशुद्धिः शरीर
शुद्ध्यर्थं स्नानम् तथैवात्म शुद्ध्यर्थम्
सर्वशक्तिपती ईश्वर माराधनमुपदेशनम्
सदाचारश्च योगाः । तत्पश्चात्स्वधर्म
रक्षान्याय । पश्येत् प्रथमा क्षत्रियाणां
वीर सुभटानां प्रतिदिनास्त्रशस्त्राणा
मभ्यासं पश्येत् । पश्चान्यायम् राज्य
कर्मचारीणां योग्यता कार्याणि पश्येत् ।
स्वतन्त्रतया प्रजा सम्मिलन । गुप्तरूप गूढ

पुरुषैः चारेणोऽत्साहेन गुप्तवर्त्तान्तं परिज्ञानम् । आय व्यय समाक्षणम् । प्रमावश्य प्रथमोपायः । भोजनम् । राजविद्योपदेश वा प्रचीन वीरयश वार्ता श्रुत्वा धर्ममवलम्बनम् वा वीर सुभटानां यशो वा धनिनां ज्ञानिनां कीर्तीतिहासं शृणुयात । स्वेष्ट दृढास्तिक भावः शरीरेन्द्रिय संयमः । सदाचारः । स्वदेश मातृभाषाया प्रीति स्वदेश शुद्ध बलिष्ठ भोजनम् । स्ववीर वेषभूतेन प्रभावः । स्वजाते मर्यादय । विवाहमैक्य भावः । धर्मयुक्त पुरुषार्थ । प्रकृति रचनां कार्यां पश्येत् । सर्व साधारण परिज्ञानार्थं राज्ञां वेष वाहनंचा साधारणम् विशेष चिन्हमवश्यमेव परंतु गुप्तवर्तान्त प्राप्ते नवश्याः । प्राय वाऽधिकतरांशेन मनुष्यैः

मानुषी सुख शान्ति स्थितिश्च प्रब-न्धाना स्थैर्यम् । सपाति सौमाग्यमैश्वर्यं धनानि सुखानि राज्यमेवच । सहः प्रीत्यया लोक सग्रह राज्य सुस्थिर मचलध्रुवम् । पुरुषायोग्यनास्थि यादि योजकाधिकतर योग्यः । दूरान्निकट निवाशी स्वदेशी सामिप्यस्थाय्याधिक् तरुपयोगी यादि धर्मेण प्रवर्तन परस्परम्। धर्मेण लोक सग्रहम्–जनसमूह स्वकर-णम् । धर्मेण मिथः परस्पर हितार्थं तपः पुरुषार्थ परिश्रम कुर्वन्ति तेषा प्रत्येक फल सुखानि धनमेवच सर्वे शुद्धोच्चेश्वर भावेन मिथो परस्पर साविभक्तम् वा प्रति फलानि प्रत्योपकार प्रदान परस्प रम् न कश्चित्परिश्रमस्य प्रतिफल प्र-त्योपकारं हंतव्या । यथा कर्म तथा फल

न्याय: सेवोच्च दृष्ट्या परिपालनं सर्वे धर्मः । एतेषुहानिः तथा विविधा विद्या देशोन्नति मिथो परस्पराणां हित प्रीतिः बलबुद्धिः पराक्रम राज्य सर्वे शनैः शनैः विनश्यन्ते प्रणाम राज्यमपरहस्तेऽपर कुले प्रजायन्ते अतः सतत धर्मे न्याये रक्षणेपारमार्थिके परोपकारे परस्योपकारे प्रतिफलं परदाने लोक संग्रहे प्रवर्ति । धर्मेण सहाय साधनोपायः । स्वपोषेऽसमर्थानामन्ध पंग्वनाथ बालका विधवा स्त्रीय स्वपोषेऽसमर्थानां पोषणम् । विविध विद्यानां प्रचारः । धर्मोपदेश प्रबन्धः । पुण्य धर्मेश्वराराधनमुपार्जनम् । न्याय मर्यादां प्रबन्धं पश्येज्जगति सन्मार्गे प्रवर्त्यर्थम् । तथैवापर भूमृद्भिः नृपैः सहःकार्या प्रीति धर्मेण प्रवर्तनं

परस्परम् । शिल्पोपघालय चिकित्सा-
लय शरीरव्यच्छेदालयानाथालय वायू
जलशुद्धिः प्रजाहितार्थं प्रबन्धः । तपः
पुरुषार्थ परिश्रम सेवा सहायता धर्म
रक्षान्याय दान-पुण्य पूजा जप भक्ति
मान मोह प्रीतिरैक्यता ऐतिहासिक
पदादि यशोत्साह श्रुणुयात् । प्रीयदर्श-
नम्। सुगन्धादि भोजन शरीर पोषणार्थं
माछादनम्—रक्षार्थम् । सर्वे जगदुपयोगा
वस्तवः सामग्रयः निर्माणम् । निर्मापणम्।
जगदुपयोगा कार्यालया स्थापनम् -।
नवोपयोगी कोषागारचोपार्जनम् तेषा
सर्वेषा प्रतिफल प्रत्योपकारोदारचित्तेन
प्रदानम् । प्रजाए कार्योत्साह यथायोग
युक्तेन रञ्जन परस्परम् ।
सर्वे वलवुद्धिः गुणा भिन्नभिन्न मिश्रत

भावेन जगज्जनाषु विभज्यतः बलबुद्धि-भ्यां रक्षान्यायः ताभ्यां राज्यम्। राज्य चिकीर्षकः राजा स्वतन्त्र तथा प्रजा संमिलेत्। रक्षान्याये शासन कार्यं भूमिराय प्राते सर्वे प्रबन्ध कार्येषु वीर सुभटान्क्षात्रियान् नियोक्तव्या। राज्ञा सतुष्ट प्रजा राज्ञां सर्वं धनं बल सर्वम्। प्रजैव राज्ञां परमामित्रा तथैव राजा यादि दया धर्मेण न्याय परोपकारैश्च प्रवर्त्तनं परस्परम्। शुद्ध भावेनाधिकुपकार सन्मुखे न्यूनापकार न पश्यते।

स्वमित्रस्यापिचोपरी राज्य कर्मचारयः मित्रभावेनापि तेषामाधिकारेन भवितुमर्हति नापिस्व राज्यस्य बलबुद्धयोर्भेदं प्रकाशयेत्। यादि तेशत्रूः भवान्ति महां हानिकर्तुं शक्नुवान्ति। प्रत्यैके वा सर्वेषु

नाति प्रवतते । प्रतिकार्यं सीमानोलंघ-
येत् । जन्तूपजन्तु' प्रजाजनेसूपकारे'
तेषामाशीषा तैश्चाधिकाधिक जनम
ख्यो वा समूहानामधिपतिः मोक्षाधि
पतिः । सततमाशीषाहाय परोपकार
सुकृत दुष्कृतपुण्ये राजा प्रभू. पश्यति।
राजविद्या राजगुह्य महत्तत्त्व सर्वोपरी
परमोपदेश ज्ञात्वा धर्मेण रक्षा न्यायेन
प्रजापालनम् म राजाऽखण्ड निस्कण्टक
सुख साहित चिरकाल पर्यन्त शाश्वती
समा राज्य करोति ॥

स्वार्थं सुख भोगैश्वर्य साम्यावस्थाऽहिं
सावराशीष. धर्म पुरुपार्थ सदाचरणं
श्च दुःखस्य साम्यावस्था (भवार्ति) सैव
सुखमव्ययम् । स्वार्थस्य शान्तिः ।
भोगस्य स्थिति परपरा । ऐश्वर्यस्य प्र-

न्धानां स्थैर्यम् । अहिंसायाऽऽयूश्च संवर्धनम् । वराशीष या शुद्धः संतति-रुत्पत्ति वावतरणम् । धर्मेण धनानि सुखमेवच । पुरुषार्थेन मान प्रतिष्ठा स्थितिश्चाधारः सदाचरणेन स्वस्थः स्थितं स्थिराम् ॥ मनोऽन्न धन सत्कारः तैश्च स्वदेश वीर सुभटांच बुद्धां सद्दि-द्यायुक्तां स्वकरणम् तथा दीन प्रजा पालनम् तथा दुष्टानदण्डः राज्य सु-स्थिरमचलं ध्रुवम् ॥

भाषार्थ

प्रजा को राजी रखे वह राजा है। राजा इस जगत की वृद्धि का कारण है अच्छी तरह समजने वाला पण्डित बुद्धिमान जगत के अनु-भवी (तज्जुरबेकार) अपनी जाती का अपने मालिक का सुभाचिन्तक और वृद्धों की संगति

करके, इमेसे राजा प्रजावों की वृद्धि को उपयि करता रहे। राजा सब प्राणियों के उपकारके वास्ते है। सब प्राणियों के हितमें प्रीति रखे, सब धर्म कार्यों में सहायता देता रहे और दुष्टों को दण्ड देवे। राजावों का विचार चलने से प्रयोजन शुद्ध भाव उच भाव और मालकी भावों करके धर्म से यथायोग युक्ति से जगत हित के वास्ते रक्षन्यायों करे और नीति न्याय से मतलब प्रजावों में सुखशान्ति स्थिति और प्रबन्धों की स्थिरता है और निरोग संपति सौभाग्य और आयुस का बढ़ना है सो प्रबन्धों को देखना चाहिये। ज्ञान के सार को देखना। सर्वोपरी राजविद्या के उपदेश में परिपूर्ण हो। वीर सुभटों का मस्तक राजा है प्रजा को प्यारा राजा बौत काल तक राज्य करते हैं।

प्रात समय शरीर आत्मा की शुद्धि करे-शरीर शुद्धि के अर्थ स्नान है इसी तरह आत्म शुद्धि के वास्ते सर्व शक्तिमान ईश्वर की आराधना

उपासना—सदाचार और योग है इसके बाद अपने धर्म रक्षा न्याय को संभाले। प्रथम क्षत्रियाणा वीर सुभटों के प्रति दिन शस्त्र अस्त्रों के अभ्यास को देखे। फेर न्याय को। राज्य कर्मचारियों की योग्यता और उनके कामों को देखता रहे। स्वतन्त्रता के साथ प्रजाओं से मिलता रहे। चार गुप्त गूढ वेष पुरुषों के उत्साह से सब गुप्त वृत्तान्त को जानता रहै। जमा खरच देखता रहे। परम अपयश का उपाय पहले करना चाहिये। भोजन। राजविद्योपदेश वा प्राचीन वीर वृत्तान्त वार्ता सुनकर धर्म को पकड़ना वा वीर सुभटों के यश का वा धनवान् और ज्ञानियों की कीर्ति इतिहासों का सुनना चाहिये। अपने इष्ट में दृढ (मजबूत) आस्तिक भाव हो। शरीर इन्द्रियां अपने वश में हो। सदाचार हो। अपनी मातृ भाषा में प्रीति हो। अपना ही शुद्ध बलीष्ट भोजन। अपना ही वीर वेष। तिस करके प्रभाव है। अपनी ही जाति में मर्यादा में निरत

हो और एक भाव हो। पुरुषार्थ धर्म युक्त हो।
प्रकृति रचना और कार्यों को देखे। सर्व साधा-
रण की जान पहचान के वास्ते राजा का वेष
और वाहन साधारण न हो कोइ विशेष चिन्ह
अवश्य हो परंतु गुप्त वर्त्तान्त की प्राप्ती के समय
अवश्य नहीं है। जादे वा अधिक अंश से मनुष्यों
से ही मनुष्यों की सुख शान्ति स्थिति और
प्रबन्धों की स्थिरता है और संपति सौभाग्य
ऐश्वर्य धन और राज्य है। प्रीति के साथ लोक
संग्रह वा प्रीति के साथ प्रजाजनों को अपना
करना यह राज्य स्थिर अचल और दृढ है।
कोइ भी पुरुष अयोग्य नहीं है जो योजक अ-
धिकतर योग्य है। दूरवाले से पास रहनेवाले
वा स्वदेशी पास रहनेवाले अधिकतर उपयोगी
(कामके) होते हैं यदि धर्म से आपस का व-
र्त्ताव हो। धर्म से लोक संग्रह करना वा लोकों
को अपना करना। आपस के हित के लिये धर्म
से तप पुरुषार्थ परिश्रम करते हैं तिन प्रत्येक

के परिश्रमादि के फल सुख और धन हैं। सब शुद्ध उच्च और मालकी भाव से आपस मे बांट देना चाहिये वा प्रति फल प्रत्योपकार आपस मे देना चाहिये न किसी के परिश्रम का वा प्रत्योपकार का फल मारना चाहिये। जैसा कर्म वैसा फल न्याय है वही उच्च दृष्टी पालना करना धर्म है इनों मे हानि होने से सब तरह की विद्यायें देश उन्नति आपस की हित प्रीति बल बुद्धि पराक्रम और राज्य सब शनैः शनैः नाश होजाते है परिणाम में राज्य दुसरों के हात मे दुसरे कुलों मे चला जाता है इस वास्ते हमेसा धर्म में न्याय में रक्षा में पारमार्थिक मे परोपकार में प्रत्योपकार में प्रतिफल देने में लोक संग्रह मे प्रवर्त्ति हो। धर्म के साथ पैदास करने का उपाय करना। अपने पोषण करने में असमर्थों का आंदे पांगले अनाथ बालक विधवा स्त्री अपना पोषण न करसके उन सब का पोषण करना। सब तरह की विद्यावों का प्रचार करना। धर्म के

उपदेश का प्रबन्ध करना। पुण्य धर्म और ईश्वर की आराधना उपासना करना। न्याय मर्यादों के प्रबन्ध का देखना जगत को शुद्ध मार्गपर चलाने के लिये। इसी तरह दूसरे राजाओं के साथ कार्य प्रीति और धर्म मे प्रवर्त हो। शिल्प औषधालय चिकित्सालय शरीरव्यवच्छेदालय अनाथालय और वायु जल की शुद्धि प्रजाहित के लिये सब प्रबन्ध।

तप पुरुषार्थ परिश्रम सेवा सहायता धर्म रक्षा, न्याय दान पुण्य पूजा जप भक्ति मान मोह प्रीति वस्यता इतिहासिक पदादि यशका उत्साह सुनना चाहिये। देखने मे प्रीय हो। सुगन्ध आदि भोजन शरीर पोषण के लिये शरीर ढकने को (ओढने पहरने, रक्षा के वास्ते। सारी उपयोगी वस्तुवों सामग्रीया बनाना मनवाना। जगत उपयोगी कार्यालय स्थापित करना। नव उपगी खजाना भरपूर रखना और इन सब का प्रतिफल प्रतिउपकार उदार चित्त से करना चाहिये प्रजा

अपने राज्य के बड़े बुद्धियों के भेद को प्रकाश न करना चाहिये जो वे शत्रु होजाय तो महा हानि कर शक्त हैं। प्रत्येक मे वा सबों मे अति प्रसन्न न होना चाहिये। हरक काम की सीमा न उलघना चाहिये। जन्तु उपजन्तु प्रजाजनों में उपकारा स उनकी आशायें तिन करके अधिका धिक जन संख्या वा समूहों का अधिपति वही उच्च अधिपति है। इससे आशीष द्वाय परोपकार सुकृत दुष्कृतों को उपरी राजा प्रभू देखता है। राजविद्या राज गुह्य का महत्तत्त्व सर्वोपरी उप देश को जान्ता हुवा धर्म स रक्षा न्याय से प्रजा पालन करना वह राजा अखण्ड निष्कण्टक सुख सहित बहुत बरसों तक राज्य करता है।

स्वार्थ सुख भोग ऐश्वर्य की साम्य अवस्था अहिंसा आशीषा धर्म पुरुषार्थ और सदाचरणों स सुख की साम्य अवस्था वही सुख हमेसका है स्वार्थ की साम्य अवस्था शान्ति है भोगों की साम्य अवस्था स्थिति परंपरा है और ऐश्वर्य की साम्य

❋ दश प्रकार के राज्य ❋

बल बुद्धिभ्यां प्रजानां सन्मार्गे प्रवर्त्यर्थं दश प्रकार राज्य शासनम्।

१ समस्त प्रजा सम्मत्यानुसार मर्यादाः तदनुसार शासनम्। व्यवस्था तत्र राज्यं प्रोच्यते॥

२ प्रजाभ्यः सभ्यजनाः वृद्धा जगदनुभावुकाः स्वार्थनिस्पृहः दूरदर्शी धर्मे न्याये सत्यरताः जगाद्धितार्थं पारमार्थिका बुद्धाऽधीतू व्यवहारज्ञा एतेषां सर्वेषां समत्यानुसार प्रजानां स्वस्ति सुखशान्ति स्थितिश्च संपत्तिवृद्धिरायुश्च वृद्ध्यर्थं राजा राज्य शास्ति। धर्म राज्य प्रोच्यते

३ केवल मर्यादानुसार राजा राज्यं शास्ति मर्यादा राज्यं प्रोच्यते

४ धनाढ्य जनाना भूम्याधिपतिनां च शासनम् । कतिपय जनतन्त्र राज्यं प्रोच्यत ॥

५ मुख्य मुख्य सभ्य योग्य सेनापति भ्य शासनम् । सेना तन्त्र राज्य प्रोच्यते ॥

६ राज्ञः प्रजाना सभ्यजना जगदनु भावुका स्वार्थ निस्पृह' दूरदृश्यु-त्साहेन धर्मे न्याये तत्परा सत्य रता जनैः शासनम् । राजा प्रजेक मत्यथा शासनम् प्रोच्यते ॥

७ केवल राज्ञ इच्छ्यानुसार शासनम् राज तन्त्र राज्य प्रोच्यत ॥

८ राज्ञ भृत्यया कृपा पात्रः जनैः शासनम् । अनियन्त्रित राज्य प्रोच्यते ॥

९ विद्वजनैः प्रजाशासनम् । श्रेष्टजन तंत्र राज्यं प्रोच्यते ॥

१० दीन धनाढय वर्गः सेनापति रुच्च कुल वैगः सर्वेषां जातिनां पञ्चानां वैगः तेषां सर्वैषां समस्तानां सम्मत्यानुसार शासनम् । प्रजा तंत्र राज्यं प्रोच्यते ॥

बल बुद्धि से प्रजावों को सत्य मार्ग में चलाने के लिये दश प्रकार से राज्य शासन है

१ समस्त प्रजाकी सम्मति के अनुसार मर्यादा जिन के मुजिब राज्य–व्यवस्था तंत्र राज्य कहाजाता है

२ प्रजामेसे सभ्य जन बुढे जगत के अनुभवी स्वार्थी नहीं दूरदर्शी धर्म न्याय और सत्य में जिन की प्रीति हो जगत हित के लिये पारमार्थिहो बुद्धिमान जगत के व्यवहार को जानने वाले हो इन सबकी सम्मति के

अनुसार प्रजावों मे स्वस्ति सुख शान्ति स्थिति सपत्ति वृद्धि और दीर्घायुसकी वृद्धि के वस्ते राजा राज्य करे वह धर्मराज्य कहाजाता है
३ सिर्फ मर्यादा के अनुसार राजा राज्य करता है वह मर्यादा राज्य कहा-जाता है
४ धनाढय और भूम्याधिपतियों से राज्य कतिपय जन तंत्र राज्य कहाजाता है
५ मुख्य मुख्य सभ्य योग्य सेना पतियों से राज्य सेना तंत्र राज्य कहाजाता है
६ राजा स्वयं और प्रजावों मे स सभ्य जन जगत के अनुभवी निस्स्वार्थी दूर दर्शी उत्साह से धर्म न्याय म तत्पर और सत्य से प्रीति वालों से राज्य राजा प्रजा एक मत्या राज्य कहाजाता है,
७ सिर्फ राजा की बुद्धि अनुसार राज्य राज तत्र राज्य कहाजाता है
८ राजा के भृत्य कृपा पात्र जनों से राज्य

अनियंत्रित राज्य कहा जाता है

९ विद्वानो से राज्य श्रेष्ठ जन तंत्र राज्य कहा ताहै

१० गरीब धनाढ्य वर्ग सेना पति उचकुल वर्ग सब जातियों के पंचों का वर्ग इन सब की समस्तों की सम्मातियों के अनुसार राज्य प्रजा तंत्र राज्य कहाता है॥

सत्वं रजस्तमश्चैव त्रिभिर्गुणैः त्रिगुणात्मिक मायया शुद्धो चेश्वरभावा तैश्च तेजः शक्तिः पुरुषार्थः तैः सुखशान्ति. स्थितिश्च तेषां प्रबन्धः॥

सम्राट् रूपमण्डपः तस्य स्तंभा माण्डालिका महाराजा राजानः सामन्ता ग्रामाधिपतय. भूम्याधिपतयः एतेषां मेक्यता मण्डपास्थातिः॥ सम्राट् रूपावितान तस्य रज्जव कीला माण्डालिका महराजा सामन्ता राजानः ग्रामा-

धिपतयः भूम्याधिपतयः एतेषामैक्यता स्थातु शक्नोति ॥ भूम्याधिपति ग्रामाधिपति राजासामन्ता महाराजा माण्डलिका राजानं सम्राट् रूप शरीरस्य नशाजालमन्त्राणि सर्वे नाळिका सर्वेषु शरीरेषु भोजनसार वा बल प्रेशयन्ति शरीरस्य स्थितिः ते विना विनश्यति बहुनि सख्यान्यास्थिभि प्रयुज्यनमैक्यभाव शरीरस्यस्थितिः पृथग्पृथग्भूत्वा विनश्यतिः सैवैक्यता विहीना मनुष्याणा गति ॥

भावार्थ

सत् रज तम तीनु गुणोंसे त्रिगुणीमाया से? शुद्ध उच्च ईश्वर वा मालकीभाव है फेर इनसे तेज शक्ति पुरुषार्थ है तिन से सुख शान्ति स्थिति और इन के प्रबन्ध हैं ॥

साम्राजः रूप एक मण्डप है सो थम्भों के आसरे है वे थम्भे मण्डलिक राजा महाराजा सामन्ता राजा ग्रामाधिपति भूम्याधिपति हैं॥ साम्राज रूप एक तम्बु है सो डोरियां चोबांरे आसरे है वे सारी चोवां डोरियां भूम्याधिपति आदि है॥ साम्राज रूप शरीर है सो आंतरा नशांजाल नाड़ों रे आसरे है वे भोजन के रसको खेंचकर सारे शरीरमें बल पोंचावे है जिनसे शरीर की स्थिति है वे भूम्याधिपति आदि हैं उनके विना शरीर नाश होजाता है॥ बहुतसी हाडियों के एक भाव से शरीर जुड़ाहै वही शरीर की स्थिति है इन सब विना और इन की एक्यता विना नाश हो जाता है॥ येही एक्यता विना की गति है॥

भूम्याधिपतियों के प्रकार

१ सम्भावेन न्यूनाधिकांश तया पृथिवी पतित्वं भूम्याधिपति ।

२ भूम्याधिपतीनांपति ग्रामाधिपति

३ पञ्चाशदनुमान ग्रामाधिपति माण्डलिका राजा ।

४ शदनुमान ग्रामाधिपति राजा ।

५ दश राज्ञामधिपति सामन्त ।

६ सहस्रोपरांत द्वे सहस्र पर्यन्त वा द्वा सामन्तानामधिपति राव ।

७ यदि राव प्रजानां बान्धव सम्बन्धय प्रीतिः संपादको रावल प्रोच्यते ।

८ द्वे सहस्रोपरांत त्रीणि सहस्र पर्यन्त ग्रामाधिपति महाराव ।

९ यदि महाराव प्रजाना बान्धव सम्बन्धय प्रीति सपादको महारावल प्रोच्यते।
१० दशसामन्तानामधिपतिमहाराजा
११ दश महाराज्ञामधिपति वा लक्ष ग्रामाधिपति महाराजाधिराज प्रोच्यते।
१२ दश महाराजाधिराज तेषामधिपति वा दश लक्ष ग्रामाधिपति राजेश्वरमहाराजाधिराज विख्यात
१३ दश राजेश्वर महाराजाधिराज वा कोटि ग्रामाधिपति साम्राज प्रो- च्यते।
१४ दश साम्राज्ञामधिपति चक्रवर्ति राजा समस्ते क्षिति मण्डले। एतेषा चतुर्दशाणा ध्वजा छत्रानि
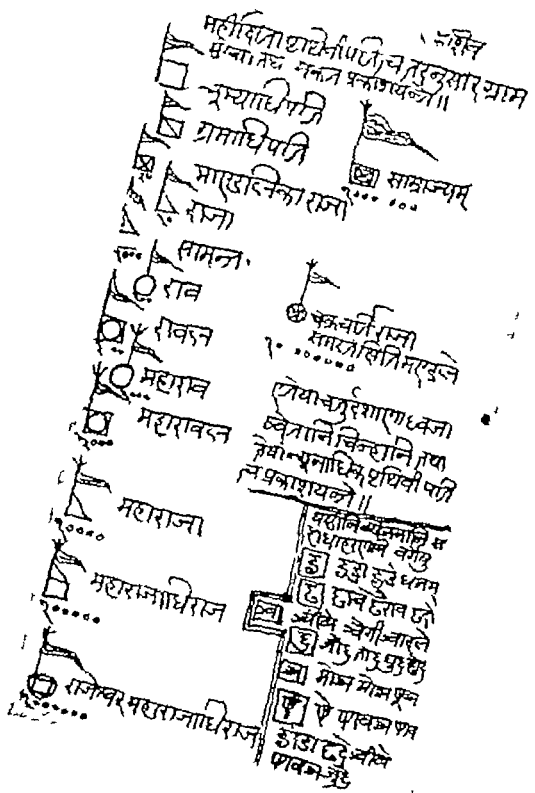
चिन्हानि । न्यूनाधिकांश पृथिवी पतित्वं प्रकाशयन्ते ग्राम संख्या तथैवच्च ॥

भावार्थ

१ सम्भाव से थोड़ी घणी पृथिवी की मालकी भूम्याधिपति है।
२ भूम्याधिपतियों का पति ग्रामाधिपत्ति है।
३ पचास अनुमान ग्रामाधिपति माण्डलि का राजा है।
४ सो अनुमान ग्रामाधिपति राजा है।
५ दश राजावों का आधिपति सामन्त है।
६ सहस्र से उपरान्त दो सहस्र पर्यन्त वा दो सामन्तों का अधिपति राव है।
७ यदि राव प्रजावों का बान्धव सम्बान्धियोंका प्रीति सम्पादक होतो रावल कहलाता है।
८ दो सहस्र से उपरान्त तीन सहस्र पर्यन्त ग्रामाधिपति महाराव होता है।

९ यदि महाराव प्रजावोंका बान्धव सबन्धियोंका प्रीति सम्पादक होतो महारावल कहलाताहै ।

१० दश सामन्तों का अधिपति वा दश सहस्र ग्रामों का अधिपति महाराजा होता है ।

११ दश महाराजावों का अधिपति वा लक्ष ग्रामों का अधिपति महाराजाधिराज कहा जाताहै

१२ दश महाराजाधिराज जिसके मातेत वा दश लक्ष ग्रामाधिपति राजेश्वर महाराजाधिराजहै

१३ दश राजेश्वर महाराजाधिराज जिसकी आज्ञा में है वा कोटि ग्रामाधिपति साम्राज कहाता है ।

१४ दश साम्राज जिसकी आज्ञामें है वह चक्रवर्ति राजा सब पृथिवि मण्डल का है इनकी ध्वजावों में इनके निशान प्रकाश है ओर फेर ग्रामों की सख्या भी ।

सग्राम के समय स्थल पवत नदी वा विषम (विकट) स्थानों में युक्ति जानना अवश्य है । रक्षित स्थानों को रोकना याने अपने आधि

कार में करले। शत्रु का पक्ष विपक्ष बल अबल देशकाल को भी जानना अवश्य है चार लोगोंके उत्साह से। निचे कहे हुवे नकशे से युद्ध आरम्भ करे जिसके प्रभाव से जगद्धिता धार्मिका सहस्र सैनिका योधा दश हजार दुराचारोंको जीत सकते हैं। जगत की हाय दुराशियों से विधर्मी दुराचारों की मति भी नाश होजाती है और दुर्मति अन्याय से इस भाव सारतत्वको नहीं जान सकते। शत्रुवों की सर्व सहायता अन्न जल अहार सामग्रय को रोक देना चाहिये। शत्रुवों पर सब दिशावों से याने चोतरफ से आक्रमण करें। सब धार्मिका योधा दिव्य अस्त्र शस्त्रों से अच्छी तरह सजे हुवे जगद्धितार्थ युद्धको करते है वो विजय पाते हैं। सब युद्धके भेद छीपे हुवे रखने चाहिये यदि दैव योग से अकस्मात कार्यों से जगद्धिता धार्मिका भी शत्रुवों से आक्रमण किये जाय और घिरजाय गढ वा अन्य स्थान में तो सब बलों से को मारते हुवे वा किसी तरह के उपाव

स्थान में आकरके शत्रुवों से छूटकर राजविद्यानु
सार युद्ध करता है सो विजय राजलक्ष्मीको पाता
है राजविद्या क्षत्रियों के लिये विजय राजलक्ष्मी
उनके घरों में सदा स्थिर रहती है ॥

विधर्म दुराचरणैः सहः संग्रामे
यथा सम्भव यथा शक्नोति शत्रुपक्ष भेद
न वा यथा युक्तेन सहताना पृथ ग्पृथ
क्करणम् वा । भिनात्मसात्करणम् (लो
भराजित्सुवर्णादि) शत्रु स्व, पक्षान्कृ
व्यवहारेण वर्त्तयति त स्वकरणम् व
पृथग्करणम् वैरीवां प्रस्तारम् तमभ्यु
त्थानम् तथैव स्वपक्षेषु सानुभूति पर
स्पर प्रीतिरैक्यता सहायता वीरशब्दै
वाक्यैरुत्तेजित्करणमुत्साह सम्वर्धनम्

(भावार्थ)

विधर्मी दुराचरणों के साथ संग्राम में ज

तक होसके शत्रुपक्ष को भेदन करणा वा युक्तिमे एकहुए हुवोंको जुदे जुदे करदेना विखेरदेना वा सोने चांदी के लोभसे अपणेसाथ करके लडादेना वा शत्र अपणे पक्षवालोंको क्रुर व्यवहार से वर्त्तता हो उनको अपणा करलेना वा जुदा करदेना विखेरदेना वा शत्रु जिनकेसात वेर ईर्षा रखताहो उनको अलग करना इसी तरह अपणे पक्षमें सानुभूति प्रगट करना परस्पर प्रीतिरैक्यता सहायता वीरशब्द वाक्यों से अपणे पक्षको उत्तेजित करना और उत्साह बढाना ॥

द्वादश कोषे भाषा परिवर्तनम्

देशान्तरानुसार प्राकृत् भाषापु स्वरा २९ तेषु मूलस्वरा तो ३ व्यञ्जनानि३९ तेषुक यथा कर्म शुद्धार्यंत । ख॰ खण्डे खण्डे पूर्णम् । गीणाज्ञानं प्राप्तव्यमवश्य मेव । घ- घनघोर घटाऽस्थिरम् । ङ-कङ्कंण विवाहे रणे शोभितं । च॰ चोरणात॰

साहेण सर्वं वृत्तान्तं परिज्ञानम् । छ छायाप्रजोपरी । ज- जोपयेत्कर्माणि झ- झुप्यापि रक्षणम् । ञ- जञाल निर्वाण । ट-टीहिदल पश्येत् । ठ-ठोर मवलम्बनम् । ड-डाणा । ढ ढगशुद्धा येत् । ण ठण्डक् । त तिमिर म्ना दुख नाशाय ज्ञानम् । थ थकित्स्वैपक्षमहाय द दान सुपात्रे । ध धनेन दीनजनाना रक्षा । न नवानिधि । प प्रजा पालनम् फ फल पश्येत् । ब बल पश्येत् । भ- भोजन स्वाधिकारे । म मान प्रतिष्ठा रक्षा न्यायेनसहः । य यशोधन । र रक्षा न्याय राज्य । ल लोकसंग्रह राज्य । व विविध विद्याना प्रचार । स स्वार्थसुखं साम्यावस्था । ष षहधा न्याय । श शान्ति. न्यायेन । ह हि

रंन्यं विनश्यति लोभालिप्सया ॥ षष्टा
नि वर्णानि वर्गेषु पठ्यते ॥

यावद्देवह्याधिक प्रजाश्चाधिकसन्मार्गे
प्रक्तु शक्नोति तावद्देह्याधि कुच्चाधिपतिः
न संशयः ॥

(भाषार्थ)

जितनी अधिक प्रजाको अधिक सन्मार्ग में
चला सकता है उतना ही अधिक उच्च अधिपति
होता है ॥

रक्षितस्थान्प्राकृन्मनुषकृतश्चेति ॥

(भाषार्थ)

रक्षितस्थान प्राकृत याने स्वाभाविक और
मनुष्यकृत होते है ॥

प्रारम्भ स्वेष्टेप्रमणा सायोगमाया
प्रसन्नाक्षत्रियान् श्रद्धयान्वितान्ददाति
योगः माययास्थितिश्च ॥ योगक्षात्रहृदे

प्रकाशयति शुद्धोचेश्वरभावा १ यथा योगयुक्ति २ सयमः ३ शौर्य ४ तेज ५ जगद्धितार्थं पारमार्थिक दाने समुत्सा हः ६शुद्धविचारशक्तिः धर्मेणरक्षा ७ न्यायश्चेति ॥ ८ ॥ एते सप्तैः स्वाँस्त सुखशान्तिः स्थितिः सम्पत्ति वृद्धिरा युश्च सम्भूघन ॥ यथायोगयुक्तिः प्रयो जनयोगः ॥

(भावार्थ)

प्रारम्भ में (सरुमें) अपणे हृदमें प्रेम रखने से वा योगमाया प्रसन्न होती हुई श्रद्धावान्क्षत्रियों को देती है योग और माया से स्थिति (परम्परा वशका चलना) योग क्षत्रियों के हृदमें प्रकाश करता है शुद्धभाव उचभाव और मालकीभाव १ यथा योगयुक्त याने जैसीचाहिये वैसी तजवीज २ अपने आपेको वशमें रखना याने अपने आधीन

में रखना ३ वीरता ४ तेज ५ जगतहितार्थ पार-
मार्थिक दान में उत्साह ६ शुद्धविचारशक्ति ७
धर्म से रक्षा न्याय करना ॥ ८ ॥ इन बातों से
रोग रहित रहना १ सुख २ शान्ति ३ स्थिति ४
सम्पत्ति ५ वृद्धि ६ और आयुष बढ़ना सिखलाते
हैं ॥ ७८ ॥ यथायोग युक्ति काम में लाना योग है

शुद्धभावेन प्रतिदिनशस्त्रास्त्राणा-
मभ्यासः सएवशक्तिः तयारक्षा तयाच
सुखम् उच्चभावेन सर्वोपरीविद्याभ्यास
तेन सुमति तयान्यायः न्यायेनशक्तिः
सदा ईश्वरभावेन पुरुषार्थ-शुद्धकृया
सर्ववृत्तान्तपरिज्ञानम् जगद्धितार्थं पार-
मार्थिक दाने समुत्साहः सएव स्थितिः
शुद्धोचेश्वरभाव सरूप त्रिशूल त्रैलो-
क्यं जयतुं शक्नोति ॥

(भाषार्थ)

शुद्धभावसे प्रतिदिन शस्त्रअस्त्रों का अभ्यास करना वही शक्ति याने बल है बल से रक्षा जिस से सुख है । उच्चभाव से सर्वोपरी विद्याका अभ्यास जिस से सुमति (अच्छी बुद्धि) जिस से न्याय और न्याय से शान्ति सदा ईश्वर याने मालकी भाव से पुरुषार्थ—शुद्धक्रिया सब वृत्तान्त को जानना जगद्धितार्थ पारमार्थिक दान में उत्साह वही स्थिति है । शुद्ध उच्च ईश्वरभाव सरूप त्रिशूल तीनु लोक जीतशक्ता है ॥

स्वार्थं सुखालिसप्याऽज्ञतया कर्त-व्यः कार्येषु सैथिल्यं चकरोति पुरुषार्थं ज्यज्यंति विषय सुखेषु सज्जान्ति यथा ज्ञानविहीना पषू गर्दभ बलहीनं भूत्वा-ऽधोपताति तमन्य पशवः पक्षयः वितुद्य भक्षयन्ति तथैव पुरुपार्थहीना पुरु-षाणांगतिः ॥

स्वजातेः बान्धवः सवन्धय भूम्या-धिपतयः ग्रामाधिपतयः सामन्ता विना विना हस्तौ। तथैव प्राज्ञा पणिता बुधा वृधा जगदनुभावुका विना विना पादो।

शुद्ध बलीष्ट भोजनं सामग्रय सुख प्राप्ति परंतु व्यायाम परिश्रमाभ्यासं विना उदर प्रसराति चासमर्थ भवाति॥

बल बुद्धिः भ्यां गलीष्ट मर्यादा राज्ये यद्यज्ञतयाऽल्प बलेन मर्यादां भंग

करोति,तदा दुर्गतिराप्नोति,यथा समुद्र-जले,मग्न,भवति-विनश्यति-॥

भावार्थ

स्वार्थ-सुख में-अधिक-पड़कर अज्ञानता से करने के कामों में ढीलापन्न करता है और-पुरुषार्थ को छोड़ता है और विषय सुखों में पड़ता है। जैसे बिन ज्ञान का पशू गढ़ा बल हीन हो कर नीचे पड़ जाता है तो उसको दूसरे पशूपक्षी खोद कर खा जाते हैं। इसी तरह पुरुषार्थहीन पुरुषों की भी गति होता है।

अपनी जाति,के बान्धव सम्बन्धी भूम्याधिपति ग्रामाधिपति सामन्त बिना २ हाथों कैसा है। इसी तरह अगम बुद्धि वाले पण्डित बुद्धिमान वृषाजिन को जगत का अनुभव पूरा हो इनके बिना बिना पैरों कैसा है।

शुद्ध बलिष्ट भोजन सामग्री सुख की प्राप्ति है परन्तु व्यायाम (कसरत) और मेहनत के अभ्यास बिना पेट बढ़कर असमर्थ हो जाता है।

अज्ञाः सुखलिप्सया कार्येषु शैथिल्य
कुर्वन्ति पुरुषार्थं त्यजन्ति विषय सुखेषु सज्जन्ति
यथा ज्ञानविहीनाः पशु गर्दभ' गज ऊष्ट्र व्याघ्रो
पतन्ति अन्य पशवः पक्षिणः विलुप्य नश्यन्ति
उपदेश १

करोति.तदा दुर्गतिसम्प्रोति.यथा समुद्र-जले.मग्न.भवति विनश्यति ॥

भावार्थ-

स्वार्थ-सुख में अधिक-पड़कर अज्ञानता-से करने के कामों में ढीलापन करता है और-पुरुषार्थ को छोड़ता है और विषय सुखों में पड़ता है। जैसे विन ज्ञान का पशू गढ्ढा पड हीन हो कर नीचे पड जाता है तो उसको दुसरे पशुपक्षी तोड कर खा जाते हैं। इसी तरह पुरुषार्थहीन पुरुषों की भी गति होवा है।

अपनी जाति के बान्धव सम्बन्धी भूम्याधिपति,ग्रामाधिपति सामन्त बिना २-हाथों कैसा है। इसी तरह अगम बुद्धि वाले पण्डित बुद्धिमान वृषाजिन को जगत का अनुभव पूरा हो इनके बिना बिना पैरों कैसा है।

शुद्ध बलिष्ट भोजन सामग्री सुख की प्राप्ति है परन्तु व्यायाम (कसरत) और मेहनत के अभ्यास बिना पेट बढ़कर असमर्थ हो जाता है।

बल बुद्धि से बलवान मर्यादा राज्य में जो अज्ञानता से अल्प (थोड़े) बल के साथ मर्यादा को भंग करता है तो दुर्गति घेर लेती है जैसे समुद्र जल में डूबना और नाश होना।

वादि प्रतिवाद्योभो पक्षयोशांतिः नस्तः वाधिकाधिक पुनर्विचारार्थाक्षिपा बोभूयन्ते न्यायाधीशस्यायोग्यता विद्य ते प्रत्येक राज्यकर्मचारी स्वे स्वे कार्ये-षुरता तेभ्यः राज्यहित्प्रजाहितभवतः प्रजा विलाप रहिता वर्धनम्। राजा प्रति शांति प्रजानांपश्चाक्षिप कर्मचारीभ्यः क्षमा कुर्यात्तत्पश्चात्कठिंडावश्यमेव॥

भावार्थ

वादि प्रति वादि दोनु पक्ष की शान्ति नहीं है वा अधिकाधिक अपीले होती रहें तो न्याया-धीशों की अयोग्यता समझी जाती है प्रत्येक

बल बुद्धि से बलवान मर्यादा राज्य में जो अज्ञानता से अल्प (थोड़े) बल के साथ मर्यादा को भंग करता है तो दुर्गति घेर लेती है जैसे समुद्र जल में डूबना और नाश होना ।

वादि प्रतिवाद्योभो पक्षयोर्शांतिः नस्तः वाधिकाधिक पुनर्विचारार्थाक्षिपा वोभूयन्ते न्यायाधीशस्यायोग्यता विद्य ते प्रत्येक राज्यकर्मचारी स्वे स्वे कार्ये-षुरता तेभ्यः राज्यहितप्रजाहितभवतः प्रजा विलाप रहिता वर्धनम् । राजा प्रति शांति प्रजानांपच्चाक्षिप्त कर्मचारिभ्यः क्षमा कुर्यात्तत्पश्चात्कठिंदडावश्यमेव ॥

भावार्थ

वादि प्रति वादि दोनु पक्ष की शान्ति नहीं है वा अधिकाधिक अपीले होती रहें तो न्याया-धीशों की आयोग्यता समझी जाती है प्रत्येक

बल बुद्धि से बलवान मर्यादा राज्य में जो अज्ञानता से अल्प (थोड़े) बल के साथ मर्यादा को भंग करता है तो दुर्गति घेर लेती है जैसे समुद्र जल में डूबना और नाश होना।

वादि प्रतिवाद्योभो पक्षयोर्शांतिः नस्तः बाधिकाधिक पुनर्विचारार्थाक्षिपा बोभूयन्ते न्यायाधीशस्यायोग्यता विद्य ते प्रत्येक राज्यकर्मचारी स्वे स्वे कार्ये-षुरता तेभ्यः राज्यहितप्रजाहितभवतः प्रजा विलाप रहिता वर्धनम्। राजा प्रति शांति प्रजानांपश्चाक्षिपा कर्मचारीभ्यः क्षमा कुर्यात्तत्पश्चात्कठिदंडावश्यमेव ॥

भावार्थ

वादि प्रति वादि दोनु पक्ष की शान्ति नहीं है वा अधिकाधिक अपीले होती रहें तो न्याया· धीशों की आयोग्यता समझी जाती है प्रत्येक

बल बुद्धि से बलवान मर्यादा राज्य में जो अज्ञानता से अल्प (थोड़े) बल के साथ मर्यादा को भंग करता है तो दुर्गति घेर लेती है जैसे समुद्र जल में डूबना और नाश होना ।

वादि प्रतिवाद्योभो पक्षयोशांतिः नस्तः वाधिकाधिक पुनर्विचारार्थाक्षिपा वोभूयन्ते न्यायाधीशस्यायोग्यता विद्यते प्रत्येक राज्यकर्मचारी स्वे स्वे कार्ये-षुरता तेभ्यः राज्यहितप्रजाहितभवतः प्रजा विलाप रहिता वर्धनम् । राजा प्रति शांति प्रजानांपचाक्षिणा कर्मचारीभ्यः क्षमा कुर्यात्तत्पश्चात्कठिंडावरुधमेव ॥

भाषार्थ

वादि प्रति वादि दोनु पक्ष की शान्ति नहीं है वा अधिकाधिक अपीले होती रहें तो न्याया· धीशों की अयोग्यता समझी जाती है प्रत्येक

कर्मचारी अपने अपने कार्यों में प्रीति रखते हुवे जिनसे राजहित, प्रजाहित होवे और प्रजा विलाप रहित तरकी क योग्य है। राजा प्रति मदहरूने प्रजाओं की पाच सिकायते कर्मचारियों क लिये माफ करने योग्य है इससे उपरांत कठिन दण्ड अवश्य ही देवे।

राजा व्यक्तिगत सेवकातिरिक्ता सर्वे राज्यकर्मचारय' प्रजा सेवकोच्यते ते सर्वे प्रजासु सुखशान्तिः स्थित्यथम् तथैव सेना रक्षाथम् यदि वैकल्पमापतेत् तर्हि तऽयोग्या सत्त्व विसृजनिया तेपा स्थाने ऽन्या सुयोग्या नियोक्तव्या राज्ञा परमोधम वाऽन्यथा राज्यापरा- त्रिकार प्रजायते॥

भावार्थ

राजा क निज सेवकों के सिवाय राज कर्म चारी प्रजा सेवक कहे जाते है,उ सब प्रजा के

सुख शान्तिः स्थिति के लिये है इसी तरह सेना रक्षा के लिये यदि सुख शान्ति स्थिति में फरक पड़े तो अयोग्यों को दूर करे। और उनकी जगह दूसरे सुयोग्य रखना राजाओं का परम धर्म है। अन्यथा राज्य दूसरों के अधिकार में चला जाता है।

भावार्थ

प्रजासु प्रतिशत्येको धर्मोपदेशकः एको वैद्य त्रय शिल्पकार्येषु चतुर विद- यज्ञ विदुषावरोपाशकाप्रति शति दश क्षत्रिया रक्षार्थम् पच परिचारिया क्षुद्रा सर्वेऽन्न शाकौषध्यः फलान्यादि कृषी वाणिज्य गोरक्ष कार्येषु चत्वारशत षट- त्रिंशगदवश्यकोपयोग्याकरज धातु काष्ट पाषाण मृतिका ऽस्थि चरम कपास लोम वल्कलकेशादि विविधकार्यार्थम् ॥

कर्मचारी अपने अपने कार्यों में प्रीति रखते हुवे जिनसे राजहित, प्रजाहित होवे और प्रजा विलाप रहित तरक्की क योग्य है। राजा प्रति महकमे प्रजाओं की पाच सिकायतें कर्मचारियों के लिये माफ करने योग्य है इससे उपरांत कठिन दण्ड अवश्य ही देवे।

राजा व्यक्तिगत सेवकातिरिक्ता सर्वे राज्यकर्मचारय' प्रजा सेवकोच्यते ते सर्वे प्रजासु सुखशान्तिः स्थित्यथम् तथैव सेना रक्षाथम् यदि वैकल्पमापेतत् तर्हि तऽयोग्या सख्य विसृजानियं तेषा स्थाने ऽन्या सुयोग्या नियोक्तव्या राज्ञा परमोधर्म वाऽन्यथा राज्यापराधिकार प्रजायते ॥

भावार्थ

राजा क निज सेवकों के सिवाय राज कर्मचारी प्रजा सेवक कहे जाते है, वे सब प्रजा के

चतुर्णांसभा सदां समापत्त्यैश्च राज्ञो वा सन्निद्यौ परीक्षा ॥२॥ कोषेण लक्ष विध्यत वाऽशिना एक वारेण कवच छिद्यते ॥ ३ ॥ स्वयं जातिः परब्रह्मात्मकं तेजः तत्व ज्ञानार्थं दर्शनमध्यात्मि ज्ञानं दिव्यम् ॥ ४ ॥ दानेशक्तिः प्रवर्तिः यशोधनः ॥ ५ ॥ अधिको सन्तानोत्पत्ति ॥ ॥ वीरत्वेन धेनुकादि क्षुद्रशत्रुसिंह हननम् ॥ ७ ॥ एतेषु सर्वेषु परिक्षापूर्वं योग्यताधिक्य सम्बन्ध सामीप्यं च शान्ते शुद्धसदाचारे दृढचित्तकृतज्ञच दायमधिकोभागः नतु हानत्व दुराचारे दुर्जने कुधे नास्तिकऽधिकोभागः स योग्यतापरीक्षणाद्या न्यूनाधिकयोग्य सार दातव्या ॥ दायविभागे न्याये क्षतयावश्यमेव विपरीताचरतोस्व

प्रजाओं में प्रति सेकड़े एक धर्म उपदेशक, एक वैद्य तीन शिल्प कार्यों में, चार वेद, यज्ञ जानने वाले ईश्वर उपासक, प्रति सइकड़े दश क्षात्रिय रक्षा के वास्ते, पांच क्षुद्र हुकम मुजिब काम चाकरी करने वाले, सब अन्न शाक-औष धालय आदि खेती वाणिज्य गो रक्षा कार्यों में चालीस, छतीस जगत के अवश्य उपयोगी खान धातु, लकड़ी, पत्थर, मिट्टी, हाड, खाल, कपास लोम, रुवां, बल्कल, केश आदि विविध कार्यों के लिये ।

क्षत्रियाणामुदाय विभागे विवादे समुत्पन्ने भूमि विभजने न्यायोऽष्टधा प्रोच्यते । सामन्ताना प्रजागणेषु सभ्य व्यक्तिजनाना सम्मतिरन्विष्या अधि कायां सम्मतो न्याय परि समाप्ति ॥१॥ वादि प्रति वादिना राजविद्या ज्ञातृत्व स्य तदनुसार बल बुद्धोयोगयतायाश्च

चतुर्णा सभा सदां सभापत्यैश्च राज्ञो वा सन्निधौ परीक्षा ॥२॥ क्रोषेण लक्ष विध्यत वाऽशिना एक वारेण कवच छिद्यते ॥ ३ ॥ स्वयं ज्योतिः परब्रह्मात्मकं तेजः तत्व ज्ञानार्थं दर्शनमध्यात्म ज्ञानं दिव्यम् ॥ ४ ॥ दानेशक्तिः प्रवर्तिः यशोधनः ॥ ५ ॥ अधिको सन्तानोत्पत्ति ॥ ॥ वीरत्वेन धेनुकादि क्षुद्रशस्त्रै सिंह हननम् ॥ ७ ॥ एतेषु सर्वेषु परिक्षापूर्व्व· योग्यताधिक्य सम्बन्ध सामर्थ्यं च शान्ते शुद्धसदाचारे दृढचित्तकृतज्ञ च दातव्यमधिकोभागः नतु हानत्व दुराचारे दुष्ट दुर्जने क्रुधे नास्तिकऽधिकोभागः स र्वैर्योग्यतापरीक्षणाया न्यूनाधिकयोग्य तानुसार दातव्या ॥ दायविभागे न्याये निष्पक्षतयाव ेव विपरीताचरतोस्

हस्ता न्यायो निर्गत्या पर हस्ते प्रजा यते तेन लघुतां प्राप्यते ॥

वीर सुभट क्षत्रिभ्यः बान्धव सबन्धीभ्यः भूमिः प्रदान, राज्य हास नेति, पर वृधि प्राप्यते राज्य मूलान्य धिक्य भवन्ति । येन केन राज्या धिकारे ऽधिकाधिक बान्धव सबन्धयः वीर सुभट क्षत्रिय स राज्य सुदृढता प्राप्यते । योग्यतानुसार दाय विभाग न्यूनाधिक प्रदीयते । राजविद्यानुसरण त्यागेन यथन्यायेन राज्य हसते न वीर सुभटा भूमिः विभाग प्रदाने । यथा प्रकृति स्वभाव नियमाद्विरुद्ध वृधि भवति नाधिक. सतति राधुभ्यश्चापरे- भ्य. सताशः भूमेचर सपत शरीरयात्रा

नुसारः। मातुर्विभाग तस्यापोषणादारेभ्यः चर संपते विशांश पर्यंतमापिदात व्यम् द्वितीय मातुतस्या पोषणादारेभ्य शतांशः तृतीया मातुतस्या पोषणादारेभ्यः द्व शतांशः चतुर्थ मातुः तस्या पोषणादारेभ्यः त्रि शतांश तत्पश्चात् क्रमेश न्यून तरांशः। मातुः सुता स्व सुताभूम विभाग पोषणार्थम् ग्रहमादिषु चर संपतिषु पोषणादारेभ्याधांश पर्यन्तम्। मातुः सुत स्व सुता तथा तयो संतति स्व संततिरेव वर्त्तयते विभागे। स्व पुत्राभावे मातु सुता स्व सुता वा तयो संततिरपि स्वेव माननायः सर्वे विभागे दत्तक पुत्रेव। सिमा चिन्हं नान्यथा कुर्यात्॥ विद्याज्ञानानां संग्रहज्ञानसमुच्चयः स द्विधा मनुजमुच्चपदं

सर्वे सुख प्रदायिनी तथैवासाद्विद्या पातयाति नर्केऽशुचो ॥

स्वाधीन परिपूर्ण सुखसहित पोषणम् । सर्वे कार्यास्वाधिकारी स्वेच्छाचारी । विचार शक्तिः तत्वज्ञानार्थ दर्शनम् । मनचित्तबुद्धहकारेण । ब्रू दर्शन तर्क वितर्कम् प्रमाणेन वस्तु परीक्षणम् । पारि प्रश्नम । विचार शक्ति संप्रसारण समघा शुद्धास्तिक भावे न सह ॥ १ ॥ उच्च पारमार्थिक भावेन सह ॥ २ ॥ रक्षान्याय ईश्वर भावेन सह ॥ ३ ॥ पुण्य घर्मेश्वराराधनमुपाशन प्रबन्ध भावेन सह ॥४॥ दया करुणाऽहिंसा भावेन सह ॥ ५ ॥ स्वार्थ सुख भोगेश्वर्य मोहाधिकतापु दष्टा योमावेन सह ॥ ३ ॥ शुद्धोच्चश्वर भावेन सुप्र स्वास्ति सुख शान्तिः

स्थितिः संपाति वृधि भूति गायुश्च वृध्य-र्थम्। विचारानंताऽव्ययश्च तान्सर्वान् अवश्यकतानुसार सुमति बलेन संप्रसा रणम्। निरर्थक न किञ्चिदपि विधेयम् सा विचार शक्तिः महान्बलम्। स्वार्थ रूपा सुरं वा दुर्मतिः रूप पिशाच नि-र्जित्वा सर्वान् साधयाति ना ऽन्यथा ते उभौ बलेन प्रेषयतः नियम्॥

भावार्थ

क्षत्रियों के भूदाय विभाग में विवाद (झगड़ा) पैदा होणे में भूमि का भाग देण में न्याय आठ प्रकार से कहा जाता है। सामन्तों की प्रजागणों में सभ्य व्यक्ति जनों की सम्मति हो अधिक सम्मति (राय) थां से न्याय समाप्त हो वादी प्रति वादीयों की राज विद्या ज्ञान की जिस के अनुसार बल बुद्धियां की योग्यता से चार सभा

सदा की और सभापतियां से राजा के सामने परिक्षा हो। एक तोप स निसान को बेध देना वा तरवार के एक वार स कबंठ को छेद देना। स्वय (अपणे आप) जोति पर ब्रह्म का तेज ज्ञान के सार को देखना और अपणी आत्मा का दिव्य ज्ञान। ४ दान में शक्तिप्रर्शिः यशो-धनः यशक्षिन है ५ सन्तानों की अधिकता ६-वीरता से आछे शस्त्र स सिंह को मारना ७ इन सब में परीक्षा में उत्तो योग्यता अधिक सम्बन्ध का पात्र होना शान्त शुद्ध सदाचार में दृढ चित में कृतज्ञतामे दन योग्य है अधिक भाग परत तत्वों से हीन को दुराचारी को दुष्ट दुर्जन क्रोधी को और नास्तिक को अधिक न दे। सब योगता की परीक्षा करनी चाहिये कम जादा योग्यता नुसार देना चाहिये। दाये के विभाग में न्याय में निर्पक्षता अवश्य होनी चाहिये विपरीत आचरण से न्याय हाथ से निकले जाता है ओ दुसरों के हाथ मे चला जाता

है जिससे लघुता (छोटा पन) पांति आता है।

वीर सुभट क्षत्रियां के लिये बान्धव सबन्धीयां के लिये भूमी देने से राज्य घटता नही है परंत वृधि को पाता है राज्य की जड़ अधिक होती है ।

जिस किसी राज्य के अधिकार में अधिक अधिक बान्धवों सबन्धी वीर सुभट क्षत्रिय है वह राज्य अछी दृढता को पाता है योग्यतानुसार दाय विभाग कम जादा दीया जाता है राजविद्या के अनुसरण को त्याग ने से अन्याय से राज्य घटता है परंत वीर सुभटों को भूमि विभाग देने से नही जैसे प्रकृति स्वभाव नियम के विरुध्य अधिक वृधि नही होती है। संतति बान्धवों के लिये आधे से सो अंश तक भूमि विभाग और चर संपत्ति मे से शरीर यात्रानुसार । माता के लिये चर संपत्ति मे से उसके पोषण से लकर बीसवां अंश तक देना चाहिये।

द्वितिय माता के लिये उसके पोषण से लेकर सो अश तक। तीसरी माता के लिये उसके पोषण से लेकर दोसो अश तक। चोथी माता उसके पोषण से लेकर तीन सो अश तक। तिसके उपरांत कम कम। माता की बेटी अपणी बेटी भूमि मे भाग पोषण के लिये घरादि मे चर सपत्ति मे पोषण से आधे अश तक। माता की बेटी अपणी बेटी तथा इन दोनु को सतति विभाग देने में अपुनी सतति की तरह वर्ते जाते है। अपणे पुत्र अभाव से माता की बेटी अपणी बेटी और इन दोनु की सतति भी अपणी सतति की तरह मानने याग्य है सुव विभाग देने में गोद लिये हुवे पुत्र की तरह॥ सिम-चिन्ह - को न हटाना चाहिये। विद्या ज्ञान का सग्रह है ज्ञान को समुच्चय सद्विद्या मनुष्य को उच्च पद पोचाती है और सब सुख देने वाली है इसी तरह असद्विद्या नर्क में गरती है॥ स्वाधीन-परिपूर्ण सुख सहित पोषण करना। सब काम अपने अधिकार

में हो। अपनी इच्छा नुसार चलना। विचार शक्तिः— ज्ञान के सार को देखना। मन चित्त बुद्धि अहंकार से दूर देखना याने विचारणा। तर्क वितर्क करना। प्रमाण से वस्तु की परिक्षा करना। प्रश्नोतर करना। विचार शक्तिः संप्रसारणम् सात तरह से—शुद्ध आस्तिक भाव के साथ १ उच्च परमार्थिक भाव के साथ २ रक्षा न्याय मालकी भाव के साथ ३ पुण्य धर्म ईश्वराराधन मुपाशनम् प्रबन्ध भाव के साथ ४ दया करुणा अहिंसा भाव के साथ ५ स्वार्थ सुख भोगेश्वर्य मोह की अधिक जीवों में दुष्ट नीच भाव के साथ ६ शुद्ध उच्च मालकी भाव से सृष्टि के सुख शान्ति स्थिति अरोग्यता संपति वृधि धन आयुस की वृधि के वास्ते। विचार अनन्त हमेश है उनको सबको आवश्यक्ता नुसार अच्छी बुद्धि बल से विस्तार करना चाहिये निरर्थक कुछ भी न करना चाहिये वो विचार शक्ति महां बल है।

स्वार्थ रूप असुर और दुर्मति रूप पिशाचनी को

॥ ॐ शिव ॥

राजविद्या

शब्दार्थ बोध।

थम शिक्षा-राजविद्या शब्दानां स्पष्टार्थ प्रश्नोत्तरी ज्ञानम्।

१-कोधर्मः

प्रकृति नियमातिरिक्तताया: सर्व शक्तिमत्या: संप्रेरिकी मायाया नियमाद्विरुद्धं नाल्पमपि विधेयम्। सा शुद्ध धारणा यया सृष्टेर्सुखशान्ति स्थिति प्रबन्धानां स्थैर्यं भवेत स एव धर्मः

भावार्थ

प्रकृति नियम के सिवाय सर्व शक्तिमति प्रेरणा करनेवाली माया के नियम के विरुद्ध कोई भी धारणा न करनी चाहिये और ऐसी द्धा

धारणा जिससे सृष्टि के सुख शान्ति स्थिति और प्रबन्धों की स्थिरता बनी रहे वही धर्म है ॥

२—राज्यंकिम्

धर्मेण सहाज्ञाफल साऽपि साम दान भेद दण्डैः सहः परिवर्तनम् ।

भावार्थ

राज्यस्याहै? धर्म के साथ आज्ञा का चलना वा साम दान भेद और दण्ड के साथ हो ॥

३—केयंविद्येति.

पदार्थाना याथा तथ्यज्ञानमिति विद्या चेच्छाकृति श्चातो विद्या सर्वोपरी यथार्थ ज्ञानमेव ही महाँ बलम् ॥

भावार्थ

येविद्याक्याहै? पदार्थों का यथा योग्य ज्ञान इसे इच्छा कीया फल मिल सक्ता है इसे ये विद्या सर्वोपरि है जेसा चाहिये वेसा ज्ञान होना महान फल है ॥

४--किंबलम्.

कर्तुंशक्नोति यत्कार्यं येन तद्बल-मुच्यते ॥

भावार्थ

जिस्से जो काम कीया जाय वह बल है ॥

५--तप.

परिश्रमेण कार्यं संपादनमेव तप इति प्रोच्यते सर्वं तेजोरूपत्वम् वा शरीर वाङ मनसापरिश्रमं करोतीतितपो-च्यते ॥ शस्त्रास्त्राणामभ्यासो महाँतपः ॥

भाषार्थ

मेहनत के साथ काम करना ही तप कहला-ता है वह तेजरूप है वा शरीर बाणी और मन से परिश्रम करना तप है और अस्त्र शस्त्रों का अभ्यास महाँ तप है ॥

६—तेज.

आलस्य रहितः वास्वस्तेर्विनाय क्रियते सतेजः प्रकाशरूपत्वम्।

भावार्थ

आलस्य रहित वा विना सुस्ती के करना वह तेज है और ये प्रकाश वान है॥

७—त्याग.

दुर्लोम पदार्थादिभ्यो निकृष्ट कुकृत्यानां परिहरणमेव त्याग।

भावार्थ

हरेक वस्तुवों में खोटा लोभ और निकृष्ट खोटे कामों को छोड़ना ही त्याग है॥

८—सत्सङ्गति.

काम क्रोध लोभ मोहाकाराणामधिक्य निरुन्धाना ताच समावेन वशी-

कुर्वंति या निश्चयात्मिका बुद्धि विचार शक्ति नामिका पर पर्य्य सोच्च संगतिर्वा सत्संगतिः जगदनुभावुकः दृढास्तिकः स्वार्थ निस्पृहः दूर दर्शीः शुचिः न्यायः सत्यरतः कुलीनः शुभाचाराभियोग रहिताः ईदृशा जनानां संगति सत्संगति प्रोच्यते।

भाषार्थ

काम क्रोध लोभ मोह अहंकारों की अधिक्ता को रोक्ता हुवा और उनको संभाव से अपने वशमें रखता हुवा वा निश्चयात्मिका विचार शक्तियों की उच्च वा सत्सङ्गति जगत्के कामों से तजरुबेकार पक्का आस्तिक स्वार्थ रहित दूरदर्शी पवित्र जो न्याय और सत्य में जिनकी रति हो कुलीन हो जिनके चलन अच्छे हो और जिनकी कोइ सीकायत न हो ऐसों की सङ्गति सत्सङ्गति कही जाती है।

९—सेना.

वीर सुभट जितेन्द्रिय प्रतिदिने परिश्रमेऽभ्यासे चास्त्र शस्त्राणामभ्यासे परिपूर्णः सभ्यता शिक्षिता-बलान्विता सज्जिता पुरुषाणां समूह सेना प्रोच्यते।

भावार्थ

सेना—वीर सुभट जितेन्द्रिय और हमेशा महनत और अस्त्र शस्त्रों के अभ्यास में परिपूर्ण हो और सभ्य शिक्षित और बलवान् सजे हुवे पुरुषों का समूह सेना कहलाता है।

१०—शुद्धाधारणा.

सर्वे परस्पर सुखेन प्रवर्त्तते सैव शुद्धाधारणा साऽपि विघ्न रहिताश्च शान्तिः।

भावार्थ

शुद्धाधारणा—सब आपस में सुख से रहने प्रवर्त्ती रखें येही शुद्धाधारणा कहलाती है।

शुद्धाधारणा जो विघ्न रहित है सो ही शान्ति है।

११—शुद्धभावना.

सर्वै शुद्धाचित्तेन जगाद्धितार्थं पारमार्थिक विचारः शुद्धभावनाः।

भाषार्थ

सर्वै शुद्ध चित्त से जगत् के हित के लिये पारमार्थिक विचार शुद्धभावना कहलाती है।

१२—सुख.

यथेष्टं स्वानुकूल पदार्थानां प्राप्ति सुखम् वा तदतिरिक्तं दुःखम्।

भाषार्थ

इच्छा कीया हुवा वा अपने अनुकूल पदार्थों की प्राप्ति सुख है और इसे विरुद्ध दुःख कहलाता है।

१३—लोभ.

अज्ञतया : सुखाभिलाषः

भावार्थ

अज्ञान्ता से जादे–करके सुखकी अभिला
सा करना लोभ है।

१४—सत्यलोभ.

यशसेऽति गृध्नुता सत्यलोभः।

भावार्थ

सत्यलोभ–यश के लिये लोभ करना सत्य
लोभ है।

द्वितीय शिक्षाः

स्वार्थ सुखस्य संभावादधिक्ता
सर्वेशुभं सर्वदा स्थितिं सर्वस्वंच विना-
शकानि तौ प्रबल शत्रू परिहत्वा सर्वे
परस्पर शुद्ध भावेन शुद्धाधारणा विना
न प्रीति न सुख न च बलम् ते विना
सर्वे विनश्यन्ति न कोऽपि व्यक्ते वा

याने शरीरिकं बल आत्मिक बल सर्वं सुयोग्य सेना बल सर्वं बान्धव संबन्धीयों की बल बुद्धि एक्यता का बल १ शर्वा इस नाम से राजा धर्म से आय का प्रबन्ध रखे याने अच्छी पेदाश हो और प्रजा वणी रहै २ प्रेरिका इस नाम से मतलब ये है कि राजा समस्त प्रजा को सन्मार्ग में प्रेरणा करता रहै जिस्से प्रजा की सुख शान्तिः स्थितिः और प्रबन्धों की स्थिरता बनी रहै ३ शांभवी इस नाम से राजा अपने आप स्वाधीन्ता से अपना राज्य कार्य करता रहै किसी के आश्रभूत होके न रहै ४ शिवा इस नाम से राजा अपनी समस्त प्रजावों में कल्याण सुख चैन बना रखे ५ शान्ता इस नाम से राजा शान्त सभाव वाला हो उत्पाति और कुचाली न हो और और जितेन्द्रीय हो ६ एकवीरा इस नाम से राजा को बोद्ध कराता है कि कुसङ्ग को त्यागता हुआ क्षत्रिय जाति के स्वाभाविक गुण माफिक वीर ही भाव में मग्न रहै ७ माहेशी ये नाम बो

के उच्चभाव (मालकी भाव) रखे नीच विचार वा नीच भाव हरगिज न रखे नीच भाव से नीचा ओर उच्च भाव से ऊचा। उच्च नीच भाव ही कारण हे जेसा भाव वेसा फळ ॥ ८ ॥ शिवार्धङ्गी ये नाम बोद्ध करता हे के अपनी एकही पत्नी को अर्धंग में रखे अर्द्धंग पुरुष ओर अर्द्ध स्त्री दोनू मिलकर एक अग होजाता हे ओर एक से ज्यादा अर्द्धंग स्त्री न बनावे एक ही स्त्री को अपने अर्द्धंग के माफिक रखे ओर इसी तरह अपनी प्रजा से सदा मिला रहे राजा। मस्तक ओर। प्रजा पग हे ये दोनु मिलकर सामीप्य रहे ओर जहां तक होसके प्रजा के दु:खों को मिटाता रहे ओर प्रजा के साथ दुर्भाव कुछ भी न रखे ॥ ९ ॥ शिवा प्रीया ये नाम बोद्ध करता हे के राजा अपनी एक ही विवाहिता स्त्री को प्रीय रख इसी तरह प्रजा का भी प्रीय बना रहे राजा अपने हृदे में कोमलता ओर मुख में मधुरता ओर अपने बान्धवों का सबन्धीयों का प्रजावों का ओर सेना

जातेश्च स्थितिः।

उन्नत पदकांक्षिणा जना द्दृधिमि-च्छता राजविद्योपदेशेन शक्तेः सुमते विशुद्ध ज्ञानं संवाप्यते ताभ्यां रक्षा न्यायः स्वाधिकारे क्षत्रियाणां स्थिति।

भाषार्थ

द्वितीय शिक्षा—स्वार्थ सुख की संभाव से अधिक्ता सारे शुभ कार्यों को और हमेश की स्थिरता को नाश करने वाले दोनू प्रबल शत्रुवों को मारकर समस्त आपस में शुद्ध भावना से शुद्धधारणा विना न प्रीति न सुख और न बल है इनके विना सब नाश को प्राप्त होजाते हैं और किसी व्यक्ति वा जाति की स्थिति नहीं है। उच्च पदकी इच्छा करने वाले अपनी वृद्धि चाहने वाले राजविद्या के उपदेश से बल बुद्धि के शुद्धज्ञान को प्राप्त कर जिनसे रक्षा न्याय अपणे अधिकार में होना क्षत्रियों की स्थिति है।

सर्व शक्ति मति शर्वा प्रेरिका शां-भर्वी शिवा। शान्तैक वीरा माहेशी शिवार्धंगी शिवा प्रीया॥ प्रसौम्य महा शक्ति पतिचा शुभ भर्जनम्। प्रकाश्यते राजविद्या क्षत्रियाणा हितायच॥ आभू चन्द्रार्क तारस्थात् राज्य शासन वर्ध नम्। सुप्रतिष्ठितमेवास्तु मानुष्य सु खमेवच॥

भाषार्थ

सर्व शक्तिवाली उत्पन्न करनेवाली प्रेरणा करनेवाली स्वरूप शिवा शान्त स्वरूपवाली एकही वीरा माहेशी शिवार्धंगी शिवाप्रीया महा शक्ति अशुभ को नाश करनें वाले शिवके समीप सौम सभाव होकर प्रकाश की जाति है।

भाषार्थ

सर्व शक्ति मति इस नाम से राजा अपनी समस्त शक्तियों का समर्ण (ध्यान ज्ञान) करे

का प्रीति संपादक हो। पारमार्थिक भाव रखे और दान में उत्साह रखे इस तरह महा शक्ति के पति और अशुभ को नाश करने वाले के साथ उनकी अनुग्रह से निर्मल होकर क्षत्रियोंके हित के लिये राजविद्या प्रकाश की जाती है जिस्से पृथिवी चंद्र और तारों तक उनका राज्य स्थिर रहै और मान के साथ मनुष्य पनका सुख मिलता रहै ॥ १० ॥

सृष्टेसुंखशान्तिःस्थितिः प्रबन्धानां स्थैर्य सर्गे प्रारंभे शिव शक्त्योर्य समवादोभूत स एव तेज शक्तिः सुमतिर्मयि राजविद्याया प्रथमोपदेशोऽस्ति यं भगवानो विवस्वते प्रोवाच। पश्चात्परम्परा प्रोक्तवान व्ययमसोऽपि समये समये लुप्त प्रकाशश्च बोभूयते।

भाषार्थ

सृष्टी की सुख शान्ति स्थिति और प्रबन्धों

की स्थिरता के लिये सृष्टी आरंभ में शिव शक्ति का संवाद हुवा वह तेज शक्ति सुमति मयि राज विद्या पर पहला उपदेश है जिसको श्री विष्णु भगवान ने राजा विवस्वान से कहा फर परम्परा से ये राजविद्या का योग चलता रहा वह समय समय में लुप्त प्रकाशित होता रहता है।

राजविद्या।

॥ प्रथमोपदेश ॥

॥ प्रकृति स्वभाव नियम विद्या प्रशंसा ॥

अस्या सृष्टेरवधि चतुर्दश मन्वन्तर पर्यन्तः प्रति मन्वन्तरे मनुष्याणा बलबुद्धि कर्मायुर्भेदो विद्यते स्वार्थ सुख लिप्सया स एवाधोगतिं नयति शास्त्राणि च तमुद्धमाकृषन्ति यथा सूर्यो जलम्।

भावार्थ

इस सृष्टी की अवधी चवदे मन्वन्तर तक की है। हरेक मन्वन्तर में मनुष्यों की बल बुद्धिः कर्म और आयु में फरक पड़ता है और ये फरक स्वार्थ और सुख में पड़ने से होता है और ये स्वार्थ और सुख नीचि गति को लेजाता है और शास्त्र उनको उच्च गति में खींचता है जैसे सूर्य जल को।

एतच्छास्त्रावलंबी जनास्त्रिषुलोके षूच्चपदं लभते एतद्विद्या पुरुषाणां कर्माणि शोधयित्वा बलायुर्बुद्धिः संतातिश्च संपदा संवर्द्धयाति।

भावार्थ

इस शास्त्र का अवलंबी जन तीन ही लोक में उच्च पद पाता है ये विद्या पुरुषों के कर्मों को शुद्ध करती हुई बल आयु बुद्धिः संतति (परिवार) और संपदा को बढाति है।

प्रजासु सभ्यता प्रचारः समुन्नति मार्गं च शिक्षणीया। जगद्धानि कराणि विषयाणि कार्याणि कुर्वन्ति निरोद्धव्या परं तासां स्वधर्मे व्यवहारे प्राचीन मर्यादायां च हस्ताक्षेपो न विधेया। येन केन साम्राज्येऽधिकारेऽधिकाधिक माण्डलिका राजानः स सम्राट सुदृढतां प्राप्नोति। यत्र तत्रैव जन समूहः तस्य रक्षा न्याय हिताथाय पृथक् पृथक् राज्य स्थापयामि तस्मान्माण्डलिकानि राज्यानि पृथिवी पर्यन्तं बोभूयन्ते न कदाऽपि नाश जायंते।

भाषार्थ

पजावों में सभ्यता का प्रचार और उन्नति मार्ग सिखलाना चाहिये। जगतहानि कारक कामों के करने से रोकना चाहिये परंत उनके धर्म व्यवहार और प्राचीन मर्यादों में हात न डालना।

सात्विक जीवो ब्रह्मः शरीरं वेद शास्त्राणि यस्मिञ्ज्ञानं विज्ञानमास्ति-कथं च मम प्रकाशा एव सान्ति स एव ब्रह्म जानाति स ब्राह्मणः पूज्यः माननियश्च।

राजस्सात्विक जीवो वैश्यः शरीरं गणित द्रव्यश्च कृषि गो सवा वाणिज्यानि च मम प्रकाश एवास्ति तस्मै सा सत्यधारणा मान योग्यः। तामसी जीवः शूद्रः शरीरं सेवाकर्मः सेव मम प्रकाश एवास्ति तस्माच्छूद्र पालन योग्यः।

अनया विद्यायां पराक्रम सुमतेश्च विशुद्धज्ञानं समवाप्यते तेन च शुद्ध धारणा यया सुकृते कर्म संपादने पुरुषार्थो जायते ईदृश नैव पुरुषार्थेन शुद्ध भावनोत्पद्यते तयाच मनुष्य कोटि

राजसी और सात्विक जीव वैश्य है उनका शरीर गणित और द्रव्य है उस में खेती गो सेवा और वाणिज्य मेरा ही प्रकाश है उस में वही सत्य धारणा मान योग्य है। तामसी जीव शूद्र है उनका शरीर सेवा का काम है और वही मेरा प्रकाश है इस लिये शूद्र पालने योग्य है।

इस विद्या से पराक्रम और सुमति के शुद्ध ज्ञान की प्राप्ती होती है जिस से धारणा शुद्ध होजाती है और शुद्ध धारणा से सुकृत करने में पुरुषार्थ होता है और ऐसे पुरुषार्थ से भावना शुद्ध होजाती है और भावना शुद्ध हो जाने से मनुष्य कोटी में उच्च कोटी क्षत्रिय जाति में जीव जन्म पाता है।
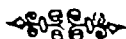
यौपयोगं दिव्यं शक्तिश्चानुशास्ति त-त्प्रत्यक्षमवगम्यते ॥

भावार्थ

यह मनुष्य का शरीर मुजसे सारी शक्त्यों वाली प्रेरणा करने वाली माया से अनन्त शक्तियों सहित रचा हुवा है परंत काम क्रोध लोभ मोह अहंकारों की अधिक्तासे ये तमाम शक्तियां तत्त्वों में तत्त्वमयि होकर उन में लीन होजाती है तब ये मनुष्य जेसी संगत पाता है वेसी ही साधारण वृत्ति पकड़ लेता है। वह जो उच्च पद की इच्छा करने वाला मनुष्य राजविद्या से सा जो सर्वोपरी योग है वह इन्द्रियों को वश में रखना और पाचों काम आदि के वशी भूत न होकर और उन से काम लेता हुवा दिव्य शक्तियों का प्रत्यक्ष ज्ञान कराता है।

मया प्रथममाकाशमुत्पन्नमाकाशा-द्वायु संभवः वायोस्तेजस्ततश्चापस्तत पृथिवी समुद्भवः तेषां काम क्रोध लोभ

मोहाकेरे महदान धृतिस्तेजो शौर्य-
मीश्वर भाव प्राप्यते एतेषां स्वदेशे
मातृ भाषा भोजन वेष विवाह पुरुषार्थैः
सह प्रवर्तते येषा धर्म धरा धन दारा
प्राणाना सवन्धः ततः ज्ञान योग व्यत्र
स्थिति स्वाध्यायः न्यायामयमार्जवं
प्रेरयते तेषा समुत्साहिता चित्ते गभीर
ता शक्ति सुमति पराक्रमेण सहिताश्च
शुद्ध भावनाऽत्मवत्सवभूतेषु य पश्य-
ति सर्वयुपयोग्यम्यास तत्त्व ज्ञानाथ
दशनम् । दान रक्षास्सदाचार शरीरे-
न्द्रिय सयम जितेन्द्रियत्व मनीषेव
धारयते स राजा समस्ते क्षितिमण्डले।

भाषार्थ

मुजसे पहले आकाश को उत्पन्न कराया गया
और आकाश से वायु वायु से तेज (अग्नि)

तेज से जल और जल से पृथिवी हुइ। तिन से काम क्रोध लोभ मोह अहंकार के साथ दान धृति तेज शूरवीरता और माल की भाव की प्राप्ती है और इन से स्वदेश मातृ भाषा भोजन वेष विवाह और पुरुषार्थ के साथ प्रवर्त कीया जाता है जिन से धर्म धरा धन दारा और प्राणों का संबन्ध है। फेर ज्ञान योग मे व्यवस्थिति अपनी ही राजविद्या का अभ्यास न्याय अभय और सरलपन से प्रेर्यते (प्रेरणा कीया) जाता है तिन से उत्साह चित्त में गंभीरता बल बुद्धि के पराक्रम के साथ शुद्ध भावना और अपने माफिक सब प्राणियों में देखता है और तमाम उपयोगी अभ्यास और ज्ञान के सार को तत्त्व करके देखना। दीन (गरीब) की रक्षा करना सदाचार शरीर इन्द्रिय वश में रखना जितेन्द्रिय पन्न मनुष्य की बुद्धि ही धारण कर शक्ति है वह राजा समस्त पृथिवी भर का है।

कामाद्धम संग्रहो तस्य च रक्षणं

मोह से स्त्री संतती (परिवार) और संबन्धियों का संग्रह हो और इन की रक्षा और दान कन्यावों का विवाह करके।

अहंकारात्प्राणानां योगयुक्तेन संग्रहो पथ्येन च रक्षा दानंचेति युद्धे।

भाषार्थ

अहंकारों से प्राणों का योग युक्ति संग्रह करो पथ्य के साथ और रक्षा करो और युद्ध में दान प्राणों का भी हो।

समरे शौर्यम् युद्धि विक्रमः उपयोगीषु कार्येषु यथा योग्य तेजः धृतिः परिश्रमश्च।

भाषार्थ

लडाई मे शूरवीरता युद्ध में पराक्रम और उपयोगी कामों में यथा योग्य तेजी धीरज और परिश्रम करना।

दानं देशे काले सुपात्रेषु वा कन्या दानं स्वजाति विवाहेन यथा योग्येन च।

अच्छे अच्छे शास्त्रों का अनुभव और एसे अनुभव से शुद्ध धारणा चली जाती है॥ न्याय में तजरुबा जरूरी है॥ मातृ प्राकृत भाषा के अभाव से जगत सुखदायी धर्म की महा हानि होजाती है॥ धर्मके नाश से समूल नाश होजाता है॥

स्वदेश शुद्ध बलिष्ट भोजन परिवर्तनेन शरीरं पुरुषार्थं विहीनं कृत्वा धरया परि त्यज्यते॥

भाषार्थ

अपणा देशी शुद्ध बलीष्ट भोजन छोड़ने से शरीर पुरुषार्थ हीन करके पृथिवी उसको छोड़ देती है॥

वीरवेषं परिवर्त्तनेन स्व मनोगत विचार प्रेरणा परिवर्तते तेन शुद्ध भावनाऽपि परिवर्तनेन धनक्षयः सम्पद्यते सजीवात्मा जन्मान्यपि न स्वजातेः

परि जायते यस्मात्साजाति ह्रस्यति ॥

भाषार्थ

वीर वेपको छोडने स अपने मनकी गति विचार भ्रष्ट हो जाती है जिससे शुद्ध भावना भी उलटी होजाने मे धन का नाश होजाता है और शुद्ध भावना विगड ने से वह जीवात्मा अपनी जाति में जन्म नहीं लेशक्ति है जिससे वा जाति घट जाती है ॥

स्वजाते विवाह परित्यागेन स्व दाराणा स्व सन्ततिश्च स्व जातेर्क्षति र्जायते वर्णशकरश्च सम्भवमापि ॥

भाषार्थ

अपणी जाति का विवाह त्यागने से अपणी स्त्रिया और सन्तति और अपणी जाति का नाश होता है और वर्णशकर भी पेदा होते हैं ॥

पुरुषार्थ परित्यागेन प्राणानां हा-

निः सर्वस्वं च विनश्यन्ति ॥

भावार्थ

पुरुषार्थ के त्यागने प्राणों की हानि है और सर्वस्व नाश कर बैठता है ॥

धर्मेण धरायाः स्थैर्यम् धरया च धनस्य ॥ धनेन दाराणाम् ॥ दारैश्च संततेः ॥ संतत्या च प्राणानां परम्परा प्राप्तौ जन्मानि स्थितिः ॥

भावार्थ

धर्म से पृथिवी की स्थिरता है और पृथिवी से धनकी और धनसे स्त्रियों की और स्त्रियों से सन्तति की और सन्तति से प्राणों की पीढी दर पीढी जन्म पाने की स्थिति ॥

——:०:——

राज विद्या ।

॥ तृतीयोपदेश ॥

बल रक्षा—द्वादश बलानि ॥

पूर्णावयव सामग्री सहित शारीरि कात्मिक बाधवाना सम्बन्धीना बलम् प्रथमम् ॥ तपश्च पुरुषार्थो द्वितीयम् ॥ तृतीयम् द्रव्य विद्या कोप बलम् ॥ चतुर्थ धम वीरता बलम् ॥ पञ्चम राज्य शासन पराक्रम पुन्यश्च ॥ बुद्धि चातुर्य्येण युक्ता सह सत्यभाव ज्ञानश्च षष्ठम् ॥ सप्तममस्त्र शस्त्राणामभ्यासो बलम् ॥ अष्टमश्च मित्राणा सम्बन्धीनाश्च स्नेह प्रीति सहा य्यम् ॥ नवमम् नित्यमभ्यासे सम्यता वशम्वदा सैनिकम् ॥ समय विचारोऽर्था

तस्यश्च वृथा न यापनम् दशमम् ॥
एकादशस्थान दृढता दुर्गादि बलम् ॥
इष्ट योगस्य च द्वादशमिति ॥

भावार्थ

पूर्ण अवयव (हाथ पग आंख कानादि) सामग्री सहित शरीरिक और आत्मिक और बांधव और सम्बन्धियों का बल पेला है ॥ तप और पुरुषार्थ दूसरा बल है ॥ तीसरा द्रव्य विद्या कोष (खजाना) बल है ॥ चौथा धर्म और वीरता का बल है ॥ पांचमा राज्य शासन (राज्य करना) पराक्रम और पुन्य का ॥ छटा बुद्धि चतुर्ता सहित सत्यभाव और ज्ञान ॥ सातमा अस्त्र शस्त्रों के अभ्यास का बल ॥ आठमा मित्र और सम्बन्धियों की स्नेह प्रीति और सहायता का बल ॥ नवमा नित्य अभ्यास पाई हुइ अपने वश में सेना का बल ॥ समय में विचार करना याने वृथा न बिताना ये दशमा बल है ॥ इग्यारमा स्थान दृढता दुर्गादि बल है ॥ इष्टयोग बारमा बल है ॥

सर्वे हितार्थाय वायु जलयोः शुद्धि ॥ प्रतिशरीरे मनसात्मनश्च शुद्धिः तां समीक्षयः न्याये ॥

भावार्थ

सब के हित के लिये वायुः जलकी शुद्धिः प्रति शरीर में मनसा और आत्मा की शुद्धि न्याय के समय में देखना चाहिये ॥

स्थूल शरीरस्य भोजन सात्विक नियामितं साधारण चास्ति ॥ सुक्षमस्य सदाचारः ॥

भावार्थ

स्थूल शरीर का भोजन सात्विक नियमित और साधारण है और सूक्षम का सदाचार है ॥

स्थूल शरीरस्य व्याधयो ज्वरः कासः क्षयादि विकारश्च तथैव काम क्रोध लोभादयः सूक्षमस्य ॥

भाषार्थ

स्थूल शरीर की व्याधियां (बिमारियां) ज्वर कास क्षयादि विकार है इसी तरह काम क्रोध लोभादय सूक्षम शरीर के रोग हैं ॥

अतिशयः कामो वीर्यं क्षिणोति ॥ अशक्तंच सन्तानोत्पत्तौ ॥ कामी पुरुषः प्रायाल्प सन्ततिर्भवति वा कन्यानामधिकं सम्भवम् ॥

भाषार्थ

अति काम से वीर्य क्षीण होजाता है और सन्तान उत्पत्ति होने से अशक्त होजाता है ॥ कामी पुरुषः प्राय थोड़ी सन्तति वाला होता है वा कन्यावों का जन्म अधिक होता है ॥

ऋतु कालो एकस्मिन्संवत्सरे द्वादशः अथवा त्रिषु वर्षेषु तथैव श्रेष्ठ द्वादशः त्रिणि त्रिणि समन्ते वर्षा शशाहि

चैकैक हेमन्ते ग्रीष्मे शिशिरेच इत्थचे दृश पौरुषान्वितस्य पुरुषस्य बलवती दीर्घायुश्च सन्ततिरुत्पत्ति सम्भाव्यते ॥

भाषार्थ

एक संवत्सर में ऋतुकाल बारे हैं अथवा तीन वर्ष में हो बारे हैं और तीन तीन वसन्त वर्षा और शरदों में और एक एक हेमन्त में ग्रीष्म में और शिशिर ऋतु में इस तरह पौरुषवान पुरुष की बलवान दीर्घायु सन्तान उत्पन्न होती है ॥

॥ तरुण्यावस्था प्रोच्यते ॥

अति शीतले देशे पुरुषस्य पञ्च चत्वारिंशत वर्षाणि यावदुत्तमतारुण्य प्रारम्भः स्त्रियाश्च त्रिंशद्यावत् ॥ मध्यम पुरुषस्य च तारुण्य पञ्च विंशति वर्षा णि स्त्रियाश्च विंशति ॥ कनिष्ट तारुण्य

पुरुषस्याष्टादश वर्षाणि स्त्रियास्तु षो-
डशः ॥

भाषार्थ

अति शीतल देश में पुरुष की पेंतालीस वर्ष में उत्तम तरुण (जवान) अवस्था सरु होती है और स्त्री की तीस वर्ष की ॥ मध्यम पुरुष की पचीस वर्ष में और स्त्री की वीस वर्ष में ॥ कनिष्ट पुरुष की अठारे वर्षों में और स्त्री की सोले वर्षों में ॥

साधारणेच नाति शीतोष्णे देशे उत्तमं पुरुषस्य तारुण्यं पञ्चविंशति व-र्षाणि स्त्रियाश्च विंशति ॥ मध्यमं पुरु-षस्याष्टादशः स्त्रियास्तु षोडशः ॥ कनिष्ठ तु पुरुषस्य षोडश वर्षाणि स्त्रियास्तु त्रयोदश ॥

भाषार्थ

साधारण देश (न अति ठंढा न अति

गर्म) पुरुष की उत्तम तरुण अवस्था पचीस वर्ष में ओर स्त्री की वीस वर्षों की ॥ मध्यम पुरुष की अठारे वर्षों में ओर स्त्रा की सोले वर्षों में ॥ कनिष्ट पुरुष की सोल वर्षों में ओर स्त्री की तेरे वर्षों में ॥

अत्युष्ण देशेच पुरुपस्य विंशति वर्षाणि यावदुत्तम तारुण्य स्त्रियास्तु पोडश वर्षाणि ॥ तदेव मध्यम पुरुषस्य ष्टादश वर्षाणि स्त्रियास्तु चतुर्दशःकानिष्ट तत्र तारुण्य पुरुपस्य पोडश वर्षाणि स्त्रियास्तु द्वादशः ॥

भावार्थ

अति उष्ण देश में पुरुष की वीस वर्षों में उत्तम तरुण अवस्था ओर स्त्री की सोले वर्षों में॥ मध्यम पुरुष की अठार वर्षों में ओर स्त्री की च वद वर्षों में ॥ कनिष्ट पुरुष की सोले वर्षो में ओर स्त्री की बारे वर्षों में तरुण अवस्था आती है ॥

॥ चतुर्थोपदेश ॥

बुद्धिः कर्मयोगः न्यायश्च

ज्ञानेच्छा क्रतिभिरेव स्वार्थिकी पारमार्थिकयौ बुद्धौः सम्भवः अनेकासु योनिषु मनुष्य योनि (शरीर) माययै दृशी रचिता यथानेकजन्माभिर्निष्पादितानि शुभाशुभानि कर्माणि मनुजो विशिष्य दुरिता वहानि सुकृता वहानि वा सुसम्पादायितुम् शक्नुयात् ॥

भाषार्थ

बुद्धि कर्मयोग और न्याय ज्ञान इच्छा और क्रियावों से स्वार्थिकी और पारमार्थिक बुद्धियों का होना सम्भव है ॥ अनेक योनियों (शरीर) में मनुष्य शरीर माया से एसा रचा है ॥ जिससे अनेक जन्मों से किया हुआ शुभ अशुभ कर्म

ऌव रचितः स्वार्थिकया बुद्धया कार्य विधानेन्नरस्याल्पतरोलाभोल्पञ्च सुख म् ॥ संजायते मुहुर्मुहु निकृष्ट (कपूय) योनिषु जन्मापि एवमेव पारमार्थिकया बुद्ध्याच महाँल्लाभोनन्तसुखमखण्डितञ्च महद्योनिषु जन्मापि भवति ॥

भावार्थ

मायाने मनुष्य को अपणी इच्छा माफिक चलने वाला रचा है ॥ स्वार्थिक बुद्धि से कार्य करने से थोड़ा लाभ थोड़ा सुख होता है और बार बार नीच योनियों जन्म लेता है इसी तरह पारमार्थिक बुद्धि से महान लाभ अनन्त अखंडित सुख मिलता है और बार बार उच्च योनियों में जन्म पाता है ॥

स्वभाव परिमाणेन स्थावरे जंग मेषूच्चेषुनीचे षजीवो संजायः

ते ॥ बुद्धिकर्मानुसारिणी वर्त्तमाना तथैवच ॥ तस्मात्कर्म शुद्धारयेत् पुरुषो हिस्सुविचारत ॥ सुखतु पुरुषार्थेन ना न्यथाचान्यकर्मणा ॥

भाषार्थ

स्वभाव परिमाणे चराचरमें उचनीच यो नियों मे जन्म पाता है ॥ बुद्धिकर्मानुसारिणी है चाहे इस जन्म के हो चाहे पूर्वके ॥ इस वास्त पुरुष अपने अच्छे विचारों से कर्मो को शुद्धारे ॥ सुखतो पुरुषार्थ है न और, तरह से और और कर्मो से ॥

॥ पंचमोपदेश ॥

पुरुषार्थः

हे पुरुषः मात्याक्षी पुरुषार्थम् ॥ पुरुषार्थं कृतिममैवाज्ञाः सोममैव स्वरूपंच ॥ यस्मिन्नहंनिवशामि ॥ सोऽप्यहमेवास्मिच ॥

भाषार्थ

हे पुरुषः पुरुषार्थ को मत छोड़ ॥ पुरुषार्थ करना मेरी आज्ञा है वह पुरुषार्थ मेरा ही सरूप है ॥ जिसमें मैं निवाश करता हूं और पुरुषार्थ भी मैंही हूं ॥

पूर्वास्मिन्मनुजशरीरेण कृतस्य पुरुषार्थस्य फलेन्नास्मिँल्लोके सौख्येन लाभेनच इदानि प्राप्तेन भूयते ॥ न चैतत्केनाप्यन्य कर्तुंशक्यते ॥ पुरु-

पार्थी वीरः सुभटोऽस्मिल्लोके सर्वस्व जयति स्वर्गमपि तथैवच ॥ तस्या सतः तिरपीहलोकेऽखण्डितया कीर्त्या सह सुखेन सुस्थिरया तिष्ठति ॥

भाषार्थ

पूर्व जन्म मे इस मनुष्य शरीर से किये हुए पुरुषार्थ के ही फल से इस लोक मे सुख और लाभ पाता रहता है जिसको कोई और तरह नहीं करसक्ता है ॥ पुरुपार्थी वीर सुभट इस लोक सर्व पासक्ता है वा जीत सक्ता है और इसीतरह स्वर्ग को भी ॥ और उसकी संतति भी इस लोक में अखण्ड कीर्ति (जस) और सुख साथ स्थिर रहती है ॥

एतद्विद्याऽभावेन सुविचारदान तथा तेजोसुमति पराक्रम श्रद्धा शक्ति पुरुषार्थहीना प्रदुष्यन्ति मम मा

प्रकृति भाग्यं कर्म तथा मामपि परं मनुज शरीराय न कोप्यहमवशेषितम् मनुष्यः मामपि वशं (स्वाधीन) कर्तुं शक्नोति । यदि स्वार्थ सुख मथिलस्या म धिकतां त्यक्त्वा शुद्ध भावेन पुरुषार्थं च करोति सार्वकालं सत युमेव व - तेत सर्वा संसाधयते ॥ विशुद्ध ज्ञानेन शक्ति पुरुषार्थेन यंयं चिन्तयते कामं तंतं प्राप्नोति ॥ सर्वयुपयोगयभ्यासे परिपूर्ण योग्यता सर्वांच प्राप्यते ॥

भावार्थ

इस विद्या के अभाव से अच्छा विचार तेज आछी बुद्धि बल श्रद्धा शक्ति और पुरुषार्थ से हीन मेरी प्रकृति मायाको भाग्यको कर्मोंको और मेरे को भी दोष लगाते है परन्त मनुष्य शरीर के लिये मैंने कुछ भी बाकी नहीं छोड़ा है मनुष्य

मेरे को भी अपने वशकर सकता है, यदि स्वार्थ सुख और सैथिल्यकी अधिकता को छोड़ता हुआ शुद्ध भाव से पुरुषार्थ करता है वह सब समय सतयुग ही वर्तता है और सबको साधलेता है ॥ शुद्ध ज्ञानवाला मनुष्य शक्ति पुरुषार्थ से जो जो काम चाहता है (चिन्तवन) करता है उनको वह हासल करलेता है ॥ सब उपयोगी अभ्यासमें परिपूर्ण योग्यता से सब सिधियों को अपने आप पा लेता है ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोमपाठ १ रा ध्य सम्भव सेवक्षात्रियाणा षटत्रिंश ल्लक्षणाः ॥

शुद्धभावेन मनुज शरीरं प्राप्यते तास्मान्विचार शक्तिः विशेष (अधिकः) तया च शक्तेः सुमतेर्विशुद्ध ज्ञानं स-म्बाप्यते ॥

महादेवी प्रश्न—को राज्यं शास्ति
ईश्वर उवाच—शक्तिः पराक्रम सुमतिः
तयोर्योगश्च ॥

पराक्रमस्य प्रयोजनं रक्षा—तस्मै
समुत्साहिता तद्योगश्चेदशः प्रति
समयं शरीरेन्द्रिय संयम (स्वाधीनमेव)
ताभ्यां बलपौरुषौ ताभ्यां पथ्येन व्या-
याम परिश्रमेऽभ्यासंच समीक्षण तथैव
वाहनामस्त्र शस्त्राणामभ्यासे प्रीति रक्षा-
र्थमतत्पश्चात्प्रजानां प्रत्येक जनानां
प्राना स्वतंत्रता द्रव्यांचेश्वर भावेन
सहः रक्षणम् उपयोगीस्थावरजगमापि
तथैवच । सुमते प्रयोजनं न्यायः—तस्मै
समुत्साहिता तद्योगश्चापिदशः स्वशुद्ध
भावना ब्रह्मचर्य्यम् स्ववीर्य रक्षणम्
वीर पौरुषम् धर्मम् स्वजातिमर्यादया

विवाहमैक्यम् परस्पर स्नेहः प्रीति सहा
स्थैर्यम् स्वदेशमातृ भूमौ प्रीतिः शुभ
चिन्तनम् सगम वृद्धैः प्राज्ञैः सज्जनैः
सह सभा सम्मतिः प्रीतिः मातृभाषा
स्वदेश शुद्ध भोजनम् सद्वेषम्
प्रजानां हितमिच्छता सुखशान्त्यारो
ग्यता सम्पदा समृद्धिः सम्बर्द्धनम्
उपयोगीचराचरम्

श्रीमत्परमपवित्र सोम पाठ से राज्य सम्भवः
राज्य के योग होनेसे यह क्षत्रियों के ३६ छत्तीश
लक्षण है शुद्ध भाषणा से मनुष्य का शरीर की
भाती है जिसमें विचारशक्ति विशेष है विचारश
क्ति से सत्य और बुद्धि का शुद्ध होने का मार्ग है।
प्राण महादेवी प्रश्न करती है राज्य
कौन करता है

ईश्वर ने कहा—बल और बुद्धि और इन दोनुका योग बल का प्रयोजन रक्षा है और रक्षा करने मे उत्साह हो रक्षा का योग इस तरह है—प्रति समय शरीर इन्द्रियों को अपने वश मे रखे इससे बल पोरुष होता है और बल पोरुष होने से परहेज के साथ कसरत करे और मेहनत का अभ्यास रखे इसी तरह वाहनों का और अस्त्र शस्त्रों के अभ्यास मे प्रीति रक्षा के वास्ते रखे तिस पीछे प्रजा के शरीर प्राण स्वातंत्र और द्रव्य की रक्षा करे मालकी भाव के साथ और इसी तरह उपयोगी चराचर की भी।

अच्छी बुद्धि से प्रयोजन न्याय है और न्याय करने मे उत्साह हो न्याय करने का योग इस तरह पर है—अपनी भावना शुद्ध रखे ब्रह्मचर्य याने अपने वीर्य की रक्षा रखे-पुरुषार्थ-धर्म मर्याद से अपनी जाति मे विवाह करे-एक्यता भाव रखे आपस मे स्नेह प्रीति और सहायता करता रहे अपनी मातृ देश भूमि से प्रीति और उसका उप

र्चिंतक रहे सगत मे युक्ते बुद्धिमान पण्डित और सज्जनों के साथ सभा सम्मति रखे मातृ भाषा से प्रीति रखे अपना देशी शुद्ध भोजन करे अपना देशी ही वीर वेष रखे फिर प्रजा के हित चाहने वाले हो प्रजा को सुख शान्ती आरोग्यता सपदा और धन धन्य मे पूर्ण रखे औ उपयोगी स्थावर जगमों के साथ भी न्याय वर्ते ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ २ राज्य स्थापनम् ॥

महादर्शी प्रश्न–प्रत्येक व्यक्ते वा सर्वेषा व्यक्तीनाच को मुख्यो धर्मोऽस्ति ॥
ईश्वर उवाच–धर्मदृशा शान्ति प्रबन्धेन सहिता सप्रेमणा प्रभोराज्ञा पालनीयम्॥
अहार सुख दुःखादि ज्ञानमायि (युक्त) वृक्ष वनस्पत्याद्यचर चरे मनुष्य पशव ते सर्वेऽह्यार सुख दु ख भयक्रोध निद्रा

मोह स्पर्श मैथुन प्रभृति पालनादि तीव्र ज्ञानेन सह: विचार: समानभावे नाल्प: प्रवर्त्तते पर मनुष्येष्वाधिको विचार शक्ति तथैश्वर ज्ञान भवति तच्च सुक्षमंत्रिधा: अवधि: मनोपरं केवलंच तेभ्यो: परंपद प्राप्तो॥ स्थूल ज्ञानं मति: श्रुतिश्च ताभ्यां विज्ञानोत्साह: तस्माद्धर्म: धर्मेणेष्ट: इष्टेन वीरता तथा जितेन्द्रियत्वम् तथा बलपौरुषो बलेन बुद्धि: ताभ्यां पुरुषार्थ: तेनैव राज्यम्॥ तत्प्रसिध राज्य यस्मिन्पृथक् मुद्रायंत्र तुला प्रमाणम् तथा पृथक् समाचार पत्रालया: शुल्कालया: राज्य शपथश्च॥ एकाप्रसिध जाति ध्वजाचेति सापि रागाकृति चिन्हे स्वै: स्वै: पृथक् पृथक्॥

भावार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ २ राज्यकी स्थापना॥ महादेवी प्रश्न करती है—प्रत्येक व्यक्ति वा सर्व व्यक्ती वा समस्त जातियों का धर्म क्या है। ईश्वरने कहा—धर्म दृष्टी के साथ और शान्ति और प्रबन्ध के साथ हो वह आज्ञा अपने मालक की प्रेम के साथ मानने योग्य है अहार सुख दुखादि ज्ञान के साथ वृक्ष वनस्पत्यादि अचर है और चरों मे मनुष्य पशू वे अहार सुख दुःख भय क्रोध निद्रा मोह मैथुन और प्रसूते (बच्चे) पालने आदि का तेज ज्ञान है और विचार सामान्य भाव म अल्प है परतु मनुष्य मे विचारशक्ति अधिक (जादा) है जिससे ईश्वर ज्ञान भी हो जाता है वह सूक्षम रूप से तीन तरह का है—अवधि—मनपर्य और केवल जिनमे परम ५८ की प्राप्ती होजाती है ॥

स्थूल ज्ञानमति और श्रुति का है जिससे विचा (तर्क) की उत्साह होजाता है और विज्ञान

धर्म धम से इष्ट इष्ट से वीरता वीरता से जितेन्द्रिय पन्न इस्से वल वल से बुद्धि और बल बुद्धि इन दोनु से पुरुषार्थ कीया जाय सोही राज्य है ॥ वह प्रसिध राज्य जब है जिसमे मुद्रा माप और तोल जुदा है और समाचार पत्रालय डाणघर और आन चलती हो और एक प्रसिध जाति ध्वजा रंग और निशान मे जुदि हो ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ३

किमर्थं राज्यं समर्पणम् ॥ सृष्टिरियं मया राजसु निक्षेप इव समर्पिता एनां संततं वृद्धिं कुर्युः भूभृद्भ्यः स्वप्रभुणा राज्यमे तदर्थं समर्पितम् यतल्लोक हितैषिभिः प्रजानुरञ्जन शीलैश्च भाव्यम् नतुस्वा· त्म भोग तत्परैर्भाव्य केवलम् ॥ राजा स्वसंताति पुत्र निर्विशेषं प्रजां रक्षेत् प्रकृति रंजनात्राजा ॥ योनृपः स्वकर्मणा

वाधिकृताना विपरीत कृत्यानामन
लोक्येन प्रजा दु ख समुत्थादयाति सनून
निरयथाति ॥
प्राति समय कर्मचारिणा योग्यतां समी
क्षणीया ॥ क्षत्रविद्यानुसरणत्यक्त्वा य
प्रजाभ्यो धनमधिगच्छाति सनिरपत्यो
भूत्वाऽधोगार्ति प्रजायते ॥
एतत्तत्व सार ज्ञात्वा सम्यक प्रजाः पुत्र
निर्वोरसान्पालयेत तस्य राज्ञ राज्य
सुस्थिरच स राजा तिष्टतेचिरम् बहुला
रुततिः सह ॥

भाषाथ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ३
राज्य किस लिये मिला है ॥
ये सृष्टि मुज से राजावों में एक अमानत धरोवर
की तरह सूपी हुई है इसको हमेसा वृद्धि करते

रहैं ॥ राजावों के लिये राज्य इस लिये सूंपा गया है के वे लोक हितैसी होकर रहे और प्रजावों को राजी रखे और उनकी वृद्धि के माफिक चलने वाला हो न की अपने ही भोगों में लगा हुवा रहै ॥ राजा अपने पुत्र संतति से भी विशेष प्रजा की रक्षा करता रहै प्रजा को राजी रखने वाला राजा है ॥ जो राजा अपने कामों से वा कर्मचायों के विपरीत कामों से वा उनके विपरीत कामों को न देखकर प्रजा को दुःख पोचाता है वह निश्चय नर्क को जाता है॥ हर समय कर्मचारियों की योग्यता देखता रहे ॥ क्षात्र विद्या के अनुसरण को छोड़ के जो प्रजा से धन लेता है वह निस्संतान होकर नीच गति को पाता है ॥ इस तत्व के सार को जानता हुवा समस्त प्रजावों को अपने पुत्रों से विशेष पालता रहै उस राजा का राज्य स्थिर बना रहता है और वह राजा बहुत काल तक बहोत संतति (परिवार) के साथ राज्य सुख शान्ति से करता है ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ४ राज्य स्थैयम् ॥ सैश्वर्य्ये क्षत्रिया वीरा प्रबद्धया भूमिः शासने (भूमि प्रदाने नेश्वर भावन सह) ॥ नैश्चल्य लमते भूपा राज्यहि स्थिरता तथा ॥ वीर क्षत्रियान् भूमे रक्षकान विधाय तेभ्यो भूमि विभाग प्रदानमेव एतेवै वाङ्कायः मन' प्राणैर्धनैश्च सर्वथा स्वामि रक्षार्थ परिकर बद्धा प्रयता नित्य यत्नमातिष्ठयु' पृथक् नियता वार्षिकी राज्य सेवा नियतकर प्रदानञ्च दद्यु एषा योग्यता प्रति वर्षमेकदा स्वामिना परीक्षणीया॥ धनकोषो गुप्त प्रकाशितश्च द्वेधाविधेयः तथैव सेनापि ॥ सैनिक सामग्री तथैवच॥ गुप्त सेना प्रायः सामन्तामेव तथा स मुद्राकाश सेना पर्वत मस्तके वा समुद्र

तदैव सुदृढमेव॥ भूचरा खेचराश्च जल-
चरा सेना विषमे स्थाने पाताले प्रति
समयं सभ्यता बलान्विता सुदृढमेव॥
सभ्य दुर्गं सेना तथैवच॥ क्षात्रियाणां
भूप्राप्ति फलंतु सर्वेषु तत्त्वेषु प्रभूत्वमेवच
स्वाधिकार एव॥ कस्याचिद्राज्यस्या-
धिकारे बहुना क्षत्रियाणां स्वामित्वं
तस्य समग्रस्य राजस्य भूमौ तस्य रा-
जस्य स्थिरतामखण्डितां करोति॥
इदृश राजविद्या शिक्षिता क्षत्रियाणां
प्रभुत्वानि तस्य राज्यस्य मूलानि
शाखा प्रभवन्ति यावन्ति तावन्त्येव
राज्य स्थिरतां सहतु भूतानि चैवतानि
नानि भवन्ति स्थैर्यं विनाशकानि च
ायन्ते॥

ाकी केवलो राजा वेतन परिग्रहीत

सेनाभिः कर्हिचित्समग्रग्राम प्राप्य राज्यात् भ्रंसते ॥ वहु सामन्ताश्च भूम्याधिपतयः राजा स्वस्थिरता दृढ करोति ॥ मूलानि तथा वृक्षस्यैक सवन्धेन वृक्षस्यस्थिति ॥

सम्राट रूप वृक्ष स मुलान्याश्रृत् स्थित' तस्य प्रधान मुलानि बलपक्षे महाराजानेव तथैव बुद्धि पक्षे वृधा क्षत्रिया जगदनुभावुका ब्राह्मणा वैश्या वा पश्चात्स्थूलतम बलपक्षे मामन्ता (महाराव) तथैव बुद्धिः पक्षे बुद्धा क्षत्रिया राजविद्या पण्डिता वा ब्राह्मणा वेश्यावा तत्पश्चात्स्थूलतर बलपक्षे राजानं (राव) तथैव बुद्धि. पक्षे प्राजा स्वार्थाधिकता सुनिस्पृह ॥ बलपक्षे स्थल मलानि गामाणि पत्र. तथैव

शुद्धि पक्षे स्वामीनः शुभचिन्तका क्षात्रि-
या ब्राह्मणा वैश्या वा राजविद्या ज्ञाता॥
वृक्षस्य मूलानि भूम्याधिपतयः बलपक्षे
तथैव बुद्धि पक्षे सर्वोपरी परिज्ञाता
क्षात्रिया ब्राह्मणा वैश्या वा ॥

मूलान्यधं संबन्धेनाधस्य स्थितिः ॥
निस्संबन्धेन प्रत्यक्ष विनाश· वृक्षाणां
मूलेषु भूमि ददाति नीरं शुद्धा रस परंत
न्यायेन ददाति पावकः तेन त मूलानि
प्रदहन्ति वृक्षश्च विनश्यति ॥

केवलो वेतन परिगृहीत सेना रूपेण
मूलानि स्यकदापि पृथिवी तलान्नीर
शुद्धारसं नाकृषन्ति तेषां मूलान्याप्यो
द्ध सजायन्ते न न्यागाधः स्थितम् ते
सर्वे वेतन संज्ञकन्नीरम् ॥ शुद्धा रस
मिच्छन्ति राजभ्या परेभ्यश्च न त स्व-

यमाक्कृष्णक्तु शक्नुवन्ते अक्षय वट वृक्षस्य मूलानि वृक्षस्य स्थितिरास्ति तथैव शाखा तेषा मूलान्यापि राजरूप वृक्ष सुदृढ करोति एवमेवाधिक शाखाऽधिक दारढ्यम् ईदृश वृक्ष न वायुकोपविचालतु शक्नोति तथैव वीर सुभट क्षत्रियेभ्यः भूमि विभाग प्रदानम् राज्य सुस्थिर दृढ करोति न कोपि हर्तु शक्नोति ॥

काश्चिद्राज्यस्य सर्वे भूमि काञ्चन कल्प लतैवास्तरणमेवानन्त रत्नमयी सविस्तरेण प्रसरति तमपर सेना नायका राजविद्याऽभावेन तेषा स्वभावेन हर्तुमिच्छन्ति यदि तद्भूम्युत्तमास्तरणं वहु सामन्तानामधिनत्वेन स्वामी भावेन सहः नास्ति । वहुनि सामन्ताना भू

म्याधिपतिनां तले दृढ स्थितां न कोपि हर्तुं मिच्छाति न च हर्तुं शक्नोति न्यून तराधिकारं हर्तुं शक्नोति इच्छाति हसाति पृथिवी सर्वं भोगेश्वर्य प्रदायिनिमाक्रमण करोति तथैवाधिकाधिक बल बुद्धयाधि-कार दृष्ट्वा प्रतिगच्छन्ति ॥

बलेन रक्षा बुद्धेः प्रयोजनं न्याय । रक्षा न्यायं पश्येत संततम् स राजा मनोऽ भिलाखितं फल प्राप्यते यदि सैथिल्यं करोति कल्प वृक्षस्य फलान्य परापि प्राप्यन्ते वृक्षछेतुमपि शक्नुवन्ते ।

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ४

राज्य की स्थिरता ॥

मालकी भाव के साथ वीर क्षत्रिय भूमि के साथ बन्धे हुवे याने भूमि देकर राजा अपने जागीर-

दार धना रखे इस तरह का शासन करने वाला राजा निश्चलता को पाता है और उसका राज्य स्थिर होजाता है। वीर क्षत्रियों को भूमि के रक्षक मुकरिर करके याने अपने जागीरदार बना के भूमि का विभाग दें और वे वाणि शरीर और मन से प्राण और धन के साथ सब तरह से अपने स्वामी की रक्षा के लिये हमेसा यत्न के साथ कमर बान्धे हुवे तयार रहें और मुकरिर का हुई वार्षिक राज्य सेवा और कर देते रहें॥ इनकी योग्यता प्रति वर्ष में एकवार मालिक से देखी जानी चाहिये॥ धन का खजाना गुप्त और प्रकाश दो तरह से हो इसी तरह सेना भी और एसे ही सेनी सामग्री॥ गुप्त सेना अखसर सामन्तों की हो तथा समुद्र आकाश सेना पर्वत के मस्तक मे वा समुद्र के तटपर दृढ रख॥ पृथिवी पर चलने वाली सेना आकाश जल में चलने वाली सेना विषम स्थान में पाताल में प्रति समय अभ्यास पाई हुई और बलवान दृढ रहे इसी

तरह शिक्षित सभ्य दुर्ग सेना ॥
क्षत्रियों को भूमि दान से मतलब उस भूमि के सारे तत्वों पर मालकी हो याने वहां के सब तत्त्व उनके अधिकार में हो ॥
जिस किसी राजा के अधिकार में बोहत से क्षत्रिय मालकी भाव के साथ होने से उस राज्य की समस्त भूमि में राज्य की स्थिरता को अखण्ड करती है ॥ इस तरह राजविद्या के शिक्षित क्षत्रियों का मालकी भाव उस राज्य की जड़ां और शाखां जब तक स्थिर रहती है तब तक राज्य भी स्थिर रहता है और जब ये शाखां जड़ां जितनी कम होती है उतनी ही स्थिरता की हानियें है॥ राजा सिरफ नोकर सेना ही से कभी समय के फेर में आजाता है और राज्य से भ्रष्ट होजाता है ॥ बोत सामन्त और जागीरदारों से राजा की स्थिरता को दृढ करता है ॥ सिर्फ नोकर फोज रूप जड़ें अपने आप पृथिवी तल से नीर शुद्धारस न खेंच सकती हैं उनकी जड़ें भी

ऊपर को जाती है ऊंडी नहीं जाती वे सब तनथा नाक जल शुद्ध रस चाहती है राजा या दुसरे से अपने आप नहीं खींच सकती है जड़ तथा वृक्ष का एक सम्बन्ध वृक्ष की स्थिति है।

सम्राट रूप वृक्ष जड़ों के आश्रे है उसकी घणी जाडी जाडी जड़ें बल पक्ष में महाराजा है इसी तरह बुद्धि पक्ष में बुद्ध क्षत्रिया जगत के सलाहकार ब्राह्मण तथा वेश्या फेर उनके बाद जाडी जड़ें बल पक्ष में सामन्ता है इसी तरह बुद्धि पक्ष में बुद्धिमान क्षत्रिया राजविद्या के पण्डित ब्राह्मण तथा वेश्या उनके बाद की जाडी जड़ें बलपक्ष में राजा याने राव इसी तरह बुद्धि पक्ष में ब्राह्मण स्वार्थ की अधिकता से निस्पृह (इच्छा न करने वाले) फेर स्थूल जड़ें बल पक्ष में ग्रामाधिपतयः (ठाकर) इसी तरह बुद्धि पक्ष में अपने मालिक का शुभचिंतक क्षत्रिया ब्राह्मण वा वेश्य राजविद्या के जानने वाले फेर सूक्षम जड़े (पतली पतली जड़ें) भूम्याधिपतयः बल पक्ष में इसी तरह बुद्धि
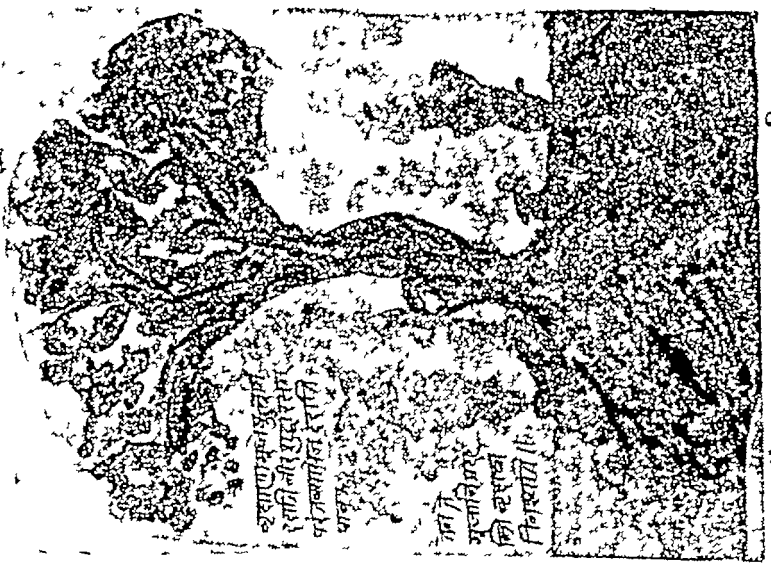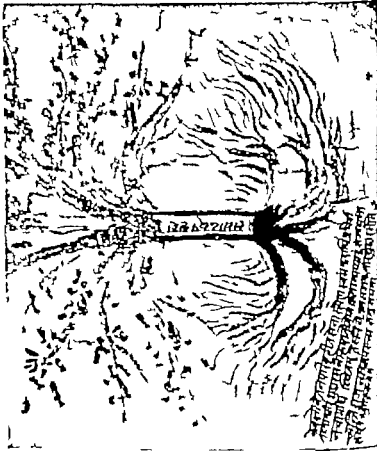
अर्जुनो क्षत्रियाणामधिकारं दृष्ट्वा प्रतिगच्छन्ति

पक्ष में सर्वोपरी विद्या परिज्ञाता क्षत्रिय ब्राह्मण तथा वैश्या है ॥ इन जड़ें और वृक्ष के आपे संबन्ध से आधे वृक्ष की स्थिति है और बिलकुल संबन्ध नहीं रहने से प्रतेक्ष नाश है ॥ वृक्षों की जड़ों में भूमि जल शुद्ध रस देती है परन्त अन्याय से जड़ों में अग्नि देती है जिस्से जड़ें जल जाती है और वृक्ष नाश होजाता है ॥ अक्षय बट वृक्ष की जड़ वृक्ष की स्थिति है इसी तरह उसकी शाखों की जड़ों भी वृक्ष को मजबूत कर देती है इसी तरह अधिक शाखा अधिक मजबूत करती है ऐसे वृक्ष को वायू कोप विचाल नहीं सकता है इस तरह वीर सुभट क्षत्रियों के लिये भूमि का भाग देना (जमीन देना) राज्य को सुस्थिर दृढ करता है उस राज्य को कोई नहीं हर सकता।

किसी राज्य की सब भूमि एक कंचन की कल्प लता की तरह पथरना की तरह अनन्त रत्न सहित विस्तार सहित बिछा हवा है जिसको

दूसरे सेना नायक राजविद्या अभाव से स्वभाव से रहने की इच्छा करते है यदि वह भूमि उत्तम पधरना सोहत सामन्तों (वीर क्षत्रियों) के अविन में गालकी भाव के साथ न हो और जो सोहत सामन्तों भूम्याधिपतयों के नीचे दृढ कीये हुवे को कोई हरनेकी इच्छा न करता है न हर सकते हैं थोडा के अधिकार में ले सकते है पृथिवी सब भोग एश्वर्य की देने वाली को आक्रमण करते है इसी तरह अधिकाधिक के अधिकार को देखकर पीछे जाते हैं ॥ बल से रक्षा बुद्धि से प्रयोजन न्याय है। रक्षा न्याय को हमेशा देखता रहे वह राजा मन्छाफल को पाता है और रक्षा न्याय में ढीलापल करता है तो कल्प वृक्ष के फल को पराये (दुसरे) हर लेते है और वृक्ष को काट भी डालते है ॥

श्रीमत्परम पवित्र मोम पाठ ९

समीप वर्ग वा सत्सगति येभ्य: मंत्री सेनापति राज्यदूत ॥ समीप वर्तिना

सम्मति दातॄणां च गुणाः अधीत व्य-
वहारज्ञम् जगदनुभावुकः स्वार्थनिस्पृहः
दूरदर्शी: शुचिः न्याय सत्यरत कुलीनः
धैर्यम् धीमान् शुभाचारः प्रवीणः दक्षः
राज हितरतः निज स्वामिनः शुभ चि-
न्तकः अभ्योग रहितः प्राज्ञ पराचितो-
पलक्षकः शास्त्र शस्त्र राजविद्याभ्यासे
परिपूर्णः यावच्छक्य सर्वे कर्मचारयेक
देशस्थमेव वा स्वदेशानि वा शोभवितु-
मर्हति नतु देशहिताऽनुभव रहिताः॥
इदानि सुसगत्या संपादित सुकृत वर्त-
मान सुखं सहाय्य संपाद्य तत्वृद्धयित्वा
च तेषां भाविनां सुखानामुच्च योनौच
जन्मनोहेतुः सुकृत प्रायः सुसंगत्या
जायते ॥ सर्वेषु पुरुषेषु सर्वगुणाऽसंभवः
वा दुर्लभः महतमेषु श्रेष्ठ तमेष्वपि के-

क्षत्रियाधीनत्वेन क्रयते तथैव गणि-
तश्च लेखक-कार्याणि वैश्य हस्ते॥
प्रचर्यात्मक कार्याणि शूद्राधिकारे॥

भावार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ६
राज्य के अंग कहे जाते हैं। राज्य शासन करने के आठ अंगो को ध्यान में रखने चाहिये॥ प्रत्येक अंग का अधिकृत्य (स्वामी) राज का मन्त्री हो और तमाम प्रधान मन्त्री के अधिकार में कार्य करते रहें॥

१ प्रतिदिन सभ्य (शिक्षित) बलवान सामन्तों की सेना अपने वश में हो॥ और इसी तरह नोकर फोजों की सेना भी॥
२ धर्म के साथ पैदास का उपाव
३ जगा खरच देखता रहे
४ प्रजावों में तरह तरह की विद्यावों का प्रचार और धर्म प्रचार

५ शिल्प औषधालय (सफाखाना) चिकित्सालय चौराफेड़ का घर अनाथ आश्रम वायु जल की शुद्धी और पुरस्वच्छता आदि प्रजा के कार्यः

६ न्याय मर्यादा

७ दुसरे राजावों के साथ कार्यः तथा अपने राज्य के भिन्न भिन्न वृतान्तों का दुसरे राजावों में और दुसरों के वृतान्तों को गुप्त वेष पुरुषों करके जान्ता रहै ॥

८ पुन्य धर्म ईश्वर आराधना ॥ ये कार्य ब्राह्मणों के अधिकार में हो पृथिवी की पेदाश तथा रक्षा न्याय के प्रबन्ध और सब हुकम के कार्य सर्वे क्षत्रिय अफसरों के आधीन में हो इसी तैरह गणित लेखा कार्य वेश्य के हात में हो॥ और सेवा याने नीचि नोकरीयें शुद्रों के अधिकार में हो ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ७

प्राति दिने सभ्यता शिक्षिता बलान्विता

सामन्ताना वशंवदा सेना वेतन परि गृहीत तथैवच ॥ सेना च पुरराष्ट्रयो रक्षार्थे रक्षाधिकृत पुरुषाणा सहाय्यर्थं च साम्राज्य रक्षार्थः सग्रह्या ॥ साम्प्रति दिने सभ्यता वलान्वितावश्य मेव ॥ प्रत्येक स्ववल वा सर्वेषा स्वेषा बान्ध वाना सबन्धीना स्वे स्व सेना वल न कदापि न्यून कुर्यात् येषा सर्वेषमाश्रोहि राज्यम् ॥ समस्त वेतन परिगृहीत सेना वीर कुलीन धामान क्षत्रिय समीक्षाउ परीक्षता हस्त दद्यात् ॥ क्षत्रियाणा मान प्रतिष्टा स्थिरतार्थे तेभ्य' पृथक न्यायलयश्च दण्ड सग्रह. न तु मिश्रित सर्व साधारण प्रजानुसारणैव परिवर्तते ॥ यदि क्षत्रियापि सर्व साधारण प्रजानु सारणेव परिवतयन्ति प्रथम तेपा धर्म

मानस्य महति क्षतिर्जायते द्वितीयं च तेषां वीरता महोत्साहं नाशं जायते विना वीरता न राज्य स्थितिः तृतीयं तेषां जात्यभिमानं हीनं जायते तेन च तेऽपि साधारण वृत्तिमवलम्बते तेन तद्राज्ञः बल विनश्यति ॥ सर्वे क्षत्रियाणां योग्यता प्रति समये समीक्षणीया ॥ तेषां योग्यतानुसारेण भूमि पतित्वमवश्यं प्रदानमेव ॥ अयं परं सारस्तुपरी राज्यस्य स्थिरतां दृढ करोति ॥ वेतन परिगृहीत सेना केवला चिरकालोपयोगीः पर महत प्रयोजनाय चिरकालाय ईश्वर भावेन मानेन सह भूमि प्रदानम् तथैव दायविभाग योग्यतानुसारेण दातव्यम् ॥

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र योग पार १०

प्रति दिन शिक्षिता सभ्यता बलवान सामन्तों की अपने वश में सेना इसी तरह नाकर सेना ॥ सेना पुर और राज्य की रक्षा के लिये हो और रक्षाधिकृत पुरुषों (रखवाल) की सहायता के लिये हो और साम्राज्य की रक्षा के लिये हो ॥ या हमेसा शिक्षिता सभ्यता और बलवान अवश्य हो ॥ प्रत्येक को अपना वा अपने समस्त बान्धवों का सम्बन्धीयों का और अपनी अपनी सेनाबल न कभी भी कम करना चाहिये इन सभों के आश्रे ही राज्य है ॥ समस्त वेतन (नोकर) सेना वीर कुलीन बुद्धिमान क्षत्रिय पास शुद्धा की देख भाल मे उनके हात में हो॥ क्षत्रियों की मान प्रतिष्ठा स्थिरता के लिये उनके लिये जुदा न्यायालय और दण्ड संग्रह हो न के मिले हुवे सर्व साधारण प्रजा के साथ वर्ते जाय और जो क्षात्रिय भी सर्व साधारण प्रजाके माफिक वर्तेजाय तो प्रथम उनके धर्म और मान की बडी हानि होती है दुसरा उन की वीरता और मनोत्साह का

नाश होजाता है और विना वीरता राज्य कीस्थि- ति नहींहै तीसरा इसतरेह वर्तनेसे उनका जाति अभिमान हीन होजाताहै जिससे वेभी साधारण वर्तीको पकड़ लेतेहैं जिससे उस राजाका बलनाश होजाताहै ॥ समस्त क्षत्रियों को योग्यता हर समय देखनी चाहिये ॥ उनकी योगयता के अनु- सार पृथिवी पर मालकी देनी चाहिये ॥ ये परम सार उपरी राज्य की स्थिरता को द्रढ करताहै ॥ नोकर सेना थोड़े कालके लिये उपयोगी है परंत बड़े प्रयोजन के लिये और बाहत कालके लिये मालकी भाव के साथ और मान इजतके साथ पृथिवी देनाहै इसी तरह दाय विभाग (भाइ बंट और दुसरा हक का बंट) उनकी योग्यता नुसार देना चाहिये ॥

श्रीमत्परम पवित्र स्तोम पाठ ८

धर्मेण सहाय साधनोपायः सेव राज्ञः नव निधयः पृथिवी जलादिभिः परि-

श्रमेण मपादशत लाभ प्राप्यते ॥ कृषा धान पत्र प्रकाण्ड शाक तूल वीज फल पुष्पादि विंशाति ॥ वनेन पुष्प मूलौषधी वल्कलादि विंशाति ॥ वृक्ष वनस्पत्यादि प्राप्तौ काष्ठ फल पुष्प निर्यास मधून्यादि विंशाति ॥ आकरजेनाष्ट विंशाति ॥ पशवादीमिः ससास्त्रिशत्धा ॥ करश्चपट त्रिशत्धा ॥ पृथिव्य पतेजादि समेत यत्र कला कौशलम् ॥ विविध भाजना निवस्त्वादि च निम्मांपणम्॥ पृथिवी वाय्वाकाशादिमिः विविधानि विमाना न्याकाश गामीन्यस्त्राणिच ॥ कालोहि महाँ धनानेषि यादि सद्व्यान याप्येत दिग्भ्यो यथेष्ट सचार लाम• ॥ ९१ ॥
स्वार्थेन स्वल्प सुखार्थेन तुच्छी न येत ॥ परमार्थतः सा परम पवित्र

न्सर्वोत्तमश्च मन्यते ॥ मन्सोत्साहः संवर्द्धयेः तैस्परमोलाभः ॥ एते नवानि-धयः॥नवकोषा—अन्न वस्त्र माणिमुक्ता-द भण्डार धनं तैल घृत रसादि तृणा-गार विविध वस्तव शस्त्रास्त्र युद्ध साम-ग्रय ॥ राजविद्योपदेशेन स्वार्थं नैराश्य-मश्रद्धां चान्य पौरुषं परित्यजते ॥ सर्व स्वं जयति ॥ विना प्रजाहितार्थं रक्षा न्याय प्रजाभ्य. धनमुपार्जनं निरसंतानं भूत्वा निर्धयान्ति दुर्घटनमाप्नोति आयुश्चाल्प ॥

भापार्थ

॥ श्री मत्परम पवित्र सोम पाठ ८ ॥

धर्म के साथ पेदाश करने के उपाव वही राजा के नव खजानें है ॥ पृथिवी जलादि से परिश्रम करने से सवासो लाभ प्राप्त होते हैं ॥ खेती से

घान पत्ता (पान) ढांकला शाग रूइ वीज फल पुष्पादि बीस लाभ है॥ वनते पुष्प जमू ओषधी छाल आदि बीस ॥ वृक्ष वनस्पति आदि से प्राप्त होये हुवे लकड़ी फल फूल गूंद सेहत आदि बीस लाभ है खान से १८ अठाइस है पशू आदि मे सेंतीस लाग है ॥ ओर लाग महाग छनीत है ॥ पृथिवी जल तेजादि मे यन्त्र कला कौशलम् तरह २ के विमान और आकाश में चलने वाले अस्त्र। ॥ समय (वक्त) ही बड़ा भारी खजाना है जो वह वृथा न विताया जाय ॥ दिशावों से चाहे जिधर चलने का लाभ ॥ अपणी 'आत्मा का स्वार्थ और अल्प सुख से तुच्छ (छोटा) न करना चाहिये ॥ परमार्थ सेवा परम पवित्र बड़ी सवस उत्तम मानी गइ है ॥ मनको उत्साह को बढ़ाना चाहिय तिससे वह परम लाभ ह ॥ येही नव खजाने है॥ नव कोप-अन्न कोप-वस्त्र-मणि मुक्तादि भण्डार धन-तेल घृत रसादि तृणागार विविध वस्तव शस्त्रास्त्र युद्ध सामग्रीय ॥ राज

विद्या के उपदेश से स्वार्थ को निराश को अश्रद्धा को और अपुरुषार्थ को छोड़ना चाहिये वह सब को जीत लेता है ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ९

आय व्यय समीक्षणम् ॥ आय व्ययौ प्रेक्षणीयः आयद्व्ययो यथा संभवः नाधिकः कर्तव्य : प्राति समयेऽल्पाथवाऽधिकं सुसुखं संग्रह्यम् ॥ अल्पाद्धूरि रक्षणम् ॥ अस्मिञ्जगति तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य ॥ दानमुत्तमं श्रेष्ठगति सैव लभतेऽखण्डं प्रकाशमानं कीरातिः सुखमव्ययम् ॥ मध्यमस्य भोगः तृतियम् घोगति नाश ॥

स्वार्थ सुख भोगैश्वर्याधिक्तायुसं क्षति-जायते यतः प्रकृति नियमैः पुर्व प्रारब्ध सञ्चित कर्मानुसार शरीरं न्यूनाधिक

सुख दुःख भोगेणसह प्रथ्यन्ते ॥ एतान्
शीघ्र शीघ्र चाधिकाधिकं भूक्त्वा तथा
सचय न कृत्वाच शरीर निश्शेषान्ह
त्यु प्राप्नोति ॥ दीर्घायु काक्षिताजना
एतान् शीघ्रमभूक्त्वा न समापयति पर
सचयं करोति अवश्य दीर्घायुर्भवति ॥
यावन्ति संचित कर्माणि चावशिष्टानि
साचितानि च वर्द्धन्ते तावन्ति शरीरा
युःसुधि वर्द्धयति ॥ इद मनुष्य एवहि
कर्तुं शक्नोति मनुष्याधीन मवेतत ॥ न
शीघ्र भूक्त्वा न समापयेत् स योग
प्रोच्यते तस्यायुवर्ष सख्या वहुनि वर्षा
णि वर्द्धते ॥ पथ्याशनेन सयमेन निय
मेन च योगाभ्यासेनानन्त सिद्धिर्युक्त
शरीरमम्रता प्राप्नोति ॥ एतेवेशस्य यो
योगिनश्च हस्ते भवेताम् ॥

भावार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १

जमा खरच देखना चाहिये ॥ जमा और खरच दोनु देखना चाहिये ॥ जमासे खरच जहां तक संभव हो जादा नहो ॥ हर समय थोड़ा वा जादे सुख के साथ संग्रह करना चाहिये ॥ थोड़ेसे घणे की रक्षा करनी चाहिये ॥ इस जगत में धन की तीन गति होती है दान उत्तम श्रेष्ट गति है जिस्से अखण्ड प्रकाश मान यश (कीर्ति) और हमेश का सुख मिलता है ॥ मध्यम गति भोग है॥ और नीच गति नाश है॥ स्वार्थ सुख भोग की अधिकता आयुस को क्षय करती है॥ प्रकृति (कुदरति) नियम से पूर्व प्रारब्ध संचितकर्मानु-सार शरीर कम जादे सुख दुःख भोग के साथ पाता है ॥ इन स्वार्थ सुख भोगों को जलदी जलदी अधिक अधिक भोगता हुवा और संचय न करता हुवा शरीर बाकी न रहता हुवा मौत ही को पालेता है ॥ दीर्घायु बड़ी उमर की इच्छा

करने वाला जल्दी जल्दी न भुगत कर समाप्त नहीं करता है॥ परत् सचय करता है वह अवश्य दीर्घायु (बडी उमर) होता है॥ जब तक सचित कर्म बाकी रहते हैं ओर सचय-बढ ता है जबतक शरीर की आयुस की अवधी बढती है॥ ये मनुष्य ही-कर सक्ता है ओर मनुष्य के ही आधिन है॥ न तो जलदी भुगत ता है ओर न समाप्त करता है वह योगी है॥ उसकी आयुस के वर्षो की सख्यावढ जाती है॥ पथ्य से अपणा आपा हात मे रखने से नियम से ओर योगा भ्यास से अनन्त सिधि-सहित शरीर अमरता को पाता है ये वैश्य ओर-योगी के हात मे है॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १०
शिल्पौपधालय चिकित्सालय शरीर
व्यच्छेदालयानाथालय वायु' जलशुद्धि
पुर स्वच्छतादि प्रजा कार्याणि॥ यद्रा

ज्याय दशांशं प्रजाहितार्थम् । तेन शिल्पविद्या प्रचारान्नाथालयौषधालय चिकित्सालय शरीर व्यच्छेदालय वायु जल शुद्धि पुरस्वच्छतादि तथाऽन्ध पंगवनाथ बालका विधवा स्त्रीणां तथा स्वपोषऽसमर्थानांच पोषणम् पशु चिकित्सादि परमावश्य कार्यां प्रतिष्ठापनम् ॥ न्यायालयाद्यधिकरणानां वादीनां शुल्क शालादि राज्यायालयानांच स्थापनम् ॥ प्रजानामवश्यक कार्यानुसारे चितम् ॥ यद्यस्तुनः स्थिरतावश्यकः तया काङ्क्षित चेतर्हि सा स्थैर्य मूलेत्स्या ॥ यंत्रकला कार्याणि वर्णशंकरशूद्रयोर्हस्ते परं समीक्षा सुपरीक्षित ब्राह्मणाय स्वामी प्रकारण (भावेन) प्रदद्यात् ॥

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १०

शिल्प ओषधालय चिकित्सालय शरीर व्यच्छेदा लय अनाथालय वायु जलशुद्धि पुर स्वच्छतादि प्रजा के काम॥ राज्य की पैदाश जिसका दशवा हिस्सा प्रजाहित के लिये मुकर्रिर हो जिसमे शिल्प विद्या का प्रचार हो अनाथालय ओषधा लय (सफाखाना) चिकित्सालय वायु जल की शुद्धि और पुर स्वच्छता (सेहर सफाई) आंधा पांगला अनाथ बालकों विधवास्त्रियों की तथा अपणा पोषण करने के असमर्थ हो उनके पोषण के लिये और पशु चिकित्सादि परम अवश्य काम स्थापित हो ॥ न्यायालया अधिकरणों की वादी यों की सायरात के मकानादि राज्य के मकान स्थापित करें॥ प्रजा कार्यों के अनुसार आवश्य क्ता मुजिब स्थापित करना उचित है॥ जिस वस्तु (चीज) की स्थिरता (पायदारी) अवश्य है वह पायदार हो यन्त्र कला के काम वर्णशकर शूद्र

के हाथ में हो परंतु उसकी देखभाल अच्छे पास शुद्ध ब्राह्मण के हाथ में दीजाय ॥

श्रीमत्पाम पवित्र सोम पाठ ११

प्रजासु विविध विद्यानां प्रचारः धर्म प्रचारश्च तथैवच ॥ प्रजा सुशिक्षयितुं सर्वत्रानेकेषां विद्यालयानां प्रतिष्ठापनम् तत्सहायकरणं तद्धराच ताभ्यो विविध विद्या विज्ञान शिक्षा प्रदान च राज्ञा परमो धर्मः प्रजानां दुःख शमने यथा संभवं प्रयातितव्यम् ॥ धर्मोपदेशका योग्या पण्डिता सर्वत्र स्थापयेत् वेतन परि गृहीत वान्यथा तेषां रुच्यानुसार भोजन प्रबन्धेन सह नियोक्तव्याः धर्म प्रचारार्थम् ॥ जितेन्द्रियत्वं व्यायाम परिश्रमेऽभ्यास एवमेवास्त्र शस्त्राणाम-भ्यास स्वरक्षार्थं सर्वेषां जातिनामधि-

कारोस्ति ॥ पारिपक्व वीर्ये पुष्टे तरुणे विवाह तथैवच॥ सदाचार शुद्धा धा णा तैश्च जगति सुख शान्ति स्थिरतार्थ जगद्धितार्थ मनुज सतार्ति प्रथम शिक्ष णिया॥सार वा सर्वोपरी निर्द्य.पदेश परारम शिक्षा परमोधर्म ॥

भाषार्थ

आमत्परम पवित्र मोम पाट ११

प्रजावों में तरह तरह भांति भांति की विद्यावों का प्रचार और इसी तरह धर्म प्रचार भी हो प्रजावों में शिक्षा करने के लिये सब जगह अनेक पाठशालायें स्थापित करना और उनके द्वारा सब तरह की विद्यायें विज्ञान शिक्षा दिलाइ जाना राजावों का परम धर्म है ॥ प्रजावों के दुःख दूर करने में जहां तक संभव हो यत्न करना चाहिये। धर्मोपदेशक योग्य पण्डित सब तरह की जगह वेतन (तनखा) पर वा उनकी रुचि अनुसार

भाजन के प्रबन्ध के साथ मुकर्रिर हो धर्म प्रचार के लिये ॥ जितेन्द्रियपन कसरत मेहनत से अभ्यास इसीतरह अस्त्र शस्त्रों का अभ्यास अपनी रक्षा के लिये सब जातियों का है ॥ इसी तरह जब वीर्य पक्कजाय पुष्टतरुण अवस्था में विवाह हो ॥ सदाचार शुद्ध धारणा तिससे जगत मे सुख शान्ति की स्थिती क लिय जगत हित के लिये ये मनुष्य संतति (परिवार) को पहले शिखलानी चाहिये ॥ सार शिक्षा वा सर्वोपरी विद्योपदेश सत्कर्म देना परम धर्म है ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १२

न्याय मर्यादा प्रबन्धः ॥ स्वकीय रक्षाधिकारस्तु सर्वेषामस्ति तेषां दोषो न पश्यते ॥ धर्म विधायकस्य सहायता संपादकोपि धार्म्मिक एवज्ञेयः तथैवा धर्मविधायकस्य पक्षपातय धार्मिक एव॥ मनसा [illegible]

परिज्ञान न्याये ॥ अज्ञानेकृते वा ज्ञेषु
बालकेषु मादकद्रव्यमत्तेषु उन्मादग्रस्तु
नाधिक दोषोमन्यते॥ समृधि विनश्य
त्यनयात् ॥ एको विवाहश्रेयः यदि ध
र्माधिकारास्ति द्वितिय तृतिय चतुर्थमपि
तेनाधिकोनाधिकारः तरुणे चिरकाले
वियोगे वा स्त्रिपुरुषवाक्षतिर्जाते नियोग
वा पुनर्विवाहो स्वजात्या रुच्यानुसारा
धिकार ॥ सम्यगालोच्या प्रचारिताऽ
ज्ञा ध्रुवा मर्यादा निरुच्यते ययाप्रजासु
सुखशान्ति ःस्थितिश्च प्रबन्धानास्थैर्यम्
स्थितेर्मूलम् ॥ यदिसुखशान्तिः किमपि
वैकल्प मापते तर्हिताभाज्ञा कृत्स्नशोमा
गतोवा विपरि वर्तयेत् पश्चान्मन्वतरानु
सार सानुतनाऽऽज्ञा तद्विपरि वर्तनम्
वाप्रजागोचर विधेयम् ॥ राज्यशासन

कार्यमालोचितुं समर्थो नियमयितव्यः॥ यदि कस्यश्चिन्नूतनाज्ञाया स्वप्रजा सुप्रचाल तस्यकस्याश्चित्प्राचीन पद्धत्यानिरसनस्य तत्परिवर्तनस्य वावश्यकता समापते तदात्रविधेयम् एतत्परिणामोमयि १ मत्प्रजासु २ स्वसाम्राज्ये ३ अपरराष्ट्रेषु ४ यत्पजासु ५ सर्वसाधारण प्रजासु । प्राप्तपुनरपि ईदृकेऽवसरे कीदृकू भविष्यति ६ कश्चिदपरोवा यद्यवंकुर्यात्तर्हि मह्यंरोचेत् ॥ प्रजानां साधारण न्यायो वा कार्यः प्रजासु नियति भूतानामेव पंचानां जनानां हस्तगतो भवितु मर्हति ॥

भाषार्थ

श्री मत्परम पवित्र सोम पाठ १२

न्यायमर्यादाप्रबन्ध ॥ अपणी रक्षा का अधिकार सब

को है जिसमे दोप न देखा जाय॥धार्मिकका सहायक भी धार्मिक ही समजा जाय ॥ हेसी तरह अधार्मिक का पक्ष पाति अधार्मिक ही है ॥ मनसा और आत्मा की शुद्धि देखना और जानना चाहीये न्याय के समय मे ॥ अज्ञान्तासे कीया हुवा वा अज्ञान से कीयाहुवा अज्ञान बाल्कमे वा नशेकी हालतमे वा उन्माद हालत मे कीया हुवा अधिक दोप न मानाजाता है ॥ अन्याय से सपदका नाशहोता है ॥ एक ही विवाह श्रेष्ठ है जो धर्म का अधिकार है तो दुसरा तीसरा और चोथा भी ॥ इस्से जादा अधिकार नहीहै ॥ तरुण अवस्था मे बहुकाल से वियोग होजानेमे वा स्त्री पुरुष का क्षय होजानसे नियोग वा पुनर्विवाह अपनी जातिमे रुचिक अनुसार अधिकार है ॥ अच्छी तरहमे वीचार के साथ जाच की हुइ प्रचलित राजाज्ञा हमेश के लिये मर्यादा कहीजाति है जिसम प्रजाओं में सुख शान्ति सपत्ति बनीरहे ॥ सुख सपदा ही स्थिरता कायम है ॥ जो सत्य शान्ति आदि से किसी तरह

का फरक पड़ता हो तो उस आज्ञा को थोड़ी व
सब फेर देनी चाहिये। पीछे मन्वन्तर के अनु
सार वा नइ आज्ञा का प्रचार प्रजा को विदित
कर दना चाहिये ॥ साधारण राज कार्य करने के
लिये समय मुकारर होना चाहिये ॥ जब कभ
कोई नई आज्ञा अपणी प्रजावों में चलाइ जा
और प्राचीन चलती हुइ को फेर दीजाय वा पल
ने की आवश्यक्ता हो तो इतनी बातों पर ध्या
देना चाहिये कि इसका असर मुजपर क्या पड़त
है १ मेरी प्रजावों पर क्या असर होगा २ अप
उपरी राज्य में क्या असर होगा ३ दुसरे राजा
की प्रजा में क्या असर पड़ता है ४ सर्व साधार
प्रजावों में क्या असर होगा फेर एसा काम पड़
से किस तरह होगा ५ जो कोइ दुसरा एसा क
तो मुजको कैसा मालूम होगा॥ प्रजावों
साधारण न्याय वा काम प्रजावों में से मुकर
किये हुवे पंचों के ही हात मे होना चाहिये ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १३
सीमाप्रान्ताऽपरनृपै सह कार्या तथा स्वराज्ये मिश्रिताना वृतान्तानाच पर राष्ट्रेषु च परेषा वृतान्ताना गुप्तपुरुषैः वा चारै परिज्ञानम् ॥ स्प्रेमणा धर्मेण न्यायेनच परिशुद्धभावेन कार्या विधेयम् ॥ उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानम् ॥ प्राचीनानि स्वाभाविकानि उपयोगिनी च वस्तुनि रक्षेत ॥ परस्पर सम्मति जगद्धितार्थम ॥ कृते प्रत्युपकारो विधेयो दीनाना जनाना गवाश्व परि रक्षणमपि॥ अविद्या तत्काययो मर्जनाद्धर्गेण स्व प्रभुणा प्रसाद याचेत तेनामिथो वैर द्वेष द्विधा परि समापयेत् । धर्मकार्येषु परस्पर सहाय्यता स्व प्राण पर्यन्तमपि तथाऽधर्मकार्य किञ्चिदपि न विधेयम् ॥

स्वद्रुधि बलयोर्भेदः परेषु जनेषु न प्रकाशयेत् ॥ देवानां ऋषिणां वा सर्व साधारणां जलाकाश पाताल वा पदादि पथाः वाणिज्यचैक राज्य प्रजानामपर राज्य प्रजाभ्यो निरुद्धो न भवेत् ॥ कल्याप्येकस्य राजस्यापराधिनमपर राजा सहायतां न दद्यात् किन्तु यत्र तयोपराधी तद्देशस्य राज्ञायाचितो तस्मै समर्प्येत ॥

भावार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १३

सीमापरे दुसरे राजावों के साथ कार्य तथा अपणे राज्य के मिश्रित वृतान्तों का हाल दुसरे राज्य के वृतान्तों का हाल गुप्त वेष पुरुषों से जानता रहे ॥ प्रेम धर्म और न्याय के साथ और शुद्ध भावना से कार्यों को करे ॥ आत्मा से आत्मा उच्च रखे ॥ प्राचीन स्वाभाविक और उपयोगी

वस्तुवों की रक्षा रखे ॥ आपस में जगद्धित के लिये सम्मति (सलाह) करे ॥ उपकार वा पीछा उपकार करे ॥ दीन जन और गोवों की रक्षा करे ॥ अविद्या और अविद्या के कार्यो को नाश करने वाले सकर भगवान मालिक से प्रसाद (मेहर) मागे जिस्से आपस का वेर विरोद्ध द्विद्धा समाप्त हो ॥ धर्म कार्यों में आपस की सहायता प्राणों तक करनी चाहिये॥ और अधर्म का काम कुछ भी न करना चाहिये ॥ अपणे बुद्धि बलका भेद दुसरों मे प्रकाश न करे ॥ देव ऋषि वा सर्व साधारणों के जल आकाश पाताल और भूमि पर के मार्गों को विणज (व्योपार) एक राज कि प्रजाका दुसरे राज्य की प्रजा के साथ न रोके ॥ किसी एक राजके अपराधी को दुसरा राजा सहायता न दे परन्त जहां का अपराधी हो उस देश के राजा के मागने पर उसके हवाले कर दे ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १४

प्रणय धर्मेश्वराराधनसपाठानम । सर्वं

भूतस्थं ममैवात्म प्रकाशः सर्वं शक्ति मत्या योग मायया सर्वं शक्त्यार्थः जगत्प्रसूतम् ॥ सर्वत्र विश्वरूपं ममैव माया पश्यन्ते सर्वेषां भूतानां पृथक् पृथक् स्थितिमेक्यं भावेन पश्यति ॥ तद्दैव सर्वं विस्तृतं जगच्चराचरम् ॥ दया विनाहि राजा स्तथा कोमलता विना । धार्मिका शास्त्रहीनाश्च मता लोके नि-रर्थकाः सुपात्रे जगद्धितार्थं दानं पुण्यं विधेयम् ॥ मिथ्याति तृष्णा जगंति दुःखं प्राप्य तेषां सर्वस्वं च विनश्यन्ति ॥ पा-रमार्थिकया बुद्धया सम्यतः संयमत्वम पश्यमेवः ॥ प्रजा वृत्तान्तं श्रणुयात् तेन ज्ञानं संवाप्यते ॥ ज्ञानमेव महाप्रबलं बलम् ॥ राजानाति प्रबलो दण्डोपि दातव्या ॥ मनुष्य जातिषु या जातयः

बुभुक्षिता वा दरिद्रा भवेयुं तज्जातिया जनान् यथोचितेषु कार्येषु राजा निय ञ्जात येन तेषा पालन निर्वाहस्यु: तेन पाप कार्याणि तेनानुतिष्टेयु: धर्म ॥ क्ष त्रिय शरीराय स्व राजविद्याया श्रद्धा पुरुपार्थ ममैवाराधन सुपाशन सवम् ॥ यदिश्रेय परिव्राज पण्डित हस्ते ॥

भावार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोग पाठ १४

पुण्य धर्म ईश्वर की आराधना उपाशना समस्त प्राणियों म मरी ही आत्मा का प्रकाश है ॥ सव शक्तिमयि योग माया से दोनु सर्व शक्तयों से जो जगत विस्तृत है सब जगह विश्वरूप मेरी ही माया सब में देखी जाती है समस्त प्राणियों की जुदि जुदि स्थिति को मनुष्य की बुद्धि ही देखती है उससे ये सब चराचर विस्तृत है ॥ विना दया कोमलता के राजा और धार्मिक (धर्मोप

देशक) शास्त्र से हीन जगत में निरर्थक (निकम्मे) है ॥ इस तत्व को जान्ता हुवा दान पुण्य करना चाहिये । सुपात्र को जगत हित के लिये दान पुण्य करे ॥ अति तृष्णा जगत में मिथ्या है वे लोग अति तृष्णा वाले दुःख पाते हुवे अपना सर्वस्व को नाश करलेते है ॥ परमार्थिक बुद्धि से सभ्यता और संयम (अपने आपे को अपने वश में रखना) अवश्य है ॥ प्रजा के हाल को सुनना चाहिये इससे ज्ञान की प्राप्ती होती है ॥ ज्ञान ही महा प्रबल बल है ॥ राजा को अति प्रबल दण्ड न देना चाहिये ॥ मनुष्य जातियों में भूखी जातियां वा दरिद्री होजाय उन मनुष्यों को राजा यथोचित कामों में लगादे जिससे उनका पालन निर्वाह होता रहे तिससे वे पाप कर्मों में न प्रवर्त्त होवें सोही धर्म है ॥ क्षत्रिय शरीर के लिये अपनी राजविद्या में श्रद्धा पुरुषार्थ मेरी ही आराधना उपासना सब ही है ॥ ये कार्य सन्यासी पण्डित के हात में हो ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १५
राज्ञा धन मान धर्मो ध्वजश्च ॥ राज्ञाः
धन मानश्च वीर सुभटाना पण्डिताना
परोपकारिणा गुणिना च सत्कारार्थ मेव
पुनश्च दीन जनाना तथैव स्व पोषेऽस
मर्थाना परिपालनार्थ प्रजाहितार्थ धर्मार्थ
च ॥ सत्याना पारमार्थिकोपयोगिना च
विषयाणा ग्रहणमेव लोभकार्यो नान्यत्र॥
मानार्हेम्यो भूपोयच्छेत यथार्थ मान
मुत्तमम् ॥ यदि कश्चित्परुष उपालभ
योग्य पुरुषाक्षर भर्तसनीयो वा भवेत ॥
तदोच्च पदाधिकारिणा महा पुरुषेण च
तद्रहसि वक्तव्यम् ॥ यदि मध्यमोपि
मानार्हः स्यान्तर्हि सोपिमान पात्रेषु
ज्ञात्वा तस्मै मानः प्रदेव एव तददाने
चेष्ट धर्मोसराङ्मुखः सपद्येत् तत्प्रतिका-

श्च सर्वं जन समक्षं इह देवतायै यथा पराधं दण्ड विनिमयो बलीविधिश्च॥ ध्वज लक्षणमाह–पुरुषेण सत्य संधेन भाव्यम्॥ स्व प्रतिज्ञा धर्मेण निर्वाह्या॥ दानमस्यमार्जवं दमश्चाहारातिक्तता दया भूतेष्वचापलस्मार्दवम्॥ धर्मे तत्परता सुपात्रे दाने समुत्साहिता होरद्रोहो सत्यं शौर्यं धृतिः त्यागस्तेज तपः शान्तिरपैशुनम्॥ स्वार्थत्यागो- त्साहः क्षमाऽक्रोधः पारमार्थिक् बुद्धि ज्ञांन योग व्यवस्थितिः परोपकारः स्व देश सेवाऽहिंसा निरपराधीयेच दाक्ष्यं स्वयमीश्वर भावश्चनाति मानिता ध्वजं लक्षणम्॥

भावार्थ

श्रीसत्पदम पवित्र सोम पाठ १५

राजा का धन मान धर्म और उत्पन्न ॥ राजा का धन और मान वीर सुभटों के लिये पण्डितों के लिये परोपकारियों के लिये और गुणियों के लिये इन चारों के सत्कार के लिये है फेर दीन जनों (गरीब आदमी) के लिये इसी तरह जो अपना पोषण (पालन) करने से असमर्थ हैं उनके लिय प्रजाहित लिये और धर्म कार्यों के लिये है ॥ सत्य पारमार्थिक और उपयोगी कामों के करने में लाभ न हो और जगह ॥ मान योग्य जनों का राजा यथाय यथोचित उत्तम मान दे ॥ यदि कोइ उत्तपद वाला ओलखा देने योग्य वा जादा बुरा बतलाने योग्य हो तो बह आदमी को एकान्त में कहना चाहिये ॥ जोकोई मध्य दर्जे का पुरुष भी मान योग्य हो उसको भी मान पात्रों म जान मान देना चाहिये ॥ इस तरह मान न देने से इष्ट से बेमुख होता है जिसका उपाय सब के सामने इष्ट देव को जैसा अपराध हो बल दे कुच्छ चढावे ॥ ध्वज लक्षण

यह है — उत्तम जनको अपणी बात का सच्चा होना चाहिये ॥ अपणी प्रतिज्ञा (कोल) धर्म के साथ निबाहना ॥ दान ॥ अभय (डरना) नहीं शर्ल स्वभाव ॥ इन्द्रियों अपने बश में दबाइ - खना अहार के सिवाय प्राणियों पर दया रखना। (भूखा होतो आहार के सिवाय वृथा न मारना) चापलता न रखना ॥ नरमी रहना ॥ धर्मने तत्पर (तैयार) रहना ॥ सुपात्र को दान देनेमें उत्साह रखना ॥ लज्जा ॥ द्रोह न रखना ॥ सच्चा शूर- वीर होना धीरज रखना ॥ बुरे नीच कामों का त्याग करना ॥ अच्छे पारमार्थिक कामों मे तेजी रखना ॥ मेहनत के साथ काम करना शान्ति रखना ॥ कुटिलता न रखना ॥ स्वार्थ के त्याग करन में (छोड़ने में) उत्साह रखना ॥ क्षमा रखना ॥ क्रोध न करना ॥ पारमार्थिक बुद्धि रखना ॥ ज्ञान योग्य में स्थिति रखना ॥ परोप कार करना ॥ अपने देश की सेवा करना (सच्चा देश भक्त होना ॥ निरपराधि का (हिंसा (मारना

वा दुःख देना) न करना ॥ सज्जनों से चतुरता सीखना ॥ अपने आपे में मालकी भाव रखना ॥ अति मानवाला वा अति अभीमानी न होना येहा भज (ऊघपत) के लक्षण हे ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १९

राज्य धुरम् ॥ भूपति सर्वे राज्य धुर स्वय न ध्रियात् पर पारमार्थिकेषु विश्वस्तेषु शुभाचारेषु प्रशस्त गुणेषु प्राज्ञेषु पण्डितेषु सुकुलेषु धर्मात्मषु कार्यज्ञे समीक्ष कारिष्वनु भाविषु न्याय सत्परेतेषु निजस्वामिन शुभचिन्तकेष्व भियोग रहितसुच मन्त्रिषु यथावत्प्रविभजेत् ॥ प्रजोचितेषु कार्येषु गृणहीयात्सम्मति विंशाम् ॥ यथा समवः यथा योग्य कार्य विधेयम् ॥ याथा तथ्येन यथा योग्य युक्तेन विधेयम् । प्रजाभ्यः साधारण

न्याय्यो वा कार्यः प्रजास्तु नियति भूतानामेव पंचानां जनानां हस्तगतो भवितुमर्हति ॥ प्रजानां शुद्ध भावना शुद्धाधारणा विकृति विरोधि कार्येषु वा विपरीत् कृत्येषु जगद्धानि करेषु विषयेषु हस्ताक्षेपो राज्याधिकारोस्ति । यतोऽनयोः सम्यक्शुद्धि सर्वाभ्यः प्रजाभ्यः सुख शान्ति प्रदास्तः वैपरीत्यचास्याः प्रजाभ्यो दुःख प्रदानिरोद्धव्या । वृद्धानुभवी मंत्री सर्वं राज गुह्यं ज्ञाता न कदापि पृथक् कुर्यात् परं स्वकीयमेव विधद्या ॥ कर्मचारिमधिका नियोग युक्तं युक्तेन पृथक् कुर्यात् न स्वीदृशं राज कार्ये नियुञ्जीत ॥

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ ३९

राज्य भार (राज्य कार्याणी) राजा सब राज्य का भार अपने ही ऊपर न ले परंतु पारमार्थिक विश्वास पात्र शुभ आचरण वाले दिव्य गुणवाले शुद्ध विचारवान पण्डित कुलवान धर्मात्मा काम को जानने वाले काम को समालने वाले तजरुबेकार न्याय और सत्य में जिनकी रति हो और अपने मालिक के शुभ चिन्तक हो और जिनकी सिकायत न हो सलाहकार हो ऐसों में मुआसिब तौर से राज्य कार्यों के भार को बांट दे ॥ प्रजाके उचित कार्यों में प्रजाकी भी सम्मति ले ॥ मुमकिन हो जैसा योग्य हो कार्य को देना चाहिये ॥ जैसा चाहिये उसी तरह किया जाय ॥ प्रजावों के साधारण न्याय और साधारण काम प्रजा में से ही अच्छे अच्छे २ पात्रों के हात में होने योग्य है ॥ प्रजावों की शुद्ध धारणा शुद्ध भावना को बिगाडने के कामों में वा उल्टे कामों में इसी तरह जगत् हानिकारक कामों में हस्ताक्षेप (दस्तदाजी) करना राज्य को अधिकार

है इन दोनों की शुद्धि (शुद्धभावना और शुद्ध धारणा) सब प्रजावों को सुख शान्ति देने वालीहै और इसे उलटी चाल प्रजावों दुःख देने के कार्य्यहै॥ बुढा तजरुबेकार मंत्री राज्य की तमाम गुप्त बातों (भेदों) को जानता हो ऐसेको अलग न करना चाहिये परन्तु उनको अपना कीये हुवे रखना चाहिये और सिकायत वाले कर्मचारियों को युक्तिसे जुदा करना चाहिये ऐसो को राज्यकार्य्य में न रखें॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १७

दान पारितोषिक वितरणम्॥ राजा वा महान् पुरुषोवा नीति मुक्तहस्तोनाति कृपणश्चभवेयुः सह प्रसन्नत्वमौदार्य्य च प्रजारञ्जनं स्वलुलुप त्रभ्यः पारितोषिक वितरणेन राज्ञो गौरवम् वर्द्धते व र्द्धापनिकेन पारितोषिकमुद्रादेः मान स्य मूल्याश्चभवति ॥ साधारण निर्द्धने भ्यस्तद्वितरणं सहायकरणं यथावस्त्रं द

स्तुपशव अन्यच्च यच्छरीरोपयोगीः वि
शेषकार्येप मानस्य भून्यादेश्च वितरण
विशेषतः श्रेय वीरक्षात्रयाणा भून्या। दि
भिः समानन येन राज्यस्य बलप्रतिष्ठा
च सुदृढस्थैर्थम् ॥ वीरक्षत्रियाणा यशो
घन. ॥ कुपात्रदाना द्भवेद्दरिद्र.॥ पर सु
पात्रेफुपुण्यमार्गेपु च भेवत्प्रभुर्घना चन्द्र
तारकम् सः भवति देव स्वर्गजयाति लो
लयाश्च ॥ द्रव्यानामर्थाना त्यागेव हि
सुफच महांल्लाभः ॥ घनविनश्याति लो
भालिप्सया ॥ सहास्मिके लक्ष्मी जंयति
तथैव राजविद्याया भूमिः शीघ्रम् ॥

॥ भावार्थ ॥

श्रीमत्परमपवित्र सोमपाठ १७ दान इनाम बाटना॥
राजा और बड़े बड़े आदमी (धनाढ्य) न मिल
वर्ळी खुले हात (घनको बेतरह से उगना)
। अति लालचा हो ॥ प्रबन्ध के साथ उदार चित्त

हो ॥ निश्चय करके सुपात्र को दान (इनाम) देना प्रजाका काम और राजाका गौरव बढाताहै इनाम रूपेका और मान भूमि का है ॥ साधारण निर्धनों की सहायता करना कपड़ा कोई जरूरी चीज और पशू देकर के और कोइ भी चीज शरीर के काम की हो देना चाहिये ॥ और विशेष कार्यों के लिये पृथ्वी का दान श्रेष्ठ है वीर क्षात्रियोंको भूमि देकर सन्मान कीया जाता है जिस्से राज्य का बल और प्रतिष्ठा अच्छि दृढ और स्थिर ता को पाता है ॥ वीर क्षत्रियों के लिये यश ही धन है ॥ कुपात्र को दान देने से दरीद्री हो जाताहै ॥ परंतू सुपात्रों को और पुण्य-मार्गों में देने से चंद्र और तारोंकी स्थिति तक धन का धणी होता रहता है और वह देवता हो जाता है और स्वर्ग को भी खेल की तरह जीत लेता है द्रव्य और धनका दान देना ही अच्छा फल और बड़ा लाभ है ॥ धन अति लोभ में पड़ने से नाश होजाता है ॥ सहासी (पुरुषार्थी) रक्षकों को

जीत लेता है इसी तरह राजविद्या से तुरत ही पृथिवी को जीत लेता है ॥

श्रीमत्परमपवित्र सोम पाठ १८

चार गुप्तगूढवेषपुरुषा रक्षाधिकृत पुरुषा पायदलाश्च ॥ गूढ गुप्तवेष पुरुषाः विश्वस्तचार चक्षुषा राजा ताभ्या सर्वे वृतान्तामवलोकयेत् ॥ किंचित्काला राजाप्रजा वृत्तान्तश्रणुयात् ॥ राष्ट्र पुरेषु ग्रामेषु वा रक्षाधिकृत पुरुषा आधिकारिणः यदा तयो वा कार्य प्रवीणा कार्यज्ञा सत्यवानोविधया यदि तेषा मल्पमपि दुष्कर्म दुराचार वा प्रजा दु खामवद्वा किंचिदपि दुराचरण दक्पथ निपतत्तर्हितेऽवश्य दण्डानिया अन्यथा त स्वयमन्यायपथे प्रवर्तेरन् ॥ प्रत्येकस्मिन्कार्ये राज्ञा समीक्षणा कर

णीया कार्यकुशलाः पुरुषाः सर्वे वृत्ता
न्तं राज्ञे निवेदयेयुः सुपरीक्षिता राजा
ज्ञा एव देश प्रबन्धः नियमः प्रोच्यते
तेन च समीचीनेन भाव्यम् यतः प्रजा
जनाः सुखिनोभवेयुः प्रजासु सौख्य
स्थितिरेव राज्यनियमप्रयोजनमस्ति ॥

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १८

छाने गुप्तवेश रहकर जगत के वृत्तान्त (हाल)
की खबर देनेवाले पुरुष रक्षाकरने वाले पुरुष
और पायदला ॥ प्रजावो में फिरकर गुप्तवेष पुरुष
प्रजावोंका हाल जानकर राजा का खबर देने
वाले पुरुष राजा की आंखें है जिनसे राजा सब
हाल को देखता है कुच्छ काल तक राजा प्रजा
का हाल सुनता रहे ॥ राज्यमें शहरोंमें गांवोंमें
रक्षा करनेवाले पुरुष काम में प्रवीण काम को
जानने वाले और सत्यवादी मुकरिर हो और जो

उनका कोइ भी उलटा काम मालूम होजांय जिनसे प्रजा दु खी हो व उनका कोइभी दुराचार नजर आजाय तो उनको अवश्य दण्ड देना चाहिये ॥ एसा न करने से वे खुद भी अन्याय करने लगजाय हरेक ऐसे कामों में राजा की देख भाल होनी चाहिये ॥ कार्यकुशल पुरुष सब वृत्तान्त राजा को वाकिफ करते रहें ॥ अच्छी तरह से जांच की हुइ राज्य की आज्ञायें ही प्रबन्ध और नियम है और ये नियम अच्छी तरह स जाने हुव हो जिन से प्रजा के लोकों को सुख हो ॥प्रजावों में सुख की स्थिति ही राजाके नियमों (कायदे कानून)का मतलब है ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १९

राज्ञामयोग्यता ॥धर्मविद्याग वीरता हीन कुष्ठी क्रूरकर्माधर्मपालकः प्रजारक्षणेऽसमर्थोऽन्यायकारी वीरक्षत्रियेभ्यो राजविद्या ज्ञातृभ्य भूमिहर्ता तेभ्यश्च

दाता न सिंहासनयोग्यः॥ राजविद्यया बलबुद्धिः जयोऽस्तत्वं त्यागेन राज्यं तथा साजात्यापि जात्यन्तरशत्रु प्रवेशेन समूल मुन्मूल्यते च पतन्ति नरकेऽशुचौ॥ निरा शत्वं शास्त्रश्रद्धाविहीनत्वं क्षत्रियाणां म हानर्थद चिन्हम् राज्यां च्चुतिलक्षणं निश्चयपात चिन्हं च विज्ञेयम्॥ बलबुद्धि र्मर्यादेन प्राप्तौ राज्यतान्न पश्यति प्रणश्य न्ति॥ विषादनमालस्य परिवादो व्यस नांस्त्रियोमदः मृगयाति सहः द्यूतं तथा दिवास्वप्न वागदण्डमर्थदूषणम्॥ दान मयोग्यम् योग्यमदानम्॥ असयत्वं कृतघ्नता विश्वास घातताञ्च दूरत्परिवर्ज येत्॥ राज्ञामप्रबन्धेन प्रजापरिश्रमेणोपा र्जिताद्रव्यं दुष्ट दुरुपयोगी राजकर्मचा रयः तथा तेषांसम्बन्धयः वा अपर दुष्ट

जना दीन प्रजाजनान्हसन्ति कोषागा
रादपिद्रव्य दुरुपयोगकुर्वन्ते दीनप्रजा
विलापयन्ति शापयन्ति तत्प्रभावेन
राजाऽचिरेणाल्पायुः भूत्वा राज्याभ्रस-
ति तेदुष्ट कर्मचारयादि ईदृशोपार्जिता
द्रव्यमनीति सभोगेषु मादकद्रव्य सेवने
षु दुर्व्यसनेषु सदानिन्दनियकार्येषु दुष्ट
कार्येषु सदा व्यय च कुर्वन्ते ईदृशा
जनाना बुद्धिरपि जगद्धानिकराणि दुष्ट
कार्येषु भ्रमयन्ति एते सर्वेराज्ञामयोग्य-
ता विद्यते ॥ राजा स्वधर्मकार्यं त्यक्त्वा
स्वार्थसुख लिप्सया मादक द्रव्य सेवति
वा निरर्थक कार्यं च करोति तौर्यत्रिक
स्त्रियो मद द्रव्यशनपु रतिकृत्वाऽ याग्य
जातिषु सगमः करोति राज्याद्भ्रसति
ईदृश सुत्र सिंहासनमपराण्य।न्यहर्तु

तत्पर कोटिबध ॥ कामाँल्लोभ तेन मोह क्रोधादहंकार ः एतेषां संभावोऽधिकारः संभावादधिकमयोग्यता पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ १९

राजा वों में अयोग्यता जो राजा धर्म से हीन विद्यासे हीन, अंगसे हीन, वीरतासे हीन, कोढीया, क्रूरकर्मा अधर्म की पालना करने वाला प्रजा की रक्षा करने में असमर्थ, अन्यायकारी, वीरक्षत्रियोंकी, राजविद्या जानने वालोंकी, भूमि हरने वाला और ऐसों को न देने वाला राज सिंहासन के योग्य नहीं है ॥ राजविद्या और राजविद्या के तत्व को छोड़ने से राज्य तथा वा जाति भी और जातोंमें मिलकर जड़से चली जाती है और घोर नरक में पड़ते है ॥ निराशपन्न और शास्त्रों में श्रद्धाहीनता क्षत्रियों के लिये महाँन् अनर्थका चिन्ह है और राज्य से भ्रष्ट होजाने के लक्षण है ये नरक में पड़ने को चिन्ह जानना ॥ वल बुद्धि की मर्यादों से पाया

हुवा राज्य तिनको नसभालने से नाशहोजातहै विषाद (दुःख) निराश आलस्य परिवाद (विवाद-जिद) विशन (विषन) स्त्रीया और मदर्म (सराब-दारू) अतिजादा शिकार का शौक जूवा खेलना दिन को सोना-गाली आदि से बोलना -धनका दूषण याने देने योग्य को न देना और नदने योग्य को देना अपने आपे को वशमें न रखना, कृतघ्न (उपकार को न मानना) विश्वास घात करना इन सबको दूरसे ही छाड देना ॥ राजका प्रबन्ध न होनेसे प्रजाकी मेहनत का धन दुष्ट बुरीतरह से काम में लाने वाले राज कर्मचारी वा उनके सबन्धी वा सदुरे दुष्टजन दीन गरीब प्रजाको हरतहै और खजान तकभी द्रव्य का दुरुपयोग करत है गरीव प्रजा विलाप करता है शराप दतेहि बद दुवा दतेहै जिसक प्रभाव (असर)से राजा जलदी थाकी उमर होकरराज से भ्रष्ट होजाता है और व दुष्ट कर्मचारी आदि इस तरह पेदा कीये हुवे द्रव्य का अनीति से मार्गोमें

धन

नके सेवन में दुरव्यसनों में सदा निन्दनीय कार्यों में दुष्ट कर्मों में सदा खरच करते रहते है एसों की बुद्धि भी जगत के हानिकारक कामों में सदा भ्रमती है। ए सारी बातों राजा की अयोग्यता प्रगट करती हैं। राजा स्व धर्म कार्यों को छोड़कर स्वार्थ सुख में पड़कर वा नशे को सेवन करता है वा निर अर्थक कार्य करता है नाचने गाने बजाने में स्त्रीयों में मद में दुर व्यशनों में प्रीति करता हुवा अन्या अन्य जातियों में संगम करता है राजसे भ्रष्टहोजाता है ऐसे सून्य सिंहासन को अन्या अन्य हरने के लिये तयार कमर कसे हुवे होतेहै कामसे लोभ लोभसे मोह और क्रोधसे अहंकार इनका संभाव अधिकार है और संभाव से अधिकता अयोग्यता ह और जिनसे घोर नरक में पड़ते है याने भारी दुःखों में पड़ते है॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ २०
राज्य शासन शक्ति प्रबन्धः सदाचार

पृथिव्यपाग्नि वायोश्च सोमसूर्यौ यमे न्द्रः एतेषां सर्वेषां तेजोवर्ति भूपतिश्च रेत् ॥ धर्मात्मन पापात्मनश्च सर्वान् धार्याति तथैव राजा पृथिवी समाशील क्षमामापयेत पालयतेच।पि॥यथापृथिवी स्वकीय गुणैः यत्किमपि स्वकारण बधन च विधाय एक्यतापादयन्ति तथैव एक्यताविहेना दुष्कृत्या शीघ्र बन्धयित्वा स्वाधिकाकुर्यात् ॥ अग्निसमाः उपयोगी भवेज्जगता सत्यतास्थिति वाग्नि स्वकिय स्पृश कर्तारं मदहति तथैव राजा स्वप्रीयगुणमपि मर्यादात्यवत्वा जनाना समुपालवेन क्षगवातृप कुर्यात् ॥ यथा वायु स्थावर जगमेषु सवत्र तथैव नृपति निजगुप्तदूतैः सव व्यापी सर्वज्ञ भूत्वा प्रजाना तथान्य राज्ञा वृत्तान्त

जानीयात् ॥ यथा चन्द्रमा स्वशीलता प्रकाशादिगुणैः लोकानल्हादयति तथैव राजा ॥ यथा सूर्यः किञ्चित्किञ्चिज्जलमाकर्षयति निरंतरः तथैव नृपतिः प्रजाभ्यः करं गृह्णीयात् तेन ते दुःखिता दरिद्रावान न भवेत् ॥ धर्मराज समं पापिजनान् दण्डयति तेन ते पापकार्याणि नानुतिष्ठेयुः ॥ देवेन्द्रसमं नरेन्द्रोन्यायमाचरेत् यथा मेघवर्षा शुद्धेऽशुद्धे पवित्रेऽपवित्रे स्थाने च समान तया वर्षति तेन प्रजा पुष्टतां प्राप्यते तेभ्यश्च धनेन परिपूर्णयन्ति ॥ तत्वज्ञानार्थदर्शकः राजा ॥ ज्ञान विज्ञान सहितं मन्त्री ॥ परस्परं ग्रामयोः रूपाद्विपद्रोः प्रबन्धः बान्धवानां संबन्धिनां सामन्तानांच सम्मत्या भवेयुः

भावार्थ

अभित्परम पवित्र सोम पाठ २०

राज्य करने की शक्ति (ताकत)प्रबन्ध और सदाचार (अच्छे नेक चाल चलन) पृथिवी जल अग्नि वायुः चन्द्र सूर्य्य यम और इन्द्र इन सबके तेजसे राजा अपने तेजकी वृति धारण करें ॥ धर्मात्मा और पापात्मा सबको पृथिवी अपने ऊपर धारण करती है इसीतरह राजा पृथिवी समान क्षमा और पालनाभी सीखें ॥ जैसे जल अपने गुणों करके जिस किसी को अपना करके आन्वेरखता है इसी तरह ऐश्वर्यता जल से सीखें एवयता से हीन खोटेकर्म करनेवालों को तुरत बन्धवाकर अपने आधीन में करले ॥ जगत की सभ्यता की स्थिति में राजा अग्नि समान उपयोगीहो ॥ अपनी आगिभी स्पर्श (छुनेवाला) करने वालोंको जलादेतीहै इसी तरह राजा अपने प्रीयगणों को भी उलटे चलने से ओलखा और गिरफ्तार कर तिरष्कार करदेवें ॥ जैसे वायु स्थावर

जंगमों में (चराचरमें) सब जगह है इसी तरह राजा भी अपने गुप्त दूतों करके सर्व व्यापी और सर्व जाण होकर सब प्रजावों और दूसरे राजावों का हाल जान्ता रहे ॥ जैसे चंद्रमा अपणी शीतलता और प्रकाश आदि गुणों करके लोकों को सुख देताहै इसी तरह राजा भी ॥ जैसे सूर्य थोड़ा थोड़ा जल हमेश अपणी किर्णों से खींचता रहता है इसी तरह राजा भी प्रजावों से थोड़ा थोड़ा कर (लाग बाग) लेता रहै जिस्से प्रजा दुःखी दरिद्री न होवे ॥ यमराज (धर्मराज) के समान राजा पापीयों को दण्डता है जिस्से वे पाप कर्म न करें ॥ इंद्रके समान राजा न्याय करे जैसे मेघ (बादल) शुद्ध अशुद्ध पवित्र अपवित्र स्थान में समानही बर्षता है जिस्से (न्यायसे) प्रजा पुष्ट ता पाती है और धन से परिपूर्ण रहती है ॥ ज्ञान के सार को देखने वाला राजा है ॥ ज्ञान विज्ञान सहित हैमंत्री होता ॥ आपस के संपद विपद के प्रबन्धों में अपनेही

बान्धव सम्बन्धियों सामन्तों की सम्मति राजा लेवे ॥

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ २१ क्षत्रियाणा सभा शान्त्योपदेश तथा समाप्त्याशीष ॥

क्षत्रियाणा प्राति सम्वत्सरे द्वे वारे शुभस्थाने शुद्धर्तो सभास्यातामू तस्या परमपवित्र राजविद्योपदेश चिन्तनीय प्रबन्ध सम्बन्धी समाधानचापि सुविचारणम् ॥ प्रातिवर्षचैकवारं पुण्यस्थाने राज्ञा क्षत्रियाणा महासभाऽपि तेषा स्यात ॥ राजा विशेषकार्येषु सामन्ताना च सम्यव्यक्तिनां प्रजाजनानां सभाम्या सम्मतिर्विषाम् ॥ प्रत्येक जात्या सभा स्थापने वा प्रचलित्कुरीति निरसनन सुरीति प्रचालने पूर्वक जाति संस्करणे

शोधने वाधिकारोऽस्ति ॥ महाशक्तिः प्रश्नः सुमतेस्तेक्ष्णयं शक्तेश्च संवर्द्धनं क्षत्रिया कथं लभंते ॥ शिवोवाचः राज॰ विद्याशाणेनैव ॥ इयंविद्या क्षत्रियाणां पृथ्वी प्रशाम्न शक्तिमश्री तीक्षणता स्ति ॥यथा शस्त्राणि चिरंकालेन निशि तधारा विहीनानिभवन्ति तथैव क्षात्रि यापि महत्कालेन शक्ति पुरुषार्थ तेजो भिर्विहीना जायन्ते ॥ शाणोल्लेखिता नि शस्त्राणि पुनस्तीक्षणानि ॥ राज- विद्या क्षत्रियाणां शाणेव ॥ एतच्छास्त्रा नुसार राजाशासनीयम् भवेत्महान् भागी सुखी सदीर्घायुराशीपात्रंचमान धृतसहः सन्ततिःतिष्ठतोचिरम् ॥ तस्य राज्यं सुस्थिरंदृढधुवजायते ॥ यशश्चा खण्डितं गहुला संतति सततं स्वर्ग भोगश्च

इहलोके परलोके चारविचन्द्रतारकम्
श्रद्धा पुरया तथा मानसिक तीव्रशक्त्या
निस्सदेह सिद्धिर्भवाति न किंचिदपि
दुर्लभम् ॥ अयमावयोः सम्वादः सृष्टे
स्वास्थि सुखशान्तिः स्थितिश्च प्रबन्धा
ना स्थित्यर्थम्। राज विद्योपदेशः तेन
सज्जानम् । सृष्टे स्वास्थिसुखशान्ति
स्थितिश्च प्रबन्धानां स्थैर्यम्। तेन व म
वलेन रक्षा। पूर्व सुकृतेन राजविद्यो
पदेशप्राप्ति. तेन शुद्धविचारशक्तिः सेव
बुद्धि तथा चेष्टः तेनयथेष्टप्राप्तिः। राज
विद्योपदेशेन शुद्धोश्चेश्वर भावेन विचार
शक्ति तया चेष्टधर्मः धर्मेण न्यायः।
यत्र रक्षा न्याय तत्र राज्य सुस्थिरमच
लध्रुवम् ॥

॥ समाप्तम्

भाषार्थ

श्रीमत्परम पवित्र सोम पाठ २१

क्षत्रियों की सभा शान्ति का उपदेश और समाप्ति आशीष ॥

क्षत्रियों की प्रति संवत्सर में दोबार शुभ स्थान में शुद्धरितु में सभाहो जिन में परम पवित्र राज विद्योपदेश पर चिन्तवन हो और प्रबन्ध संबन्धी समाधान भी विचार किये जावे ॥ वर्ष में एक वार पुण्य स्थान में राजावों क्षत्रियों की महासभा भी हो ॥ राजा विशेष कामों में सामन्तों की और प्रजावों मेंसे सभ्य जनों की सभा सम्मति लेवें। हरेक जाति को सभा स्थापित करने और प्रचालित कुरीति को मिटाने और अच्छी रीत को चलाने और जाति शुद्धार करनेका अधिकार है ॥ महा सक्ति प्रश्न करती है ॥ अच्छी बुद्धि को तीव्र वा तेज करना और शक्ति (बल) को बढ़ाना ये बातें क्षत्रिय कहां से पाते हैं ॥ शिवने कहा—राजविद्या रूपी खुर-

शाण से ॥ ये विद्या क्षत्रियों की पृथिवी पर राज्य करने की शक्तिमयी (बल सहित), तीक्षणता (तेजी) है जैसे शस्त्र बहुत काल करके तेज धारा से हीन (भ.टे) होजाते हैं इसी तरह क्षत्रिय भी बहुत काल करके शक्ति पुरुषार्थ ,और तेज से हीन होजाते हैं ।। शाण पर चढ़ हुवे शस्त्र फिर तेज होजाते हैं ॥ राजविद्या क्षत्रियों की खुरशाण है ॥ इस शास्त्र के अनुसार राजा राज्य करता हुवा महान भोगी, सुखी बड़ी ऊपर वाला और आश.थ और मान के साथ और सनती (परवार) के साथ बहुत समय तक राज्य करता है और उस का राज्य अच्छा स्थिर दृढ और अचल होजाता है और अखण्ड यश (कीरती) और हमेश बहुत सत.ति (परिवार) वाला और इस लोक और परलोक में सूर्य च द्र अर तारों की स्थिति तक स्वर्ग (सुख) भोग करता है ॥ पूर्णश्रद्धा और मनकी तीव्र शक्ति (बल) के साथ करने से निस्सन्देह सिद्धि होती है कुछ भी

दुर्लभ नहीं है ॥ यह हम दोनों का संवाद सृष्टी के सुख शान्ति स्थिति और प्रबन्धों की स्थिरता के लिये है । राजा विद्योपदेश स सत्य ज्ञान है सो: सृष्टी के सुखशान्ति स्थिति और प्रबन्धों की स्थिरता है जिसे बल, बल से रक्षा पूर्व सुकृत से राजविद्या के उपदेश की प्राप्ति होतीहैं जिस से शुद्ध विचार शक्ति वाही बुद्धि है तिसे इष्ट जिस से जो चाहे सोही मिले । राज विद्योपदेश से शुद्धोच्चेश्वर भाव से विचार शक्तिः जिससे इष्ट धर्म धर्म से न्याय जहाँ रक्षा न्याय है वहां राज स्थिर अचल और ध्रुव है

॥ समाप्तम् ॥

कुंवर सरदारमल थानवी के प्रबन्ध से
श्री सुमेर प्रिन्टिंग्प्रेस जोधपुर में छपी

गुरु स्वरूपेण संस्थिता देवी तस्या ध्यानेन कुर्यात् वर्धनम्

२ तेज

शीजता ३

४

निरपराधि

उपगती

परिभ्रमण १०

११

ॐ सिद्धं

सेनापति

राजा

मंत्री

पायदला

पायदला

पायदला
पायदला
पायदला
पायदला

पायदळा
पायदळा
पायदळा
पायदळा
कृषि
कृषि
कृषि
कृषि
सर्वसाधारण प्रजा